इकाई -१

बीती विभावरी जाग री : भिक्षुक , मैं नीर भरी दुख की बदली :

संपादन : हिन्दी अध्ययन मंडल
(काव्य कुंज)

इकाई की रूपरेखा :

१.१ इकाई का उद्देश्य
१.२ प्रस्तावना
१.३ कवि परिचय
१.४ कविता का भावार्थ
१.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.६ बोध प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.१ इकाई उद्देश्य :

इस काव्य खंड की प्रथम इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'बीती विभावरी जाग री!', 'भिक्षुक', 'मैं नीर भरी दुख की बदली' को लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ, स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इससे विद्यार्थीयों में प्रात:कालीन सौंदर्य के अवलोकन की क्षमता का निर्माण होगा, देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध होगा। बच्चे अनुभूति की सच्चाई से अवगत होंगे। कविता के भाव व शिल्प के प्रति समझ विकसित होगी। साहित्य के प्रति रुचि का निर्माण होगा । समाज के प्रति संवेदशीलता का भाव जागृत होगा। कविता में आए कठिन शब्दों, मुहावरों व अलंकारों के अर्थ की समझ विकसित होगी ।

१.२ प्रस्तावना :

कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गई कविता 'बीती विभावरी जाग री !' एक उत्कृष्ट जागरण गीत है । जिसमें उषा नागरी असंख्य ताराघटों को जल में समाधिस्त होने के लिए विवश कर रही है । साथ ही पक्षियों के चहकने से उषा के आगमन का आभास होने लगता है। पेड़, हवा के झौकों के साथ डोलने लगे हैं। लेकिन संपूर्ण सृष्टि के जग जाने पर भी नायिका सोई हुई है, जो सम्पूर्ण रात्री भर अपने प्रिया के आगमन का इंतजार कर रही थी ।

भिक्षुक कविता में कवि ने भिखारी की हीनावस्था का मार्मिक चित्रण किया है। उसे इस स्थिति तक पहुँचाने वाले समाज के प्रति कवि ने विद्रोह का भाव जगाकर संघर्ष की प्रेरणा दी है ।

'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में कवयित्री जीवन की तुलना बादलों से करती है, वह स्वंय दुखों को झेलते हुए सामाजिक जीवन के मंगलमयता की कामना करती है। कवयित्री अपने इस प्रतिदान के बदले किसी बात की अपेक्षा नहीं करती है ।

जयशंकर प्रसाद

१.३ जीवन परिचय

श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के सम्पन्न वैश्य परिवार में सन् १८८९ ई. में हुआ। उनके पिता तथा बड़े भाई बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए। छोटी उम्र में ही लाड़ -प्यार से पले प्रसाद जी को घर का सारा भार उठाना पड़ा। उन्होंने स्कूली शिक्षा छोड़कर घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली तथा संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी उन्होंने अपने भीतर काव्य – प्रेरणा को जीवित रखा।

उनका जीवन बहुत सरल था। सभा सम्मेलनों की भीड़ से वे दूर ही रहा करते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार और शिव के उपासक थे। कामायनी पर उनको हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्रदान किया गया। जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण १४ नवम्बर १९३७ ई. में अर्थात ४८ वर्ष की अल्पायु में ही उनका स्वर्गवास हो गया ।

प्रसाद की रचनाएँ - प्रसाद जी सर्वतोंमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे । उन्होंने कुल २७ रचनाएँ कीं । इनमें से प्रमुख काव्य पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है –

कामायनी - यह महाकाव्य छायावादी काव्य का कीर्ति- स्तम्भ है। इस महाकाव्य में मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव को ह्रदय (श्रद्धा) और बुद्धी (इड़ा) के समन्वय का सन्देश दिया गया है।

आँसू - यह वियोग का काव्य है । इसके एक-एक छन्द में दुख और पीड़ा साकार हो उठी है ।

चित्राधार - यह प्रसाद जी का ब्रजभाषा में रचित काव्य - संग्रह है ।

लहर - इसमें प्रसाद जी की भावात्मक कविताएँ संग्रहीत हैं ।

झरना - यह प्रसाद जी की छायावादी कविताओं का संग्रह है । इस संग्रह में सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूतियों को मनोहारी रूप से वर्णित किया गया है ।

इसके अतिरिक्त प्रसाद जी ने अन्य विधाओं में भी साहित्य – रचना की हैं उनका विवरण इस प्रकार है -

नाटक – नाटककार के रूप में उन्होंने चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, एक घूंट, विशाख, राज्यश्री, कल्याणी, अजातशत्रु, प्रायश्चित नाटकों की रचना की है ।

उपन्यास - कंकाल, तितली, इरावती अपूर्ण रचना है।

कहानी – संग्रह – प्रसाद जी उत्कृष्ट कहनीकार थे। इनकी कहानियों में भारत का अतीत मुस्कराता है । प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल कहानी संग्रह हैं ।

निबंध – काव्य और कला ।

प्रसाद जी के साहित्य में व्यापकता और गहनता दोनों ही हैं। उनके काव्य में छायावादी काव्य की विशेषता का चरम उत्कर्ष दिखाई देता है । उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का सहयोग पाकर आधुनिक काल की कविता सुरभित हो उठी। वह आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं ।

१.४ बीती विभावरी जाग री - भावार्थ / काव्य

१. जय शंकर प्रसाद जी ने इस कविता के माध्यम से प्रकृति का सुंदर वर्णन किया है, वे कहते हैं कि रात का पहर समाप्त होने को आ गया है। इस प्रातःकालीन दृष्य को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूर्य के आगमन की आहट से तारांगण अम्बर रूपी पनघट में जमा हैं ।

प्रातः के आगमन की आहट से चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गई है। पक्षियों का समूह अपनी चहचहाहट से सुबह का स्वागत कर रहे हैं। पेड़ों के कोमल पत्ते अपना आँचल फैलाकर डोलते हुए प्रातः का स्वागत कर रहे हैं। पेड़ों की सारी लताएँ भर आई हैं। पेड़ों में पुष्प खिल आए है। जो रस से सने हुए हैं। जिनका आनंद लेने के लिए भौंरे आ गए हैं। उनके अधर इस सुगंधित रस से सराबोर हो गए हैं । जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इन अधरों का रस कभी तेजहीन नहीं होगा । वे मलयज पर्वत से बहने वाली तेज हवाओं की परवाह किए बिगर इस रस का आनंद ले रहे हैं ।

हे सखी प्रकृति के सभी प्राणी जाग चुके हैं। और तुम अब तक सोई हुई हो। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि तुम किस प्रेम में खोई हुई हो। किस सपने में डूबी हुई हो । अब जाग जाओ ।

१.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

‘अधरो में राग अमंद पिए
अलकों में मलमज बंद किए
तू अब तक सोयी है आली!
आखों में भरे विहाग री !’

अनुलेख : अधरों में ———————–विहाग री!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ काव्य–कुंज नामक काव्य संकलन के 'बीती विभावरी जाग री' नामक कविता से ली गई हैं । इसके कवि जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रसंग : यह कविता लहर नामक काव्य–ग्रंथ से ली गई है। यह मूल रूप से एक उत्कृष्ट जागरण गीत है जिसे नायिका को जगाने के लिए अभिव्यक्ति दी गई है।

व्याख्या : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि नायिका को संबोधित करते हुए कह रहा है कि हे नायिके प्रकृति के सभी प्राणी प्रातः होते ही जाग गए हैं और संबंधित कार्यों में जुट गए हैं। उषा के आगमन पर कलियाँ खिल चुकी हैं और भौंरे उनमें जा–जाकर उसके मद का पान कर रहे हैं, उनके अधर इस सुगंधित रस से सरा बोर हो गए हैं। जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इन अधरों का रस कभी तेजहीन नहीं होगा, वे मलयज पर्वत से चलने वाली तेज हवाओं की परवाह किए बिना इस रस का आनंद ले रहे हैं और हे नायिके तुम अपने आँखों में अब तक प्रेम की कल्पना भरकर सोई हो। उठो अब तुम भी अपने कार्यो में जुट जाओ.

साहित्यिक सौंदर्य :

१) प्राकृतिक सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है ।
२) 'क' की आवृति अनुप्रास अलंकार का प्रतिनिधित्व करता है ।
३) शब्द का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है ।
४) यह एक प्रकार का जागरण गीत है ।

१.६ बोध प्रश्न :

क) 'बीती विभावरी जाग री!' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।
ख) 'बीती विभावरी जाग री! ' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए
ग) बीती विभावरी जाग री कविता का केंन्द्रीय भाव लिखिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) कवि अंबर पनघट में किसके डूबने की बात कर रहा है ?
उत्तर : तारा रुपी घट के डूबने की बात कर रहा है ।
२) किसका आँचल डोल रहा है ?
उत्तर : किसलय का आँचल डोल रहा है ।
३) कवि किसके भर आने की बात कर रहा है ?
उत्तर : लतिका के भर आने की बात कर रहा है ।
४) अब तक कौन सोई हुई है ?
उत्तर : अब तक नायिका सोई हुई है ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -२

भिक्षुक - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

इकाई की रूपरेखा :

२.१ जीवन परिचय
२.२ भिक्षुक
२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
२.४ बोध प्रश्न
२.५ लघुत्तरी प्रश्न

२.१ जीवन परिचय

महाकवि निराला का जन्म सन् १८९७ ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ। उनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी था । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राज्य के हाईस्कूल में हुई। आपको बचपन से ही कुस्ती. घुड़-सवारी और खेती का बड़ा शौक था । बालक सूर्यकान्त के सिर से माता-पीता की छाया अल्प आयु में ही उठ गई ।

आपको बंगला भाषा और हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। आपने संस्कृत और हिन्दी के साहित्य का भी अध्ययन किया । भारतीय-दर्शन में आपकी पर्याप्त रुचि थी ।

इनका पारिवारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय रहा । एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म देकर इनकी पत्नी स्वर्ग सिधार गई। पत्नी के विरह के दौरान इनका परिचय महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ। उनके सहयोग से इन्होंने 'समन्वय' और 'मतवाला' का सम्पादन किया। इनकी कविता 'जूही की कली' ने क्रान्ति ला दी। आपको बार–बार आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आर्थिक अभावों के चलते इनकी पुत्री सरोज का देहान्त हो गया। उस पर आपने 'सरोज स्मृति' नामक कविता लिखी।

साहित्य और जीवन में निराला स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द से बहुत प्रभावित थे। इनकी कविताएँ छायावादी, रहस्यवादी और प्रगतिवादी विचार धाराओं के आधार पर लिखी गई हैं। सन् १९६१ में इनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ – निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी काव्य-रचनाएँ इस प्रकार हैं –

परिमल – इसमें सड़ी – गली मान्यताओं के प्रति तीव्र विद्रोह तथा निम्न वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई देती है।

गीतिका – इसकी मूल भावना श्रृंगारिक है फिर भी इनके बहुत से गीतों में मधुरता के साथ आत्मनिवेदन, प्रकृति वर्णन तथा देश –प्रेम का चित्रण भी हुआ है ।

राम की शक्ति पूजा - इसमें कवि का ओज तथा पौरुष प्रकट हुआ है ।

सरोज समृति - यह हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोक-गीत है । कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपराध, बेला, नये-पत्ते, आराधना, अर्चना भी उनकी सुन्दर काव्य रचनाएँ हैं ।
निराला जी की गद्य रचनाएँ इस प्रकार हैं –
लिली, चतुरी चमार, अप्सरा, अलका, प्रभावती और निरूपमा ।

२.२ भिक्षुक - भावार्थ

भिक्षुक कविता को निराला जी के 'अपरा' नामक काव्य-ग्रंथ से लिया गया है। इस कविता के माध्यम से निराला जी ने समाज के हाशिए में जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त 'भिक्षुक' का वर्णन किया है। समाज का यह एक ऐसा वर्ग है जो लगातार अन्न के दानों के लिए तड़पता दिखाई देता है ।

लेखक कहता है कि वर्तमान समय में मुनष्य की दुर्दशा देख पाना बड़ा ही कष्टप्रद हो रहा है। वह एक ऐसे भिक्षुक को देख रहा है जिसके भूख के कारण पीठ और पेट मिलकर एक हो चुके है। उन में अब अंतर कर पाना संभव नहीं हैं। उसमें अब चलने का सामर्थ्य भी नहीं रह गया है। वह लाठी के सहारे चल रहा है। यह चलना उसकी मजबूरी है क्योंकि उसे मुट्ठीभर दानों की तलाश रह गई हैं। उसमें बोलने की सामर्थ्य भी अब शेष नहीं रह गई है इसीलिए वह अपनी फटी-पुरानी झोली का मुंह फैलाए धूम रहा है ।

उस भिक्षुक के साथ उसी की तरह भूख से जूझते हुए दो बच्चे चल रहे हैं। जो भीख के लिए अपने हाथ फैलाए हुए हैं । ये बच्चे बाएँ हाथ से अपने पेट को मल रहे हैं, और इनका दायाँ हाथ लोगों से कुछ पाने की अपेक्षा में फैला हुआ है । उनके ओठ भूख के कारण सूख चुके हैं । लेकिन उनके भाग्य विधाता समृद्ध वर्ग से उन्हें कुछ भी नहीं मिल पाता है, अंततः वे आसुओं का घूँट पीकर ही रह जाते हैं।

अब उनके पास सिर्फ एक ही विकल्प बचता है कि सड़क किनारे पड़े हुए जूठे पत्तलों को चाट कर अपनी क्षुधा शांत करें। लेकिन वहाँ भी लगातार कुत्तों से उनकी प्रतिस्पर्धा चलती दिखाई देती है।

इस प्रकार लेखक ने समाज में मनुष्य की दुर्दशा को अभिव्यक्ति दी है। मनुष्य का इस तरह का विभत्स्य वर्णन अन्यत्र नहीं दिखाई देता है। यही स्थिति समाज को इस वर्ग के उत्थान को लेकर सोचने के लिए विवश करता है।

२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

‘वह आता’
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लुकटिया टेक,’

अनुलेख : वह आता ——————— लकुटिया टेक।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ ‘काव्य-कुंज’ नामक काव्य संकलन के ‘भिक्षुक’ नामक कविता से ली गई हैं। इसके कवि सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ हैं ।

प्रसंग : यह कविता निराला जी के ‘अपरा’ काव्य-ग्रंथ से ली गई है। इसमें कवि की अनुभूतियों की सच्चाई को अभिव्यक्ति दी गई है ।

व्याख्या : कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से समाज के उस वर्ग को अभिव्यक्ति दी है जो अन्न के एक-एक दाने के लिए मुहताज है, कवि मनुष्य की दुर्दशा पर दुख प्रकट करते हुए कह रहा है कि वह एक ऐसे भिक्षुक को देख रहा है जिसके कई दिनों से भूखे रहने के कारण पेट और पीठ में अंतर कर पाना मुश्किल हो रहा है। उस में अब चलने तक का सामर्थ्य भी शेष नहीं दिखाई देता है। वह यदि किसी तरह साहस जुटाकर चलने की बात सोचता भी है तो उसे लाठी का सहारा लेना पड़ता है। अर्थात लाठी के बिना उसमें खड़े होने का सामर्थ्य तक शेष नही रह गया है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) मनुष्य की दुर्दशा का उल्लेख हुआ है ।
२) कवि के अनुभूतियों की सच्चाई का आभास होता है ।
३) विद्रोह का भाव दृष्टव्य होता है ।
४) संघर्ष के लिए प्रेरित करने वाली पंक्तियाँ हैं।

२.४ बोध प्रश्न :

क) भिक्षुक कविता का उद्देश्य लिखिए।

ख) भिक्षुक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

ग) भिक्षुक कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

घ) ‘भिक्षुक’ कविता कवि के यथार्थ अनुभूतियों का प्रतिनिधित्व करती है स्पष्ट कीजिए ।

२.५ लघुत्तरी प्रश्न :

१) भिक्षुक के शरीर के किस हिस्से में अंतर कर पाना संभव नहीं है?

उत्तर : पेट और पीठ में अंतर कर पाना संभव नहीं है ।

२) भिक्षुक किसके सहारे चलने की कोशिश कर रहा है ?

उत्तर : लकड़ी के सहारे चलने की कोशिश कर रहा है ।

३) भूख से किसके सूखने की बात की जा रही है?

उत्तर : भूख से ओठों के सूखने की बात की जा रही है ।

४) कुत्ते किस पर झपटने की ताक लगाए हुए हैं ?

उत्तर : कुत्ते भिखारियों द्वारा चाटे जा रहे जूठे पत्तलों पर झपटने के लिए तैयार दिखाई दे रहे हैं।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -३

‘मैं नीर भरी दुख की बदली’ - महादेवी वर्मा

इकाई की रुपरेखा :

३.१ जीवन परिचय
३.२ मै नीर भरी दुख की बदली : भावार्थ
३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.४ बोध प्रश्न
३.५ लघुत्तरी प्रश्न

३.१ जीवन परिचय

श्रीमती महादेवी का जन्म सन् १९०७ ई. में उत्तर प्रदेश के प्रसिध्द नगर फरूखाबाद में हुआ। उस दिन होलिका दहन का पुण्य पर्व था। इनकी माता हेमरानी साधारण कवयित्री थीं एवं श्रीकृष्ण में अटूट श्रध्दा रखती थीं । उनके नाना को भी ब्रजभाषा में कविता करने का चाव था । नाना एवं माता के इन गुणों का महादेवी पर भी प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया था। किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया । माता का साया सिर से उठ जाने पर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक मन लगाया, जिसके परिणामस्वरूप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम.ए.तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। बहुत समय तक आप प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करती रहीं ।

सर्वप्रथम आपकी रचनाएं "चाँद" में प्रकाशित हुई । इसके बाद आप चाँद की सम्पादिका भी रहीं । इन्हें ‘सेक्सरिया’ तथा मंगला प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है । भारत सरकार ने इन्हें "पद्मभूषण" की उपाधि से अलंकृत किया है । १९८३ में आपको डेढ़ लाख रुपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा एक लाख रुपये का उत्तर प्रदेश सरकार का हिन्दी पुरस्कार प्रदान किया गया। महादेवी की साहित्य – साधना के इस सम्मान से वास्तव में पुरस्कारों का गौरव बढ़ा है ।

रचनाएँ – महादेवी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं । –

नोहार – इस काव्य संकलन में भावमय गीत संकलित हैं । इनमें वेदना का स्वर मुखर हुआ है ।

रश्मि – आत्मा – परमात्मा के मधुर सम्बन्धों के गीत इस संग्रह में संकलित हैं ।

नीरजा – इसमें प्रकृति – चित्रण प्रधान गीत संकलित हैं । गीतों में सुख-दुख की अनुभूतियों को वाणी मिली है।

सांध्यगीत – इसके गीतों में परमात्मा से मिलन का आनन्दमय चित्रण है ।

दीप शिखा – इसमें रहस्य – भावना प्रधान गीतों को संग्रहीत किया गया है। इसके अतिरिक्त अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ आदि आपकी गद्य रचनाएँ हैं। 'यामा' नाम से आपके विशिष्ट गीतों का संग्रह हुआ है। 'संधिनी' और 'आधुनिक कवि' भी आपके गीतों के संग्रह हैं ।

३.२ मै नीर भरी दुख की बदली : भावार्थ

इस कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने विरहित जीवन व्यथा को अभिव्यक्ति दी है, इनका यह विरह एहलौकिक न होकर पारलौकिक है। जो स्थाई होता है। वह कहती हैं कि मेरा दुख जल से भरे बादलों के दु:ख के समान है। जो दूसरों को तृप्त करने के लिए लगातार स्वयं कष्ट झेलते हैं। मेरा दुख भी स्थायी दुख है । मेरे शरीर का रोम-रोम इस दु:ख से कंपित हो रहा है । मेरे इस रुदन से आहत (दुखी) होने के बजाय विश्व के लोग हँस रहे हैं ।

मेरी आँखें लगातार जल से भरी रहती हैं। और पलकों से सदा बरसात सी रोती रहती हैं, इस के बावजूद भी अपने प्रियतम को पाने की आशा लगातार बनी हुई है। मैं ज्यों-ज्यों अपने प्रियतम की ओर बढ़ती हूँ। मेरे हर कदम से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि निलकती है, जो मेरे कदमों में और अधिक गति भर देती है। और मेरी हर श्वास मेरे प्रियतम से मिलने के लिए पराग के समान उड़कर उन तक पहुँचने के लिए व्याकुल हैं।

लेखिका आगे कहती है कि मौसम मे परवर्तन के साथ ही आकाश में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। आज तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आकाश ने नए रंग के दुपट्टे धारण कर लिए हैं। उसकी छाया में मलयांचल पर्वत से ठंडी हवाएँ चलने लगी हैं। पूरी प्रकृति आनंद मय हो गई है। किन्तु लेखिका की भौहें, चिंता के कारण तन आई है तब भी उनके प्रियतम से मिलने के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे हैं ।

बरसात का मौसम आ रहा है। धूल की कणों पर बरसात की बूदों के मिलने से चारों और सौंधी गंध फैल गई है । जिसके परिणाम स्वरूप प्रकृति के सभी तत्वों में नवजीवन संचारित होने लगा है। चारों ओर एक तरह की नवीनता छा गई है। रस्ते इतने साफ हो चुके हैं कि उन पर अब आते-जाते लोगों के पद्‌चिन्ह भी अंकित नहीं होते।

लेखिका इस बात को लेकर चिंतित है कि प्रकृति के सभी तत्वों का अपने आप में मग्न होने के कारण अब उसके आने की याद तक लोगों की स्मृति से गायब दिखाई दे रही है, अर्थात लेखिका को उसके सुख की कल्पना का अंत होता दिखाई दे रहा है। वह यह मान चुकि है कि संपूर्ण आकाश के किसी भी कोने में उसके लिए कोई स्थान नहीं दिखाई दे रहा है ।

अंततः लेखिका जीवन का परिचय देते हुए कहती है कि मैं अपना परिचय क्या दूँ। मेरा यही इतिहास है कि मैं जीवन के जिस उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ी थी, जिसने मुझे जीने के लिए

सबल प्रदान किया। आज उसी का अंत होने की स्थिति में है । अर्थात लेखिका ने जीवन में कर्म को प्रधानता दी है। और लोगों को भी लगातार कार्य करने की प्रेरणा दी है ।

३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

'मेरा पग-पग संगीत भार
श्वासों में स्वप्न पराग झरा
नभ के नवरंग बुनते दुकूल.
छाया में मलय-बयार पली।'

अनुलेख : मेरा पग – पग .... मलय – बयार पली ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य कुंज' नामक काव्य संकलन के 'मैं नीर भरी दुख की बदली' नामक कविता से ली गई है। इसकी कवयित्री महादेवी वर्मा जी हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री निरंतर चिर-विरह में लीन रहते हुए भी अपने प्रेम को बॉटती रहती है।

व्याख्या : कवयित्री ने इन पक्तियों के माध्यम से विरहित जीवन में आशा का संचार करने की प्रेरणा दी है । यहाँ प्रेमिका में अपने पति के आने की आशा लगातार बनी हुई है। उसे लगता है कि ज्यों–ज्यों समय बितता जा रहा हैं त्यों-त्यों उसके प्रिय के मिलन की घड़ी नजदीक आ रही है। अतः उसके चलने से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि निकलने लगी है। उसकी हर साँस अपने प्रियतम से मिलने के लिए पराग के समान उड़ जाना चाहती हैं। आज आकाश ने नए दुपट्टे धारण कर लिए हैं। मलयांचल पर्वत से ठंडी हवाएँ बहने लगी हैं। पूरी प्रकृति आनंदमय हो गई है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) बादल को आत्म और नीर को प्रेम का प्रतीक माना गया है।
२) त्याग की भावना दिखाई देती है।
३) प्रकृति का सुंदर वर्णन हुआ है।
४) संस्कृत-निष्ठ शब्दों का प्रयोग किया गया है।
५) प्रिय से मिलन की छटपटाहट दिखाई देती है।

३.४ बोध प्रश्न :

क) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।
ख) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता का संदेश लिखिए ।
ग) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता विरह की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करती है स्पष्ट कीजिए।
घ) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली'कविता में सामाजिक जीवन के मंगलमय की कल्पना की गई है स्पष्ट कीजिए।

munotes.in

३.५ लघुउत्तरी प्रश्न :

१) निर्झरियाँ कहाँ मचल रही हैं ?

उत्तर : निर्झरियाँ पलकों में मचल रही है ।

२) श्वासों से क्या झड़ रहा है ?

उत्तर : श्वासों से स्वप्न पराग झड़ रहा है ।

३) दुकूल शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ।

उत्तर : दुकूल शब्द का प्रयोग दुपट्टे के लिए हुआ है।

४) विरह से उत्पन्न क्रंदन को देखकर कौन हँस रहा है ?

उत्तर : विरह से उत्पन्न क्रंदन को देखकर विश्व हँस रहा हैं ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -४

'नर हो न निराश करो मन को', 'पुष्प की अभिलाषा', झाँसी की रानी'

इकाई की रूपरेखा

४.१ इकाई का उद्देश्य
४.२ प्रस्तावना
४.३ कवि परिचय
४.४ कविता का भावार्थ
४.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
४.६ बोध प्रश्न, वस्तु निष्ठ प्रश्न

४.१ इकाई का उद्देश्य :

इस काव्य खंड की द्वितीय इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'नर हो न निराश करो मन को', 'अभिलाषा' व 'झाँसी की रानी' को लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इन कविताओं के माध्यम से विद्यार्थीयों में आशावादी दृष्टिकोण, जीवन मूल्य, राष्ट्र-प्रेम व स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश वासियों के त्याग से परिचय कराया जाएगा।

४.२ प्रस्तावना :

कवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित 'नर हो न निराश करो मन को ' एक आशावादी कविता है। जिसमें जीवन के मूल्यवान होने की बात कही गई है। और स्वयं अपने-अपने जीवन के निर्माण की प्रेरणा दी है ।

'पुष्प की अभिलाषा' के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाने का प्रयास किया है। इस हेतु उन्होंने पुष्प का मनवीकरण करके बलिदान की भावना को अभिव्यक्ति दी है ।

'झाँसी की रानी' सुभद्राकुमारी चौहान की उस दौरान की कविता है जब देश में स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम की ओर बढ़ रहा था । इसके अंतर्गत रानी लक्ष्मी के शौर्य और

पराक्रम का वर्णन किया गया है। जो सदियों तक आने वाले युवकों के मन में देश भक्ति के बीज को अंकुरित ही नहीं करेगी बल्कि नवयुवकों में देश के लिए समर्पण की भावना को विकसित भी करती रहेगी ।

४.३ मैथिलीशरण गुप्त - जीवन परिचय

'भारत–भारती' के अमर गायक 'साकेत', 'यशोधरा' जैसे महाकाव्यों के प्रणेता श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म बुन्देलखण्ड के चिरगाँव (झाँसी) में सन् १८८६ ई. में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्ता को हिन्दी साहित्य से विशेष प्रेम था। गुप्त जी की शिक्षा–दीक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। घर के साहित्यिक वातावरण के कारण गुप्त जी में कविता के प्रति अभिरुचि हुई। पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने से इनके काव्य-जीवन को नई प्रेरणा मिली । द्विवेदी जी के आदेशानुसार ही गुप्त जी ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में 'भारत-भारती' नामक राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त पुस्तक की रचना की ।

'साकेत' नामक महाकाव्य पर हिन्दी–साहित्य सम्मेलन ने इनको 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया। आगरा और प्रयाग–विश्वविद्यालय ने गुप्त जी को डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया । भारत सरकार द्वारा गुप्त जी को १९५४ में पद्मभूषण से अलंकृत किया गया । ये दो बार राज्य सभा के सदस्य भी मनोनीत किए गए ।

१२ दिसम्बर १९६४ में गुप्त जी का देहावसान हो गया ।

रचनाएँ – गुप्त जी तत्कालीन कवियों में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। इनकी चालीस मौलिक तथा छह अनूदित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं । गुप्त जी की आरम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित हुई । इनकी प्रसिध्द काव्य- रचनाएँ इस प्रकार है –

भारत - भारती – इसमें देश के प्रति गौरव की भावनाएँ भरी हैं। इसी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।

साकेत – मानस के पश्चात् हिन्दी में राम – काव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' ही है ।

यशोधरा – इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है ।

द्वापर, जय-भारत, विष्णुप्रिया – इनमें हिडिम्बा, नहुष, दुर्योधन आदि के चरित्रों का पुनर्निर्माण कवि की पुनर्निर्माण कला का जीवन्त प्रमाण है। गुप्त जी की अन्य प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं – पंचवटी, चंन्द्रहास, कुणालगीत, सिध्दराज, मंगल – घट अनघ तथा मेघनाद वध।

४.४ 'नर हो न निराश करो मन को'

कवि मैथिली शरण गुप्त ने इस कविता के माध्यम से मनुष्य के जीवन को महत्वपूर्ण बताया है। वे मनुष्य से आव्हान करते हैं कि तुम इंसान हो, और इंसान को जीवन में कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। हमें लगातार अपने भावार्थ में संलग्न रहना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमें लोग हमारे कार्यों से जाने, हमें लगातार इस खोज में लगा रहना है कि हमारा जन्म किस हेतु हुआ है? व्यर्थ के कार्यों को करके इसे गवाने का कोई अर्थ नहीं है। हमारा यह शरीर किसी काम में आ सके इस हेतु लगातार प्रयास करते रहता है। हमें जीवन में निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

वे मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि समय रहते यदि हमने कार्य नहीं किया तो समय निकल जाएगा। जो व्यक्ति सौद्देश्य कार्यों को करता है। वह कार्य व्यर्थ नहीं होता। यह संसार सिर्फ सपने देखने के लिए नहीं है बल्कि उन सपनों को साकार करने के लिए है। हमें रास्ता तैयार करना है। और आगे बढ़ना है। यदि व्यक्ति प्रगति के पथ पर कदम आगे बढ़ाता है तो स्वयं भगवान उसे सहारा देने के लिए आगे आते हैं। इसलिए हमें अपने कार्यों पर विश्वास करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।

आगे कवि कहता है कि हे मनुष्य तुम्हें सिर्फ अपनी रुचि के अनुसार कार्य को चुनना है उसके लिए सारे तत्व इस पृथ्वी पर विद्यमान हैं। यदि तुमने एक बार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का निश्चय कर लिया तो उसे पाना असंभव नहीं है। तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के उपरांत जिस आनंद की अनुभूति होगी उसकी कल्पना संभव नहीं है। अतः इस अकल्पनीय सुख को प्राप्त करने के लिए जागो, उठो और आगे बढ़ो। जिस समाज में तुम रह रहे हो उसके लिए देवतुल्य बनने का प्रयास करो। तुम्हें निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

हे मनुष्य तुम्हें हमेशा अपने गौरव का ध्यान रखना है। क्योंकि तुम्हारे कार्यों के बल पर ही तुम जाने जाओगे, इसलिए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सदा सतर्क रहना है। तुम्हें कुछ ऐसे कार्यों को करना है कि मरने के बाद भी लोग जानें तुम्हारी जय-जय कार करें। आपके जीवन में कैसी भी विषम परिस्थितियाँ क्यों न आ जाए लेकिन अपने स्वाभिमान का त्याग नहीं करना चाहिए, जो हमारी ताकत होती है। क्योंकि बुरे समय के बाद अच्छा समय भी आता है। इसलिए हमें निराश होने की आवश्यकता नही है ।

भगवान ने तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हें वे सारी वस्तुएँ दान की हैं जिनकी तुम्हें आवश्यकता है। यदि इसके बावजूद भी तुम इन्हें अर्जित करने में सक्षम नहीं हो पाते हो तो इसमें किसी का दोष नहीं हैं। तुम्हें इस बात का ध्यान रहे कि इस संसार की कोई भी वस्तु को प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसलिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

हे मनुष्य तुम इस संसार के सुखों का भोग करने के उद्देश्य से इस संसार में आए हो। तुममें उन तमाम गौरवों को आर्जित करने की क्षमता भी है। तुम सभी भगवान के अपने लोगों में हो, तुम उनके घर के लोगों में से हो। अतः तुम्हारे लिए- इस संसार में कोई भी कार्य करना असंभव नहीं है अर्थात सब कुछ संभव है। अतः तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

हे मनुष्य तुम अपने कार्यों को लेकर खेद प्रकट न करो । बल्कि कार्यो के तह तक पहुँचकर अपने लक्ष्य को भेदने में निरंतर संलग्न रहो। क्योंकि हमारे कार्य ही हमारे उद्यम को अभिव्यक्ति दे पाएँगे। इन कार्यो में खरा उतरने के बाद जो आनंद की अनुभूति होती है। वही हमारी सच्ची निधि है। जो व्यक्ति इस संसार में निष्क्रिय बना रहता है। उसके जीवन को धिक्कार है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को जीवन से निराश न होकर कार्य के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए। और लगातार कार्य करते रहने चाहिए। तभी जीवन का आनंद प्राप्त हो सकता है ।

४.५ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलम्बन को
नर हो, न निराश करो मन को'

अनुलेख : समझो जग .... मन को।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य कुंज' के 'नर हो न निराश करो मन को' नामक काव्य संग्रह से ली है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

प्रसंग : यह एक आशावादी कविता है जिसमें कवि कर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में कवि मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि जो व्यक्ति सउद्देश्य कार्यों को करता है। उसके द्वारा किए गए कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाते हैं। यह संसार सिर्फ सपने देखने के लिए नहीं है बल्कि उन सपनों को साकार करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना है और आगे बढ़ते रहना है। जो व्यक्ति प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है, स्वंय भगवान उसे सहारा देने के लिए आगे आते हैं। अत: हमें अपने आप पर व अपन कार्यो पर विश्वास करना चाहिए। अर्थात किसी को निराश होने की आवश्यकता नहीं हैं ।

साहित्यिक सौंदर्य:

१) यह एक आशावादी कविता है ।
२) इसमें कर्म को प्रधानता दी गई है ।
३) सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है ।
४) काव्य पंक्तियों में तुकांतता दिखाई देती है ।

४.६ बोध प्रश्न :

क) 'नर हो न निराश करों मन को' नामक कविता का भावार्थ लिखिए ।
ख) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
ग) 'नर हो न निराश करो मन को' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
घ) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता के माध्यम से कर्म को प्रधानता दी गई है स्पष्ट कीजिए ।

लघु उत्तरी प्रश्न :

१) कवि मनुष्य से क्या करने को कह रहा है?

उत्तर : कवि मनुष्य को काम करने को कह रहा है ।

२) कवि किस रस का सेवन करने के लिए कह रहा है ?

उत्तर : कवि स्वत्त्व सुधा रूपी रस का पान करने के लिए कह रहा है ।

३) कवि मनुष्य के किसके जन होने की बात कर रहा है ?

उत्तर : कवि मनुष्य के जगदीश्वर के जन होने की बात कर रहा है ।

४) सन् १९५४ में मैथिलीशरण गुप्त जी को किस सम्मान से नवाजा गया ?

उत्तर : सन् १९५४ में मैथिलीशरण गुप्त को 'पद्मभूषण' की उपाधि से नवाजा गया ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -५

‘पुष्प की अभिलाषा’ - माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई की रूपरेखा :

५.१ जीवन परिचय
५.२ भावार्थ - पुष्प की अभिलाषा
५.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
५.४ बोध प्रश्न
५.५ लघु उत्तरी प्रश्न

५.१ जीवन परिचय

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् १८८९ में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद के बाबई गाँव में हुआ था । इनके पिता का नाम पं. नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन कार्य भी किया। सन १९१३ में ये सुप्रसिध्द मासिक प्रभा के सम्पादक नियुक्त हुए । श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे । इन्हें कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी। चतुर्वेदी जी सन् १९४३ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए । ८० वर्ष की अवस्था में ३० जनवरी, १९६८ के इनका स्वर्गवास हो गया। ‘हिम किरीटिनी’ हिम तरंगिनी इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं । इसके अतिरिक्त इनके काव्य – ग्रंथ ‘माता’ और ‘मरण–ज्वार’ भी प्रकाशित हुए। चतुर्वेदी जी ने नाटक, कहानी, निबंन्ध और संस्मरण भी लिखे हैं। इनके भाषणों में चिन्तक की लाचारी तथा ‘आत्मदीक्षा नाम के संग्रह भी प्रकाशित हुए है ।

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयता वादी है जिसमें त्याग, बलिदान, कर्तव्य – भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देने वालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरूष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार है।

हिन्दी साहित्य की सेवा के उपलक्ष्य में सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें मानद डी. लिट. तथा भारत सरकार ने ‘पद्म भूषण’ की उपाधि से अलंकृत किया था ।

५.२ पुष्प की अभिलाषा - भावार्थ

क्रांति के अमर गायक माखन लाल चुतर्वेदी जी की 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत है। उनका मानना है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तैयार रहे। जिस राष्ट्र में इस तरह की मानसिकता रखने वाले नागरिक होते हैं उस देश की तरफ कोई भी राष्ट्र आँख उठाकर नहीं देख सकता है। उन्होंने देशवासियों के दिलों की राष्ट्र भक्ति की भावना को और अधिक सुदृढ करने के लिए अपने विचारों को पुष्प के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जो इस बात का प्रतिनिधित्व करता है कि जिस देश का 'फूल' भी राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए प्रतिबद्ध है वहाँ का नागरिक कैसा होगा ?

'पुष्प की अभिलाषा' के माध्यम से कवि बताता है कि फूल की यह इच्छा नहीं है कि वह देव पत्नी के गहनों के रूप में निर्मित माला में गूँथा जाए। नहीं वह प्रेमी के गले की माला में स्थान पाकर उसकी प्रेमिका को अकर्षित करने की अभिलाषा ही रखता है। न ही उसकी इच्छा है कि वह सम्राटों के शव पर चढाया जाए। इस हेतु भी वह भगवान से प्रार्थना नहीं करता है। न ही उसकी कोई ऐसी इच्छा है कि वह देवों के सिर पर चढ़ाया जाए और वहाँ पर विराजमान होकर अपने भाग्य इठलाए।

प्रश्न यह उठता है कि आँखिर पुष्प की चाह क्या है? पुष्प माली से कहता है। कि हे वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फैक देना जिस रास्ते से हमारे देश के वीर जवान इस देश की रक्षा के लिए आगे बढ़ रहे हों। जिन्हें अपने जीवन से ज्यादा देश से प्रेम है। ऐसे वीर जवानों के मार्ग पर मुझे बिछा देना ताकि उन्हें किसी तरह कि परेशानी का सामना न करना पडे।

इस प्रकार कवि ने देश भक्ति को अभिव्यक्त करने वाली अदभुत कविता लिखी है ।

५.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'मुझे तोड़ लेना' वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावे 'वीर अनेक।'

अनुलेख : मुझे तोड़ .... वीर अनेक।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता से ली गई हैं। जिसे माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा है।

संदर्भ : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि देश-प्रेम की भावना को अभिव्यक्ति देता है ।

व्याख्या : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने पुष्प को इंसान की तरह वाणी दी है। पुष्प बगीचे के माली को संबोधित करते हुए कहता है कि हे वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर डाल देना जिस मार्ग से हमारे देश के वीर जवान अपनी जान की परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए

munotes.in

आगे बढ़ रहे हों। जिन्हें अपने जीवन से ज्यादा देश से प्रेम होता है । ऐसे वीर जवानों के मार्ग पर मुझे बिछा देना ताकि उन्हें किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) राष्ट्रप्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया गया है ।
२) पुष्प में मानवीकरण अलंकार दिखाई देता है ।
३) काव्य पंक्तियों में तुकांतता का प्रयोग किया गया है ।
४) गुलामी से मुक्ति की ओर संकेत किया है ।

५.४ बोध प्रश्न :

१) 'पुष्प की अभिलाषा' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।
२) 'पुष्प की अभिलाषा ' का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
३) 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
४) 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के माध्यम से देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्ति दी गई है। अपने शब्दों ने लिखिए।

५.५ लघु उत्तरी प्रश्न :

१) पुष्प किसके गहनों में नहीं गुँथना चाहता है ?

उत्तर : पुष्प सुरबाला के गहनों में नहीं गुँथना चाहता है।

२) पुष्प किसके शव में न चढ़ाँए जाने की बात करता है ?

उत्तर : पुष्प सम्राटों के शव में न चढ़ाए जाने की बात करता है।

३) पुष्प माली से उसे कहाँ फैंकने को कहता है ?

उत्तर : पुष्प माली से उसे वीरों के मार्ग में फैकने को कहता है।

४) सैनिक किस पर शीश चढ़ाने को तैयार रहते है।

उत्तर : सैनिक मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने को तैयार रहते हैं।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -६

'झाँस की रानी' - सुभद्राकुमारी चौहान

इकाई की रूपरेखा :

६.१ जीवन परिचय
६.२ भावार्थ - झाँसी की रानी
६.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
६.४ बोध प्रश्न
६.५ अति लघु उत्तरी प्रश्न

६.१ जीवन परिचय

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् १९४० में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था । इन्हें बचपन से ही काव्य से बहुत प्रेम था । खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह से विवाह के पश्चात इन पर महत्मा गाँधी द्वारा चलाये गए राष्ट्रीय आन्दोलन का विशेष प्रभाव पड़ा, इसलिए ये राष्ट्र- प्रेम से ओतप्रोत कविताएँ लिखने लगीं। इनके काव्य संग्रह 'मुकुल' पर सन् १९३१ में साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा सेक्सरिया पुरस्कार प्रदान किया गया । सन् १९४८ में एक मोटर दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई ।

सुभद्रा जी की काव्य- साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। आजादी के लिए जेल – जीवन की सम्पूर्ण यातनाओं को हँसते – हँसते, सुखपूर्वक सहने में इन्हें आनन्द आता था । इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। हिन्दी-काव्य जगत में ये अकेली ऐसी कवियित्री हैं जिन्होंने अपने कंठ की पुकार से लाखों भारतीय युवक - युवतियों को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग स्वतंत्रता संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। सुभद्रा जी की 'झाँसी वाली रानी थी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक की कविताएँ आज भी तरुण-तरुणियों के ह्रदय में वीरता के भाव जाग्रत करती है ।

सुभ्रद्रा जी की भाषा सीधी सरल तथा स्पष्ट एवं आडम्बरहीन खड़ी बोली है। मुख्यतः दो रस इन्होंने अंकित किये-वीर तथा वात्सल्य। इनके काव्य में एक ओर नीर सुलभ ममता और सुकुमारता है और दूसरी पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला। अपने काव्य में इन्होंने पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र अंकित किये हैं जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। अलंकारों अथवा कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़कर सीधी –सादी स्पष्ट अनुभूति को इन्होंने प्रधानता, दी है ।

'मुकुल और त्रिधारा' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है ।

६.२ भावार्थ - 'झाँसी की रानी'

'झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान की उस दौर की कविता है, जब देश में स्वतंत्रता आन्दोलन अपने चरम की ओर बढ़ रहा था। यह कविता न सिर्फ झाँसी की रानी के शौर्य का वर्णन करती है बल्कि अंग्रेजों ने किस तरह धीरे-धीरे स्थानीय राजाओं को हराकर अपना साम्राज्य बढ़ाया इसके ऐतिहासिक संकेत भी इसमें दिए गए हैं। जिसका उल्लेख कवयित्री ने इस प्रकार किया है ।

कवयित्री कहती है । पूरा भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी व यातनाओं से त्रस्त हो चुका था। अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं का विरोध होने लगा था । राजवंशी राजाओं का क्रोध सातवे आसमान पर था। जिससे भयभीत होकर अंग्रेजों का सिंहासन डोलने लगा था। ऐसा लग रहा था मानो बूढ़े भारत में आज फिर से जवानी का संचार हो रहा था। अब भारत के लोगों को आजादी की कींमत समझ में आने लगी थी। इसीलिए सभी ने यह संकल्प ले लिया था अब फिरंगियों को इस देश से खदेड़ बाहर करना है। यह वही दौर था जब झाँसी से रानी लक्ष्मीबाई ने तलवार उठा ली थी। जिसका सामना करने की क्षमता किसी में नहीं दिखाई दे रही थी ।

इस सब के चलते एक बार फिर से महलों में उजाला अर्थात खुशियाँ छाने लगी । लेकिन यह खुशी ज्यादा समय तक नहीं टिक पाई। काल के चक्र ने फिर महलों में काली घटा कर दी, तीर चलाने वाली झाँसी की रानी के हाथों में चूड़ियाँ अधिक समय तक नहीं टिक पाई अर्थात वह विधवा हो गई । राजा संतान सुख लेने से पहले ही इस संसार से चल बसे। और रानी का जीवन शोकमय हो गया। इसी के परिणाम स्वरूप रानी को झाँसी की रक्षा के लिए तलवार उठानी पड़ी।

झाँसी के राजा की मृत्यु पर डलहौजी काफी प्रसन्न हुआ। उसे लगा की झाँसी को हड़पने का इससे अच्छा अवसर फिर नहीं मिल सकता। उसने फौरन फौज भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया। इस प्रकार लावारिस झाँसी का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया। अश्रुपूर्ण रानी ने देखा कि झाँसी राजा के बिना विरानी हो गई है। तब उसने उसकी रक्षा के लिए तलवार उठाई और बड़ी ही जाँबाजी से युद्ध किया ।

ब्रिटिश शासकों ने बातों ही बातों में दिल्ली पर भी कब्जा कर लिया था । पेशवा को विठूर में कैद कर दिया, उसकी नजरें. नागपुर को हड़पने के लिए तैयार थी, उदयपुर तंजौर, सतारा और कर्नाटक को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, सिंध, पंजाब, ब्रह्मा पर भी उन्होंने बज्रापात किया। बंगाल और मद्रास आदि राज्यों को भी लगातार अपना गुलाम बनाते चले गए। इन सभी स्थितियों को देखते हुए रानी लक्ष्मीबाई काफी दुखी हुई और उसने अंग्रेजों से लोहा लेने का संकल्प किया ।

अंग्रेजों के शासन के दौरान कुटियों में रहने वाले भी विषय वेदनाओं से ग्रस्त थे। साथ ही महलों में रहने वाले भी सुखी नहीं थे। वीर सैनिकों का समूह अपने पूर्वजों के शौर्य को याद करके अपने अंदर साहस जुटाने का प्रयास कर रहे हैं। नाना धुन्धू पन्त पेशवा अंग्रेजों का सामना करने के लिए युद्ध सामग्री जुटाने में लगे हुए थे। बहन झाँसी की रानी ने रणचंडी का अवतार धारण कर अंग्रेजों के विरुध्द तलवार तान दी। उन्होंने लोगों के मन में समर्पण की ज्योति जगाने के लिए आव्हान प्रारंभ कर दिया। और स्वयं तलवार उठा ली ।

कवि कहता है कि बाँकि की कथा के संदर्भ को छोड़ों। अब हम झाँसी के मैदान में चलते हैं। जहाँ पर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई मर्द बनकर युद्ध के मैंदान में खड़ी है। दूसरी ओर से लैफ्टिनेंट वॉकर अपनी सेना के साथ जैसे ही झाँसी की रानी की ओर बढ़ा वैसे ही रानी ने भी अपनी तलवार खींच ली। उसके बाद दोनों की सेनाओं के बीच घमासान युध्द हुआ। जखमी वॉकर युध्द के मैदान से भाग खड़ा हुआ। उसे अपनी हार आश्चर्यजनक प्रतीत हुई। लक्ष्मीबाई का युद्ध कौशल्य के संदर्भ में बुंदेले हरबोलों के मुँह से कहानी सुनी ।

झाँसी की रानी झाँसी के मैदान से आगे बढ़कर लगभग सौ मील की दूरी तय कर कालपी पहुँचती है। जहाँ पहुँचते ही थककर उसका घोड़ा भूमि पर गिर पड़ा और साथ ही उसी क्षण स्वर्ग को सिधार गया। यहाँ भी यमुना के तट पर अंग्रेजों ने फिर से एक बार रानी से मात खाई। विजयी रानी आगे बढ़ती गई और उसने ग्वालियर को भी अपने आधीन कर लिया। रानी के भय से अंग्रेजों के मित्र सिंधिया राजधानी छोड़कर भाग खड़ा हुआ। यह कथा बुन्देलों हरबोलों के मुँह से सुनी थी ।

रानी को विजय तो मिली किन्तु फिर से अंग्रेजों की सेना ने उसे घेर लिया। इस बार अंग्रेजों की कमान जनरल स्मिथ ने संभाली थी। रानी के सम्मुख उसे भी मुँह की खानी पड़ी और उसे मैदान छोंड़कर भागना पड़ा। रानी की ताकत उसकी दो सखियाँ थी जिनका नाम काना और मन्दरा था इन्होंने युद्ध के मैंदान में भारी मात्रा में हाहाकार मचाया था। एक बार फिर से अंग्रेजी सेना ने ह्यूरोज के नेतृत्व में रानी को घेर लिया। इसका भी रानी ने डटकर सामना किया। जिसे बुन्देले हर बोले ने हमें बताया।

चारों ओर से घिरने के बावजूद रानी मारकाट करते हुए आगे बढ़ी जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँची तो एक बड़ा नाला सामने आ गया । जो उसके लिए बहुत बड़ा संकट बन गया। उसके पास जो नया घोड़ा था उसने नाला पार करने से इनकार कर दिया अर्थात वह अड़ गया। इतने में अनेक सवार वहाँ आ खड़े हुए। उन्होंने रानी को अकेला देख उसे घेर लिया और उस पर चारों ओर से वार करने लगे। इस प्रकार घायलावस्था में धिरी सिंहनी की भाँति लड़ने वाली झाँसी की रानी को वीरगति प्राप्त हुई। बुंदेले हर बोलों के मुँह से हमने उसके शौर्य की गाथाएँ सुनी।

इस प्रकार लगातार कई दिनों तक लड़ते हुई रानी स्वर्ग सिधार गई । उसकी चिता उसके लिए दिव्य सवारी के समान थी। ज्वाला के तेज से जब उसका तेज मिला तो ज्वाला और जोर से धधक उठी, जिसकी वास्तव में वह अधिकारिणी थी। उस समय उसकी उम्र तेइस साल की थी। वह सामान्य स्त्री नहीं थी बल्कि अवतारी थी। वह तो सिर्फ भारत वासियों के मृत शरीर में प्राण फूकने के लिए स्वतंत्रता नारी बनकर आई थी। वह हमें एक रास्ता दिखा गई और हमें देश को स्वतंत्र करवाने का पाठ पढ़ा गई। इस प्रकार बुंदेले हर बोलों ने अपने मुँह से रानी लक्ष्मीबाई की मर्दानगी से युद्ध करने की कथा को हमें बताया ।

६.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी' बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

अनुलेख : दिखा गई .... रानी थी ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य-कुंज' के 'झाँसी की रानी' से ली गई है जिसे सुभद्राकुमारी चौहान ने लिखा है ।

प्रसंग : इन पंक्तियों के माध्यम से झाँसी की रानी के शौर्य और पराक्रम को अभिव्यक्ति दी गई है ।

व्याख्या : कवि ने झाँसी की रानी के शौर्य और पराक्रम का उल्लेख करते हुए कहा है कि वह लगातार कई दिनों तक अंग्रेजों का सामना करती रही। वह अपने राज्य का लगातार विस्तार करती जा रही थी। ज्वाला के तेज से उसका तेज अधिक धधकता दिखाई पड़ता था । उस समय उसकी उम्र केवल तेईस साल थी। वह सामान्य स्त्री नहीं थी बल्कि कोई अवतारी प्रतीत होती थी। वह इस संसार में भारत वासियों की खोई हुई शक्तियों को जगाने के उद्देश्य से आई थी। वह हमें स्वतंत्रता का रास्ता दिखाने आई थी। यह कथा हमने बुन्देले हर बोलों के मुँह से सुनी थी।

साहित्यिक सौदर्य :

१) लक्ष्मीबाई के शौर्य का वर्णन किया गया है ।

२) कविता काफी प्रेरणास्पद है।

३) कविता ऐतिहासिकता का संकेत करती है।

६.४ बोध प्रश्न :

क) 'झाँसी की रानी' का कथ्य अपने शब्दों में लिखिए ।

ख) 'झाँसी की रानी' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

ग) 'झाँसी की रानी ' एक स्त्री की शौर्य कथा है। अपने शब्दों में लिखिए।

घ) 'झाँसी की रानी' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।

६.५ अति लघुउत्तरी प्रश्न :

१) रानी की तलवार से जख्मी होकर कौन भाग गया था ?

उत्तर : लैफ्टनैंट वॉकर रानी की तलवार से जख्मी होकर भाग गया था ।

२) सिंधिया कहाँ से भाग गया था ?

उत्तर : सिंधिया राजधानी छोड़कर भाग गया था ।

३) रानी की सखियाँ कौन थी ?

उत्तर : रानी की सखियाँ काना और मन्दरा थी ।

४) रानी सहादत के समय कितनी वर्ष की थी ?

उत्तर : रानी सहादत के समय मात्र तेइस वर्ष की थी ।

❖❖❖❖

इकाई -७

"सिंदूर तिलकित भाल", 'दीया जलाना कब मना है', जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना ।

इकाई की रूपरेखा :

७.१ इकाई का उद्देश्य
७.२ प्रस्तावना
७.३ कवि परिचय
७.४ कविता का भावार्थ
७.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.६ बोध प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

७.१ इकाई का उद्देश्य

इस काव्य खंड की तृतीय इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'सिंदूर तिलकित, भाल', 'दीया जलाना कब मना है'। 'जलाओ दिये पर ध्यान रहे इतना' से लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ, स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इससे विद्यार्थीयों को अपने जड़ों से जुड़े रहने का बोध होगा। स्मृतियाँ जीवन कों शक्ति देती हैं। इस बात की जानकारी प्राप्त होगी। जीवन के प्रति आशावादी बनने की प्रेरणा, कार्य के प्रति निष्ठा को बढ़ावा मिलेगा। विद्यार्थी परोपकार से प्राप्त सुख से रूबरू होगा।

७.२ प्रस्तावना :

सिंदूर तिलकित भाल में कवि ने प्रवास के दौरान स्मृतियों के सहारे किस प्रकार जीवन को जीया जाता है। इसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। व्यक्ति को अपनों से बिछुड़ने पर ही अपने और पराये का बोध होता है ।

'दीया जलाना कब मना है' में कवि का आशावादी स्वर मुखरित हुआ है कवि कहता है कि सपना देखना अच्छी बात है किन्तु इन्हें पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता होती है जिसके लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

munotes.in

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना नामक कविता में मानवतावादी स्वर मुखरित हुआ है। कवि कहता है कि व्यक्ति को अपनी खुशी को सबकी खुशी में परिवर्तित करने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। ऐसा करने से अलौकिक सुख की अनुभूति होती है ।

७.३ नागार्जुन - कवि परिचय

जनकवि नागार्जुन का जन्म सन् १९११ में बिहार राज्य के दरभंगा-जिले के तरौनी नामक गाँव में हुआ था। इनका जन्म का नाम वैद्यनाथ मिश्र था परन्तु बौध्द-दर्शन से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण इन्होंने अपना नाम एक मेधावी बौध्द दार्शनिक नागार्जुन के नाम पर रख लिया। इन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली गुजराती तथा संस्कृत में भी अनेक रचनाएँ की हैं। कविता के साथ-साथ नागार्जुन साहित्य की अन्य विधाओं-यथा उपन्यास, आलोचना तथा कहानी की ओर भी उन्मुख हुए। परंतु कविता ही इनकी व्यापक प्रसिद्धि का आधार रही हैं। पत्रहीन नग्न गाछ पर इन्हें सन् १९६१ का मैथिली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनके अन्य काव्य-संग्रह हैं - युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ। इनकी काव्य-संवेदना व्यक्ति से विश्‍व-मानव-स्तर तक परिव्याप्त रही हैं। यही कारण है कि इनकी कविता में स्थानीय मुद्दों, युगीन राजनीतिक एवं सामाजिक प्रश्नों के साथ-साथ व्यक्ति-मानस के कोमल भावों की भी उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। इनकी कविताओं के इसी व्यापक चरित्र के कारण ही इन्हें जन-जन का कवि भी कहा जाता है। सन् १९९८ में इनकी मृत्यु हो गई ।

७.४ 'सिन्दूर तिलकित भाल' - भावार्थ

इस कविता में कवि स्वयं श्रीलंका के लिए निकले है। इसी बीच उन्हें अपनी नवविवाहित पत्नी का सिंदूर तिलकित भाल याद आने लगता है, घर की यादें सताने लगती हैं। जिनका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है - कवि कहता है. कि मुझे विषम परिस्थितियों ने घोर निर्जन में डाल दिया है, ऐसी परिस्थिति में मुझे प्रिये तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल याद आता है। इस संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो अपने समाज से दूर रहना चाहता हो। हम अपने लोगों के बीच बिना किसी संकोच के एक-दूसरे के कार्यों में हाथ बँटाते रहते हैं। एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करते रहते हैं। और एक दूसरे का सहवास पाते रहते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो चाहेगा की उसकी साँसें शून्य से टकराए। अतः कवि कहता है कि मैं भी पत्थर का बना नहीं हूँ जो अपने लोगों से दूर कर दिए जाने के बाद भी दुखी न होऊँ, विरोध न कँरू ।

मैं तो असाधारण व सचेतन जंतु हूँ, मैं क्या, कहाँ, किन्तु, परन्तु वाली बातों को नहीं जानता । यहाँ हर्ष-विषाद-चिंता व क्रोध एक साथ विद्यमान हैं । यहाँ पहुँचने पर ही हमें सुख और दुख का एहसास हुआ, यहाँ पर अनुमान की गुंजाइश नहीं है क्योंकि सब कुछ सामने (प्रत्यक्षतः) घटित होता है । यहाँ पर पुरानी बातों के अनायास स्मृति में आ जाने और थोड़ी देर में विस्मृति में चले जाने की प्रक्रिया चलती रहती है। तब हे प्रियतमा तुम याद आती हो। क्योंकि अभी तक मेरे भीतर इंसानियत बची हुई है। अभी तक मेरा ह्रदय पत्थर की तरह कठोर नहीं हुआ है।

मुझे प्रवास के दौरान अपने लोग याद आ रहे हैं। जिनकी आँखों से प्रेम का अमृत बरसता दिखाई देता था। मेरे स्मृति पर चित्र लगातार प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। मुझे आज मेरा 'तरउली' गाँव भी याद आ रहा है ।

कवि को उसके तरउली गाँव की लीचियाँ व वहाँ के आम के फल याद आ रहे हैं। वहाँ आकर्षित करने वाले भू-भाग उनमें उगाए जाने वाले धान के साथ - साथ कमल व कुमुदिनी के फूल व तालमखान भी याद आते हैं। जिनके नाम उनके रूप-गुण के अनुसार रखे गए हैं। वहाँ के वनों को भी वे नहीं भुला पाते हैं । और वहाँ के पर्वत शिखर याद आते हैं।

कवि उनके उन मृदुलतम अंक के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने उनके लिए पलंग का काम किया। वह जमीन धन्य है जिसमें अन्न, पानी और साग-सब्जी आदि उपजते हैं। जिनका सेवन कर कवि अपने को धन्य मानता है। इस जमीन से उपजने वाले फल-फूल और कंदमूल तथा मधु और माँस आदि ने मेरा पोषण किया। इस प्रकार कवि कहता है कि मैं अपने गाँव व वहाँ की जमीन का ऋृणी हूँ। जिसका मैं चाहकर भी दशांश नहीं चुका सकता हूँ। कवि अपने गाँव घर से दूर पड़ गया है। लेकिन वह अपने गाँव को अपने से दूर नहीं कर पा रहा है। उसे रह-रहकर वहाँ के लोग व वहाँ का समाज याद आ रहा है ।

अंतिम पंक्तियों में कवि गाँव और शहर के बीच अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करते हुए कहता है कि आज में गाँव से दूर असहाय अवस्था में पड़ा हुआ हूँ। यहाँ भी लोग हैं उनका समूह है, मैं भले भी अपनी सारी जिंदगी यहीं बिताऊँ तब भी लोग मुझे प्रवासी ही कहेंगे। मेरे मरने पर ये लोग मेरी चिता पर दो फूल भी डाल देंगे। इस प्रकार समय का चक्र चलता रहेगा, मेरे एक तस्वीर टाँग दी जाएगी जिसमें मैं मूँक बना रहूँगा ।

कवि अपनी प्रिया को याद करते हुए कहता है जब में पश्चिम दिशा में सूर्य को ढ़लते हुए देखता हूँ। उसका वह लालिमा युक्त दृश्य मुझे तुम्हारे सिंदूर तिलकित भाल की याद दिला देता है।

इस प्रकार कवि भले ही अपने गाँव व घर से किन्हीं विषम परिस्थितियों के कारण दूर हो गया हो लेकिन वह अपने मन और मस्तिष्क से गाँव से अलग नहीं हो पा रहा है।

७.५ संदर्भसहित व्याख्या :

याद आते स्वजन
जिनका स्नेह से भीगा अमृतमय आँख
स्मृति- विहंग की कभी थकने न देगी पाँख
याद आता मुझे अपना वह तरउली ग्राम ।

अनुलेख : याद आते .... तरउली ग्राम।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'सिंदूर तिलकित भाल' से ली गई हैं। जिसे नागार्जुन ने लिखा है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में प्रवास के दौरान अपनों से बिछुड़ने के दुख को प्रकट किया गया है।

व्याख्या : कवि प्रवास के दौरान अपने लोगों से बिछुड़ जाता है तब उसे रह -रहकर वे सभी लोग याद आने लगते हैं जो दुख और सुख में सदैव उसके साथ बने रहते थे । जिनकी आँखों में हमेशा उसके लिए अमृत बरसता हुआ महसूस होता था । मेरे अपने इन लोगों के सारे चित्र मेरी स्मृतियों में ताजा हो रहे हैं। मुझे आज अपना वह तरउली गाँव बहुत याद आ रहा है। जिसका अपना एक अलग महत्व हुआ करता था ।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) अपनों से बिछुड़ने का दुख अभिव्यक्त हुआ है।

२) सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

३) संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग हुआ है ।

४) स्मृतियों को महत्व दिया गया है ।

७.६ बोधप्रश्न :

१) 'सिंदूर तिलकित भाल' नामक कविता का संदेश लिखिए ।

२) 'सिंदूर तिलकित भाल' नामक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए ।

३) 'सिंदूर तिलकित भाल' कविता प्रवास के दौरान की व्यथा का लेखा-जोखा है। अपने शब्दों में लिखिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) घोर निर्जन परिस्थितियों से कवि को कौन याद आता है ?

उत्तर) घोर निर्जन परिस्थितियों में कवि को अपनी पत्नी का 'सिंदूर तिलकित भाल' याद आता है।

२) कवि के गाँव का नाम क्या है ?

उत्तर) कवि के गाँव का नाम तरउनी है ।

३) समय किस गति से चल रहा है ?

उत्तर) समय निर्बाध गति से चल रहा है ।

४) कवि को किसके नामों की याद आ रही है ?

उत्तर कवि को शस्य-श्यामिला जनपदों की याद आ रही है। जिनके नाम उनके रूप और गुणों के आधार पर रखे गए हैं।

❖❖❖❖

इकाई -८

'दीया जलना कब मना है' - हरिवंश राय बच्चन

इकाई की रूपरेखा :

८.१ कवि परिचय
८.२ भावार्थ - 'दीया जलाना कब मना है'
८.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.४ बोध प्रश्न

८.१ कवि परिचय :

श्री हरिवंशराय बच्चन का जन्म सन् १९०७ में इलाहाबाद में हुआ था । सन् १९३८ में इलहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए. करने के पश्चात् ये वहीं विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त हुए । सन् १९५२ में इन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ महीने आकाशवाणी में कार्य करने के तुरंत बाद सन् १९५५ में इनकी नियुक्ति भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के पद पर हुई । सन् १९६६ में ये राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए।

लिखने का उत्साह बच्चन के मन में विद्यार्थी-जीवन से ही था । एम. ए. के अध्ययन - काल में इन्होंने फारसी के प्रसिध्द कवि उमर खय्याम की रुबाइयों का हिन्दी में अनुवाद किया, जिसने इन्हें नवयुवकों का प्रिय कवि बना दिया। इसी से उत्साहित होकर इन्होंने उसी शैली में अनेक मौलिक रचनाएँ लिखी, जो मधुशाल, मधुबाला, मधुकलश आदि में संगृहित हैं। अपनी गेयता, सरलता, और खुलेपन के कारण ये काव्य संग्रह बहुत ही पसंद किए गए । पहली पत्नी की मृत्यु ने इनके काव्य में निराशा और वेदना की रेखा खींच दी, परंतु यह खटाटोप शीघ्र ही छँट गया और ये पुनः मधुरता, आस्था और विश्वास के गीत गाने लगे । गाँधीवाद और सामाजिक यथार्थ का प्रभाव भी इनकी अनेक कविताओं में देखा जा सकता है। १८ जनवरी, २००२ को इनका देहावसान हो गया।

बच्चन व्यक्ति-प्रधान गीतों के कवि हैं। इस क्षेत्र में इन्होंने विविध प्रयोग किए हैं । इनके गीतों की भाषा सरस और स्वाभाविक है। उनमें उर्दू-कविता जैसा प्रवाह है। कवि ने लोकधुनों के आधार पर भी कुछ गीत लिखे हैं। मधुशाला, एकांत संगीत, सूत की माला, मिलन-यामिनी, हलाहल, आरती और अंगारे, धार के इधर-उधर, बहुत दिन बीते आदि इनकी प्रसिध्द काव्य-रचनाएँ हैं। इनकी काव्य रचना दो चट्टानों पर इन्हें साहित्य अकादमी की ओर से पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् १९७६ में इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया ।

८.२ भावार्थ - 'दीया जलाना कब मना है'।

कवि हरिवंशराय बच्चन ने इस कविता के माध्यम से आशावादी विचारधारा को प्रोत्साहित किया है, वे कहते हैं कि मैंने कल्पना रूपी हाथों से जिस सुन्दर मंदिर को तैयार किया और भावना के हाथों ने जिसमें शामियाना ताना था।

मेरे स्वप्नों ने जिसे पूरी निष्ठा के साथ सवारा-सजाया जिसमें स्वर्ग के समान सभी प्रकार के सुखों को समाया गया था, लेकिन जब उसे अकृति देने के लिए ईंट, पत्थर व कंकड़ों को जोड़ने का प्रयास किया गया तो वह उस तरह नहीं बन पाया जो कल्पना में था । अर्थात मेरे सारे सपने ढह गए । लेकिन इस दुख से दुखी रहने के बजाय अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बनाकर अंधेरी रात में उसने दिए का उजाला करके सुखपूर्वक रहने के लिए कभी कोई मनाही नहीं है ।

आकाश में अपने अश्रु रूपी बादलों से अपना नीलापन और अपने रत्नों को धोकर आकर्षकता प्रदान की थी, लेकिन उसके सपनों को आशा की प्रथम किरण ने अपनी मदिरा सम लालिमा बिखेरकर सभी सपनों को चूरचूर कर दिया। सूर्य की चंचल किरणों से यदि चंद्रमा का सपना टूट भी गया तो वह निराश नहीं होती, वह तो अपने स्वभाव के अनुकूल चारों ओर निर्मलता बिखेरना बंद नहीं करती है। इस प्रकार विषम परिस्थिति में वह अपने कर्तव्यरूपी दिए को जलाए रखती है ।

कवि कहता है कि मेरे जीवन में एक समय ऐसा था कि एक घड़ी के लिए भी चिंता मेरे आस-पास नहीं भटकती थी, और किसी प्रकार की बुरी छाया भी मेरे पलक का स्पर्श तक नहीं कर पाती थी। मेरी आखों से मेरी खुशी झलकती थी। और वार्तालाप से शरारत प्रकट होती थी। मेरी स्वच्छंद हंसी से बादल तक शर्मसार हो जाते थे। उसका मेरे जीवन से चला जाना मानो मेरे जीवन से खुशियों का चला जाना था। लेकिन जीवन में अस्थिरता आने पर निराश होने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि विषम परिस्थितियों में भी व्यक्ति को खुश रहने की आवश्यकता है। ताकि हर परिस्थिति में समरसता बनाए रखने की कला लोग उससे सीख सकें।

जब मेरे जीवन में संगीत की लहर ने पदार्पण किया तो मैंने सभी प्रकार के सुख वैभवों का त्याग कर उसे वरदान समझकर सहर्ष स्वीकार किया। संगीत का अपना एक अलग सुख होता है। उसकी ध्वनि में पृथ्वी व आकाश दोनों ही मद्मस्त हो उठते है। और मैं भी धुन में अधिक समय तक साधन मात्र रह गया हूँ। लेकिन यदि अधूरी पंक्तियों से भी मेरा मन बहल जाता है तो इससे कोई परहेज नहीं करना चाहिए। क्योंकि संगीत से जुड़ा रहना अधिक महत्वपूर्ण है ।

कभी-कभी जीवन में अच्छे दोस्त मिल जाते है। जो उनके साथ चुम्बक की तरह चिपके रहते हैं। ये उनके ह्रदय में घर कर जाते हैं। ऐसे दोस्तों के साथ जीवन बिताना बड़ा ही सुखकर होता है। हमें जीवन वीणा में गाए गए सुंदर गीत का अहसास कराता है। इसके बावजूद वे कभी जीवन के आधे रास्ते में ही छोड़कर विदा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में एक नए मित्र को

खोजना और उसके साथ आगे का जीवन बिताना गलत बात नहीं होती। इस प्रकार अपने जीवन में प्रकाश करना गलत बात नहीं है।

मेरे जीवन में हवा का इतना तेज झौका आया कि उसने मेरे आशियाने को ही ध्वस्त कर दिया। जीवन को लेकर शोर गुल मचाना मेरे किसी काम नहीं आया। जब व्यक्ति के जीवन में विनाश का सिलसिला चलने लगता है तो उसे रोक पाना किसी के बस में नहीं है। लेखक आज निर्माण के प्रतिनिधि को ही कटघरे में खड़ाकर उससे पूछने लगता है। वे उसे यह बताने को कहते हैं कि जो बसे हुए लोग हैं। उन्हें उजाड़कर फिर से बसने की प्रकृति मुझे जड़ प्रतीत होती है। लेखक कहता है कि उजड़े हुए घर फिर से बसते है। और इस प्रकार बसने की प्रक्रिया बुरी नहीं है।

८.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'हाय, वे साथी कि चुम्बक लौह से जो पास आए।
पास क्या आए, ह्रदय के बीच ही गोया समाए।
दिन कटे ऐसे कि कोई तार वीणा के मिलाकर।
एक मीठा और प्यारा जिन्दगी का गीत गाए'।

अनुलेख : हाय , ने .... गीत गाए ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'दीया जलाना कब मना है' से ली गई है। जिसे हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है।

प्रसंग : कवि विषम परिस्थिति में धैर्य से काम लेने को कह रहा है और साथ ही नए सिरे से बिगड़े हुए कामों को सजोने के लिए कहता है।

व्याख्या : कवि इन पंक्तियों के माध्यम से कहता है कि जीवन में कभी-२ कुछ अच्छे मित्र मिल जाते हैं। जो सिर्फ उनके साथ चुम्बक की तरह ही नहीं चिपकते बल्कि उनके ह्रदय में अपने लिए जगह बनाने में भी सफल हो जाते हैं। ऐसे मित्रों के साथ समय बिताना बड़ा ही सुखकर होता है, जो हमें जीवन रूपी वीणा में गाए गीत के समान सुखकर होता है, जब कभी वे जीवन के आधे रास्ते में ही छोड़कर विदा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके बिना जीवन बड़ा ही कष्टप्रद लगने लगता है .

साहित्थिक सौंदर्य:

१) सच्चे मित्र की मित्रता को अभिव्यक्ति दी गई है ।
२) आशावादी कविता है ।
३) संघर्ष की प्रेरणा देती है ।

munotes.in

८.४ बोध प्रश्न :

क) 'दीया जलाना कब मना है' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।

ख) 'दीया जलाना कब मना है' कविता की संवदेना को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

ग) 'दीया जलाना कब मना है' कविता एक आशावादी कविता है स्पष्ट कीजिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) कल्पना के हाथों किस मंदिर को गढ़ा गया ?

उत्तर कल्पना के हाथों कमनीय मंदिर को गढ़ा गया।

२) बादलों के अश्रु से किसे धोया गया था ?

उत्तर बादलों के अश्रु से नभ-नील नीलम को धोया गया था।

३) व्यक्ति का जोर किसके साथ नहीं चलता है ?

उत्तर व्यक्ति का जोर नाश की शक्तियों के साथ नहीं चलता है।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -९

'जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना' - गोपाल दास सक्सेना 'नीरज'

इकाई की रूपरेखा :

९.१ कवि परिचय
९.२ भावार्थ - 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना'
९.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
९.४ बोध प्रश्न

९.१ कवि परिचय

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' (जन्म: ४ जनवरी १९२५, पुरावली, इटावा, उत्तरप्रदेश) ने अपनी मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति तथा सरल भाषा द्वारा हिन्दी कविता को एक नया मोड़ दिया है और बच्चन जी के बाद नई पीढ़ी को सर्वाधिक प्रभावित किया है। नीरज जी से हिन्दी संसार अच्छी तरह परिचित है। जन समाज की दृष्टि में वह मानव प्रेम के अनन्यतम गायक हैं। भदन्त आनन्द कौसल्यायनन के शब्दों में उनमें हिन्दी का अश्वघोष बनने की क्षमता है। दिनकर के अनुसार वे हिन्दी की वीणा हैं। अन्य भाषा-भाषियों के विचार में वे सन्त-कवि हैं और कुछ आलोचक उन्हें निराश-मृत्युवादी मानते हैं। आज अनेक गीतकारों के कण्ठ में उन्हीं की अनुगूँज है।

१९४२ में उन्होंने एटा से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। शुरुआत में इटावा की कचहरी में कुछ समय टाइपिस्ट का काम किया, उसके बाद सिनेमाघर की एक दुकान पर नौकरी की। लम्बी बेकारी के बाद दिल्ली जाकर सफाई विभाग में टाइपिस्ट की नौकरी की। वहाँ से नौकरी छूट जाने पर कानपुर के डी. ए. वी कॉलेज में क्लर्की की। फिर बाल्कट ब्रदर्स नाम की एक प्राइवेट कम्पनी में पाँच वर्ष तक टाइपिस्ट का काम किया। नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर १९४९ में इंटरमीडिएट, १९५१ में बी. ए. और १९५३ में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम. ए. किया। मेरठ कॉलेज मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया किन्तु कॉलेज प्रशासन द्वारा उन पर कक्षाएँ न लेने व रोमांस करने के आरोप लगाये जिससे कुपित होकर नीरज ने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हो गए और मैरिस रोड जनकपुरी अलीगढ में स्थायी आवास बनाकर रहने लगे ।

प्रकाशित साहित्य :

संघर्ष (१९४४), अन्तर्ध्वनि (१९४६), विभावरी (१९४८), प्राणगीत (१९५१), दर्द दिया है (१९५६) बादर बरस गये (१९५७) मुक्तकी (१९५८) दो गीत (१९५८), नीरज की पाती (१९५८) गीत भी अगीत भी (१९५९) आसावरी (१९६३), नदी किनारे (१९६३) लहर पुकारे (१९६३), कारवाँ गुजर गया (१९६४), फिर दीप जलेगा (१९७०) तुम्हारे लिये (१९७२), नीरज की गीतिकाएँ (१९८७)

पुरस्कार एवं सम्मान - विश्व उर्दू परिषद पुरुस्कार, पद्म श्री सम्मान (१९९१) भारत सरकार यश भारती एवं एक लाख रुपये का पुरस्कार (१९९४), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, पद्म भूषण सम्मान (२००७), भारत सरकार, फिल्म फेयर पुरस्कार।

नीरज जी को फिल्म जगत में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्नीस सौ सत्तर के दशक में लगातार तीन बार यह पुरस्कार दिया गया। उनके द्वारा लिखे गए पुरस्कृत गीत हैं १९७० काल का पहिया धूमे रे भइया! (फिल्म : चन्दा और बिजली), १९७१:बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ (फिल्म : पहचान) १९७२ : ए भाई जरा देख के चलो (फिल्म : मेरा नाम जोकर)

१.२ भावार्थ - 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना'

इस कविता के माध्यम से कवि का मानवतावादी स्वर ध्वनित हुआ है। वह कह रहे हैं कि व्यक्ति को अपने कार्यो द्वारा संपूर्ण धरती को प्रकाशवान करना चाहिए। व्यक्ति को नए-नए ज्ञान रूपी ज्योति को प्रसारित करने के लिए नए पंख धारण करने चाहिए। व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार का परिवर्तन आए कि उसकी गौरव गाथा आकाश तक फैल जाए। लोगों के जीवन में उनके कार्यों के परिणाम स्वरूप ऐसी रोशनी फैली कि अशान रूपी अंधेरे को वहाँ पर सिर छुपाने के लिए जगह तक न मिल पाए। लोगों के जीवन में मुक्ति का दरवाजा खुलकर ऐसी स्थिति का निर्माण हो कि न तो उनके जीवन से प्रकाशरूपी खुशहाली जा पाए और न ही अज्ञान रूपी अंधेरा उनके जीवन में प्रवेश कर सके।

इसीलिए कवि गुहार लगा रहा है कि व्यक्ति का ध्यान ज्ञान रूपी प्रकाश पर ही टिका रहे ताकि उसके जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार प्रवेश न कर सके ।

कवि कहता है कि भगवान ने सृष्टि का सृजन इसलिए किया है कि संसार में सभी का जीवन सुखमय बीते यदि किसी दरवाजे पर उदासी छाई रहेगी तो भगवान का यह सृजन अधूरा माना जाएगा। कवि मनुष्यता कि बात करते हुए कहता है कि जब तक यह भूमि एक दूसरे के खून की प्यासी दिखाई देगी तब तक मनुष्य का लक्ष्य पूरा नहीं माना जाएगा। जब तक मनुष्य स्वार्थी बना हुआ है तब तक पृथ्वी पर विनाश का सिलसिला चलता ही रहेगा। भले ही लोग दिवालीया मनाकर खुशियाँ बेटोरने की कोशिश करते रहें। इसलिए कवि कल्याणकारी कार्यों के लिए मनुष्य को प्रेरित कर रहा है ताकि सभी का जीवन खुशहाल बन सके ।

आगे कवि कहता है कि केवल दीपक के जलने से इस भू- भाग का अज्ञान रूपी अंधेरा नहीं मिट सकता है और न ही मिट सकेगा। आप अपनी आँखों के सभी आँसुओं को बहा दो।

ऐसा करने से आप दूसरों के ह्रदय में अपने लिए जगह नहीं बना पाओगे। इस धरती पर जब तक स्वयं मनुष्य दीपक का रूप धारण करके नहीं आएगा तब तक इस धरती पर रहने वाले लोगों का कल्याण संभव नहीं है।

इसलिए हे मनुष्य तुम्हें अपने ज्ञान रूपी दीपक से संपूर्ण पृथ्वी का अज्ञान रूपी अंधकार दूर करना है । तभी मनुष्य का जीवन स्वर्णिम बन पाएगा।

१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

सृजन है अधूरा अगर विश्व-भर में
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी।

अनुलेख : सृजन है .... भूमि प्यासी।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना' नामक कविता से ली गई है । इसके कवि गोपाल दास सक्सेना 'नीरज' हैं ।

प्रसंग : इन पक्तियों के माध्यम से कवि मनुष्य को दीपक के रूप में परिवर्तित होकर समाज को प्रकाशवान करने की गुहार लगा रहा है ।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अखिल मानवतावादी स्वर को व्यक्त करने का प्रयास किया है। वह कहता है कि यदि व्यक्ति की नजर में विश्व के कोई भी कोने में यदि विकास अधूरा दिखाई देता है और उसके कारण वहाँ से लोगों का जीवन उदास हो गया है तो मनुष्य को आपसी बैर-भाव समाप्त कर दुखी-पीड़ित लोगों की मदद करने के लिए आगे आना होगा ।

समाज में जब तक व्यक्ति एक दूसरे के खून का प्यासा होगा या अपने राज्य का विस्तार लोगों की जान लेकर किया जाएगा तब तक इस संसार में मानवता विद्यमान नहीं हो सकती है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) मानवतावादी स्वर मुखरित होता है।
२) संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है।
३) शब्दों का सुन्दर समन्वय हुआ है।
४) ज्ञान रूपी प्रकाश के प्रसार की बात की गई है।

munotes.in

१.४ बोध प्रश्न :

१) जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।
२) इस कविता का संदेश लिखिए।
३) यह कविता मानवतावादी विचार धारा को मुखरित करती है स्पष्ट कीजिए।
४) कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

लघु उत्तरी प्रश्न :

१) कवि किसे जलाने की बात कर रहा है ?

उत्तर कवि ज्ञान रूपी दीपक को जलाने की बात कर रहा है।

२) मनुजता कब तक पूर्ण नहीं होगी ?

उत्तर जब तक यह भूमि लहू के लिए प्यासी रहेगी तब तक मनुजता पूर्ण नहीं होगी।

३) जीवन में व्याप्त अंधेरा कब मिटेगा ?

उत्तर जीवन में व्याप्त अंधेरा तभी मिट पाएगा जब मनुष्य स्वयं दीप बनकर अवतरित होगा।

४) मृत्यु शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर मृत्यु शब्द का अर्थ नश्वर है।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१०

'बड़े घर की बेटी'

प्रेमचन्द

इकाई की रूपरेखा :

१०.० इकाई का उद्देश्य
१०.१ प्रस्तावना
१०.२ कहानी का सार
१०.३ कहानी का संदेश
१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.५ बोध प्रश्न
१०.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१०.० इकाई का उद्देश्य

१. इस इकाई के अन्तर्गत हम हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के संबंध में चर्चा करेंगे। प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी 'बड़े घर की बेटी' के माध्यम से हम यह देखेंगे कि छोटी–छोटी घटनाएँ किस प्रकार पूरे परिवार को प्रभावित करती हैं। साथ ही हम यह भी पढेंगे कि 'क्षमा' जैसे सद्गुण ही किसी व्यक्ति के बड़प्पन की पहचान होते हैं। इस कहानी को पढ़ने के बाद आप –

- प्रेमचन्द के जीवन और साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त कठिन शब्दों एवं मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।
- कहानी का सारांश बता सकेंगे।
- प्रस्तुत कहानी के उद्देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा – शैली से परिचित हो सकेंगे।

१०.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के समीप लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था। बचपन में ही पिताजी की मृत्यु के बाद आर्थिक तंगी झेलते हुए उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापक बन गए। नौकरी के दौरान उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई की और शिक्षा विभाग में सब–डिप्टी इन्स्पेक्टर बन गए। लगातार स्वास्थ्य बिगड़ते जाने के कारण मात्र 56 वर्ष की

अवस्था में ही सन 1936 ई. में इस महान साहित्यकार का निधन हो गया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों की रचना की जो मानसरोवर नाम से सात खण्डों में संग्रहित हैं। सेवा सदन, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, रंगभूमि और गोदान आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है। सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आवाज उठाती हुई उनकी कहानियाँ आदर्श की तरफ उन्मुख होती हैं।

१०.२ कहानी का सार

'बड़े घर की बेटी' एक संयुक्त परिवार की कहानी है। बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के एक छोटे जमीनदार थे। उनके दादा जी बहुत अमीर थे जिन्होंने गाँव में मंदिर और तालाब आदि बनवाए थे लेकिन मुकादमों के चक्कर में अब उनकी आधी सम्पत्ति ही बची थी। बेनीमाधव सिंह के दो बेटे थे – श्रीकंठ सिंह और लालबिहारी सिंह। बड़े बेटे श्रीकंठ सिंह बी.ए. पास थे। वह भारतीय संस्कृति और संयुक्त परिवार के समर्थक थे। उनका विवाह भूप सिंह की बेटी आनंदी के साथ हुआ था। दूसरा बेटा लालबिहारी एक पहलवान और अनपढ़ युवक था। एक दिन दाल में घी डालने की बात को लेकर आनन्दी और लालबिहारी में झगड़ा हो गया। आनंदी ने घर में घी समाप्त हो जाने की बात कही तो लालबिहारी को लगा कि वह उसके घर को तुच्छ समझ रही है। इसलिए तिनकते हुए उसने कहा कि – ''तुम्हारे मायके में तो जैसे घी की नदी बहती है।''

आनंदी भी अपने मायके की बुराई नहीं सुन सकती थी इसलिए मायके की तारीफ करती हुई बोली – ''हाथी मरा तो भी नौ लाख का।''

लालबिहारी भाभी की यह धृष्टता सह नहीं सका और आनंदी के ऊपर जोर से खड़ाऊ फेंक दिया। आनंदी ने खड़ाऊ को तो अपने हाथों से रोक लिया लेकिन उसका हृदय बहुत दुखी हुआ।

श्रीकंठ सिंह जहाँ नौकरी करते थे वहाँ से केवल शनिवार को ही घर आते थे। आनंदी और लालबिहारी का झगड़ा गुरूवार को हुआ था इसलिए आनंदी को शनिवार तक अपने पति का इंतजार करना पड़ा। श्रीकंठ सिंह शनिवार की शाम को घर आये और बाहर बैठ कर गाँव के लोगों से बातें करने लगे। मौका देखकर लालबिहारी ने आनंदी की शिकायत की और औरत को मर्यादा में रहते हुए बात करने की चेतावनी भी दी। बेनीमाधव सिंह ने भी अपने छोटे बेटे का समर्थन करते हुए आनंदी को मर्यादा में रहने की सलाह दी। घर के अंदर आने पर रोते हुए आनंदी ने श्रीकंठ सिंह को घटना सभी घटनाओं की पूरी जानकारी दी। पत्नी का अपमान सुनकर वह क्रोधित हो उठे और सुबह होते ही अपने पिताजी से अलग होने का निर्णय सुना दिए। पिता बेनीमाधव सिंह घर का बँटवारा नहीं चाहते थे इसलिए समझाते हुए कहे कि –

लालबिहारी तुम्हारा भाई है। उससे कभी भूल–चूक हो तो कान पकड़ो लेकिन....

श्रीकंठ सिंह – लालबिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह – स्त्री के पीछे?

श्रीकंठ सिंह – जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

बाप–बेटे के झगड़े को सुनने के लिए गाँव के लोग धीरे–धीरे जमा होने लगे। कुछ उस झगड़े से प्रसन्न भी हो रहे थे। बढ़ते हुए झगड़े को देखकर बेनीमाधव सिंह ने श्रीकंठ सिंह के सामने घुटने टेक दिए और बोले कि – बेटा मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे कहो, अब तो लड़के (लालबिहारी) से अपराध हो गया।

श्रीकंठ सिंह ने अपना निर्णय सुना दिया कि ''इस घर में या तो मैं रहूँगा या लालबिहारी।''

लालबिहारी अपने बड़े भाई की सभी बातें सुन रहा था। उसे बचपन की वह सभी बातें याद आ रही थीं जिसमें श्रीकंठ सिंह उसे प्यार किया करते थे। वह अपने किए पर पछतावा कर रहा था। उसे अपनी गल्ती का अहसास हो गया था। वह नहीं जानता था कि गुस्से में भाभी पर खड़ाऊँ फेंक देने के कारण घर का बँटवारा हो जाएगा। सब कुछ सोचकर लालबिहारी बहुत दुखी हुआ। वह आनंदी के पास जा कर बोला – ''भाभी, भैया ने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ इस घर में नहीं रहेंगे। वह अब मेरा मुँह देखना नहीं चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।'' लालबिहारी की बातें सुनकर आनंदी का हृदय पिघल उठा। अब उसे झगड़ा बढ़ाने की बात पर पछतावा हो रहा था। उसने अपने पति श्रीकंठ सिंह को समझाने और लालबिहारी को माफ कर देने का प्रयास किया लेकिन, श्रीकंठ सिंह अब लालबिहारी को अपने साथ रखने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। अन्त में लालबिहारी अपना पछतावा प्रकट करते हुए घर से जाने लगा तब आनंदी ने कहा – ''तुम्हें मेरी सौगन्ध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।''

आनंदी और लालबिहारी की बातें सुनकर श्रीकंठ का हृदय पिघल गया। अन्त में दोनों भाइयों को गले मिलते देख बेनीमाधव सिंह बोले उठे – 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।'

१०.३ कहानी का संदेश

बड़े घर की बेटी एक चरित्र प्रधान कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि कोई भी व्यक्ति किसी परिवार में जन्म लेने से बड़ा या छोटा नहीं होता बल्कि अपने कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। संयुक्त परिवार की इस कहानी में छोटी सी बात पर लालबिहारी और आनंदी के बीच अहं को लेकर झगड़ा बढ़ता है और स्थिति परिवार के विभाजन तक पहुँच जाती है। ऐसे अवसरों पर गाँव के लोगों की मानसिकता का भी लेखक ने सुंदर चित्रण किया है। परिवार के सभी सदस्य बिगड़ती हुई परिस्थिति को विषम होने के पूर्व ही बदलते हुए दिखाई देते हैं। बेनीमाधव सिंह प्रारंभ में तो लालबिहारी का पक्ष लेते हैं लेकिन श्रीकंठ सिंह के बढ़ते क्रोध को देखकर एक तरह से बेटे के समक्ष आत्मसमर्पण कर देते हैं। वहीं क्रोध के पागलपन में अपनी ही भाभी को खड़ाऊँ से मारने वाला लालबिहारी अब घर छोड़कर जाने लगा है। ये सभी परिस्थितियाँ

आनंदी के हृदय को द्रवित कर देती हैं और वह पति से लालबिहारी की शिकायत करने के लिए स्वयं को ही धिक्कारने लगती है। शायद उसे यह पता होता कि, पति से देवर की शिकायत इतनी बड़ी समस्या बन जायेगी तो वह शिकायत करती ही नहीं। यही कारण है कि कहानी के अंत में वह लालबिहारी को जाने से रोकती है और अपने पति श्रीकंठ सिंह को शांत होकर लालबिहारी को माफ करने के लिए कहती है। आनंदी का यही प्रयास उस परिवार को बिखरने से बचा लेता है। घर का विभाजन रूक जाने पर बेनीमाधव सिंह को यह अहसास होता है कि बड़े घर की बेटियाँ बिगड़ते हुए काम को बना लेती हैं। इस रूप में यहाँ लेखक का उद्‌देश्य मनोवैज्ञानिक चित्रण के द्वारा एक ऐसा आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना है जो यथार्थ की गलियों से होकर निकलता है। इस चरित्रप्रधान कहानी में बहू को बड़े घर की बेटी का गौरव उसके सद्‌गुणों के कारण और उसकी क्षमाशील प्रवृत्ति के कारण मिलता है।

१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

अवतरण : ''लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर ''पलट दी, और बोला – जी चाहता है, जीभ पकड़ कर खींच लूँ।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'बड़े घर की बेटी' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक ने क्षमा और प्रेम को मानव का सर्वश्रेष्ठ गुण बताया है।

प्रसंग : आनंदी जब दोपहर का भोजन बना चुकी थी उस समय लालबिहारी चिड़िया का माँस पकाने को कहने लगा। उसके लिए घी कम होने की बात को लेकर दोनों में बहस हुई। उस समय आनंदी ने कहा कि जितना घी यहाँ आता है उतना तो मेरे मायके में नौकर–चाकर खा जाते हैं। यह बात सुनकर लालबिहारी चिढ़ गया और आनंदी को डाँटते हुए उक्त बातें कहने लगा।

स्पष्टीकरण : आनंदी ने जब कहा कि जितना घी यहाँ आता है, उतना तो मेरे घर के नौकर चाकर खा जाते हैं। तब लालबिहारी को अपने परिवार का अपमान महसूस हुआ। उसे लगा कि आनंदी उसे तुच्छ समझ रही है और उसके घर वालों की तुलना अपने मायके के नौकरों–चाकरों से कर रही है। इसलिए अत्यन्त क्रोधित होकर उसे दण्ड देने की बात कहने लगा। भूख और क्रोध के कारण उसने अपना विवेक खो दिया और भोजन की थाली पलट दी। इस समय लालबिहारी क्रोध से पागल हो रहा था इसलिए वह उचित–अनुचित का भेद करना भी भूल गया था और अपनी बड़ी भाभी की जीभ खींचने की बात कह दिया।

विशेष -

१. क्रोध से बावले व्यक्ति का चित्रण किया गया है।
२. मुहावरे का प्रयोग हुआ है – जीभ खींचना।

munotes.in

१०.५ बोध प्रश्न

१. इस कहानी में बड़े घर की बेटी किसे कहा गया है? क्यों?
२. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
३. श्रीकंठ सिंह के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

१०.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीय प्रश्न

१) भूपसिंह कौन थे?
उत्तर : भूपसिंह आनंदी के पिताजी थे।

२) श्रीकंठ सिंह ने अपना रूप और गुण किसके लिए न्यौछावर कर दिया था?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह ने अपना रूप और गुण बी.ए. की डिग्री के लिए न्यौछावर कर दिया था।

३) लालबिहारी और आनंदी का झगड़ा किस दिन हुआ था?
उत्तर : लालबिहारी और आनंदी का झगड़ा गुरूवार को हुआ था?

४) श्रीकंठ सिंह किस संस्कृति के समर्थक थे?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह भारतीय संस्कृति के समर्थक थे।

५) माँस पकाने में आनंदी ने कितना घी डाला था?
उत्तर : माँस पकाने में आनंदी ने पाव भर घी डाला था।

६) लालबिहारी ने आनंदी पर क्या फेंक कर उसे मारा था?
उत्तर : लालबिहारी ने आनंदी पर खड़ाऊँ फेक कर मारा था?

७) बेनीमाधव के अनुसार बड़े घर की बेटियाँ क्या करती हैं?
उत्तर : बड़े घर की बेटियाँ बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

८) श्रीकंठ सिंह घर पर कब आते थे?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह शनिवार की शाम को घर आते थे।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -११

'पुरस्कार'

– जयशंकर प्रसाद

इकाई की रूपरेखा :

११.० इकाई का उद्देश्य
११.१ प्रस्तावना
११.२ कहानी का सार
११.३ कहानी का संदेश
११.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
११.५ बोध प्रश्न
११.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

११.० उद्देश्य

- इस इकाई के अन्तर्गत हम हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद के जीवन परिचय से अवगत होंगे। साथ ही प्रसाद जी के रचना संसार से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी के कठिन शब्दों एवं मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।
- कहानी के सारांश से अवगत हो सकेंगे।
- प्रस्तुत कहानी के संदेश को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा शैली से परिचित हो सकेंगे।

११.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - प्रसाद जी छायावाद के श्रेष्ठ कवि और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी कहानियाँ और निबंध भी हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। प्रसाद जी का जन्म सन 1889 में काशी (बनारस) में हुआ था। इनके पिता का नाम देवीप्रसाद था। परिवार में तंबाकू का व्यापार होने के कारण यह परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था। पारिवारिक समस्याओं के कारण प्रसाद जी केवल आठवीं तक ही स्कूली शिक्षा प्राप्त कर सके। बाद में स्वाध्याय के द्वारा संस्कृत, पाली, उर्दू और अंग्रेजी आदि भाषाओं का उन्होंने गहन अध्ययन किया। सन 1937 में ही प्रसाद जी का देहावसान हो गया।

प्रसाद जी मूल रूप से नाटककार और कवि थे। फिर भी उन्होंने अनेक कहानियों और निबंधों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित है :–

munotes.in

काव्य संग्रह : प्रेमपथिक, आँसू, झरना, लहर, कामायनी आदि।

नाटक : स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, कामना, जन्मेजय का नागयज्ञ आदि।

उपन्यास : तितली, कंकाल, इरावती (जो अधूरा रह गया)

कहानी संग्रह : आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, छाया और आकाशदीप।

प्रसाद जी मूलतः कवि थे। यही कारण है कि उनकी कहानियों में भावात्मकता की प्रधानता दिखाई देती है। ऐतिहासिकता और देशप्रेम उनके साहित्य के प्रधान अंग हैं।

११.२ कहानी का सार

'पुरस्कार' कहानी प्रसाद जी की सर्वाधिक चर्चित कहानियों में से एक है। यह कहानी स्पष्ट करती है कि व्यक्तिगत प्रेम और राष्ट्रप्रेम में से यदि एक का चुनाव करना हो तो राष्ट्रप्रेम का स्थान सर्वप्रथम आना चाहिए।

कहानी का प्रारंभ कोसल राज्य में प्रति वर्ष आयोजित होने वाले उस उत्सव से होता है जो बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता था। इस उत्सव में आस–पास के सभी राजाओं को निमन्त्रित किया जाता था और पूरी प्रजा उसमें शामिल होती थी। सैनिकों द्वारा एक किसान का खेत चुना जाता था जिसके बदले में खेत की कीमत से चार गुना मूल्य की स्वर्णमुद्रायें उसे दी जाती थीं। इस उत्सव में इन्द्र की पूजा होती है और एक दिन के लिए राजा को हल चलाना पड़ता। खेत का मालिक राजा को बीज देने का काम करता था। उत्सव के बाद वह खेत राजा का हो जाता था।

इस वर्ष उत्सव के लिए मधूलिका का खेत चुना गया था। हल के पीछे राजा को बीज देने का काम वही कर रही थी। जब उसे राजा द्वारा स्वर्ण मुंद्रायें उसके खेत के पुरस्कार के रूप में दी गईं तो उसने उन मुद्राओं को राजा पर न्यौछावर करके बिखेर दिया। कारण पूछने पर बताया कि 'यह मेरे पिता–पितामहों की भूमि है। मैं इसका मूल्य नहीं ले सकती।' यह सारी घटनाएँ उस उत्सव में उपस्थित पड़ोसी राज्य मगध का राजकुमार अरूण देख रहा था।

उत्सव समाप्त हुआ। मधूलिका महुए के पेड़ के नीचे स्थित अपनी झोपड़ी में चली गई। रात में जब सभी विश्राम करने लगे उस समय अरूण मधूलिका की झोपड़ी के पास पहुँचा और कहा – मेरा हृदय आपकी छवि का भक्त बन गया है, देवी!

मधूलिका ने कहा – राजकुमार मैं कृषक बालिका हूँ आप नंदनबिहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीने वाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुख से विकल हूँ। मेरा उपहास न करो। मधूलिका के नकार दिए जाने पर अरूण दुखी होकर वापस लौट गया।

समय के साथ मधूलिका अपने जीवन यापन के लिए दूसरे के खेतों में काम करने लगी। अपने सद्‌गुणों से वह एक आदर्श बालिका बन गई थी। ठंडी के मौसम में एक दिन जब तेज बरसात हो रही थी और उसकी झोपड़ी की छत से पानी टपक रहा था उस समय उसे अपनी गरीबी पर दुख हो रहा था। ऐसे समय में उसे अरूण के प्रणय निवेदन की याद आने लगी और रोशनी से जगमगाता उसका महल मधूलिका की आँखों में तैर गया।

अचानक दरवाजे पर किसी ने आश्रय पाने की आवाज लगाई। मधूलिका ने देखा तो वही राजकुमार आज फिर दरवाजे पर खड़ा झोपड़ी में आश्रय माँग रहा है। अभी मधूलिका जिसे सोच ही रही थी उसे प्रत्यक्ष देख कर आश्चर्य में पड़ गई।

अरूण इस समय अपने राज्य से निर्वासित होकर जीविका की तलाश में आया था। उसके साथ सौ सैनिक भी थे। वह मधूलिका से नए राज्य की स्थापना करने की बात करने लगा। एक राजकुमार से प्रेम की बात सुनकर मधूलिका प्रसन्न हो रही थी। अरूण उसे रानी बनाने के सपने दिखा रहा था। अब उसकी बातों को मधूलिका सहर्ष स्वीकार कर रही थी।

अरूण के कहने पर मधूलिका ने अपने राजा से दुर्ग के दक्षिणी नाले के पास की जंगली जमीन को खेती के लिए माँग ली। वह राजा के वीर सैनिक सिंहमित्र की बेटी थी जो वाराणसी युद्ध में शहीद हो गए थे। इसलिए वह जमीन देने में राजा ने कोई संकोच नहीं किया।

अगले दिन अरूण के सैनिक दुर्ग के दक्षिण की जंगली जमीन को काट कर रास्ता बना रहे थे। जब शाम होने लगी तो उसने मधूलिका से झोपड़ी में चले जाने और रात को दुर्ग पर आक्रमण करके उस पर कब्जा कर लेने की बात कही।

मधुलिका जब अपनी झोपड़ी की तरफ अकेली चली तो उसका मन अपने से ही विद्रोह कर उठा। उसे लगा कि जिस देश की रक्षा के लिए उसके पिता ने अपने प्राण दे दिए उसी देश को वह परतन्त्र करा रही है – केवल अपने सुख के लिए। उसे लगा जैसे उसके पिता जी कहीं से उसे पुकार रहे हैं। इसी समय सैनिकों के साथ सेनापति सड़क पर आते दिखाई दिए। वह बीच में पागलों की तरह खड़ी हो गई और पूछने पर रात को अरूण द्वारा किए जाने वाले आक्रमण की जानकारी सेनापति को दे दी।

सेनापति उसे लेकर राजमहल गए। दुर्ग के दक्षिण तरफ से सैनिकों ने अरूण को बन्दी बना लिया। सुबह होने पर राजा द्वारा जनता के सामने अरूण को फाँसी की सजा सुनाई गई और मधूलिका से पुरस्कार माँगने के लिए कहा गया। राजा ने कहा – "मेरे निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।" लेकिन, मधूलिका 'मुझे भी प्राणदण्ड मिले' कहती हुई बन्दी अरूण के पास जाकर खड़ी हो गई।

११.३ कहानी का संदेश

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके साहित्य में देशभक्ति के भाव सर्वत्र झलकते हैं। प्रस्तुत कहानी देश भक्ति की भावभूमि पर लिखी गई है। इस कहानी की प्रमुख पात्र मधूलिका कहानी के प्रारंभ में राजा द्वारा उत्सव के लिए जमीन चुने जाने पर राजाज्ञा का विरोध नहीं करती लेकिन, उत्सव के बाद अपनी जमीन के प्रतिदान में मिलने वाले पुरस्कार को स्वीकार न करते हुए कहती है –''राजकीय रक्षण की अधिकारिणी तो प्रजा है मन्त्रिवर!... महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध नहीं था और न है, किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव हैं।''

मधूलिका का यह आत्मसम्मान आगे भी बना रहता है। वह मजदूरी करके अपना जीवनयापन कर लेती है लेकिन किसी से मदद की अपेक्षा नहीं करती। यहाँ तक कि उसकी खेती की जमीन ले लेने वाले राजा के पास भी सहायता माँगने नहीं जाती। इतना ही नहीं प्रथम बार प्रणय निवेदन करने वाले अरूण को नकार देने के पीछे भी उसका आत्मसम्मान ही था।

अरूण के दूसरी बार आने पर मधूलिका का हृदय उसकी तरफ आकर्षित होता है। उसके द्वारा दिखाए जाने वाले सपनों के प्रति भी मधूलिका के मन में एक स्वाभाविक आकर्षण जागता है। इसीलिए वह राजदुर्ग के दक्षिण की तरफ की जमीन राजा से माँगती है। लेकिन, जैसे ही वह अरूण के पास से अपनी झोपड़ी की तरफ चलती है उसका हृदय उसे धिक्कारने लगता हैं। वह सोचती है – जिस राज्य की रक्षा के लिए पिताजी ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए वही राज्य मेरे लालच के कारण आज परतन्त्र हो जाएगा। यहाँ मधूलिका एक सच्चे देश भक्त के रूप में दिखाई देती है। वहीं कहानी के अन्त में पुरस्कार के बदले अरूण के पास जाकर खड़ी हो जाती है और अरूण के साथ ही अपने लिए भी प्राणदण्ड माँगती है। प्रसाद जी यहाँ स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम अपने देश की रक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत प्रेम को भी समर्पित कर सकते हैं। राष्ट्र प्रेम हमारे व्यक्तिगत जीवन के सुखों से भी श्रेष्ठ होता है।

११.४ सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

''आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दारिद्रय की ठोकरों नें उसे व्यथित और अधीर कर दिया हैं।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण छायावाद के श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'पुरस्कार' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में प्रसाद जी ने एक युवती के स्वाभिमान को चित्रित करते हुए देश प्रेम को सर्वश्रेष्ठ प्रेम बताया हैं।

प्रसंग : राजा द्वारा खेत ले लिए जाने के बाद मधूलिका धीरे–धीरे गरीब होती गई। बरसात में उसके छत से पानी टपक रहा था। उस समय वह अपनी गरीबी को बढ़ाकर देख रही थी और सोच रही थी कि यदि आज अरूण अपना प्रणय निवेदन लेकर आ जाता तो अवश्य स्वीकार लेती।

स्पष्टीकरण : जिस दिन उत्सव मनाया गया था उसी रात को अरूण मधूलिका के पास आकर अपना प्रेम प्रकट किया था। उस समय मधूलिका ने उसे नकार दिया था। खेती की जमीन चले जाने के बाद वह मजदूरी करने लगी थी। जीवन में अनेक चीजों का अभाव होने लगा था। इसीलिए जब बरसात हो रही है और छत से पानी टपकने लगता है तो मधूलिका को अरूण की याद आती है। वह सोचती है कि यदि उस दिन वह अरूण की बात मान लेती तो आज इतनी गरीबी का सामना उसे नहीं करना पड़ता। यदि आज अरूण वापस आ जाता तो उसकी बात अवश्य मान लेती। अब वह अपनी गरीबी से बाहर निकल जाना चाहती थी। उसकी गरीबी ने उसे व्याकुल कर दिया था।

विशेष :

१. मन के भावों की व्यग्रता प्रकट हुई है।

२. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग।

११.५ बोध प्रश्न

१. पुरस्कार कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिए।

२. मधूलिका का चरित्र–चित्रण कीजिए।

३. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रसाद जी क्या संदेश देना चाहते हैं?

११.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. उत्सव का नियम क्या था?

उत्तर : जिस व्यक्ति की जमीन उत्सव के लिए चुनी जाती उसे उस जमीन के मूल्य का चार गुना मूल्य पुरस्कार के रूप में दिया जाता था। एक दिन के लिए राजा कृषक बनते थे और जमीन का मालिक उन्हें बीज देता। बाद में वह जमीन राजा की जमीन हो जाती थी।

२. मधूलिका किसकी बेटी थी?

उत्तर : मधूलिका कौशल के शहीद वीर सैनिक सिंहमित्र की बेटी थी।

३. अरूण कौन था?

उत्तर : अरूण मगध का राजकुमार था।

४. मधूलिका की झोपड़ी किस पेड़ के नीचे थी?

उत्तर : मधूलिका की झोपड़ी मधूक (महुए) के पेड़ के नीचे थी।

५. मधूलिका अपने राजा से कहाँ की जमीन माँगी थी?

उत्तर : मधूलिका अपने राजा से राजदुर्ग के दक्षिणी नाले के पास की जंगली जमीन माँगी थी।

६. मधूलिका के पिता किस युद्ध में शहीद हुए थे?

उत्तर : मधूलिका के पिता वाराणसी के युद्ध में शहीद हुए थे।
७. अरूण को क्या दंड दिया गया था?
उत्तर : अरूण को प्राण दंड की सजा सुनाई गई थी।

८. मधूलिका नें अपने पुरस्कार में राजा से क्या माँगा?
उत्तर : मधूलिका ने अपने पुरस्कार में राजा से अपने लिए प्राणदंड माँगा।

९. राजा मधूलिका को पुरस्कार में क्या देना चाहते थे?
उत्तर : राजा मधूलिका को पुरस्कार में अपनी निज की पूरी खेती देना चाहते थे।

१०. अरूण के साथ कितने सैनिक थे?
उत्तर : अरूण के साथ एक सौ सैनिक थे।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१२

'हार की जीत'

– सुदर्शन

इकाई की रूपरेखा :

१२.० उद्देश्य
१२.१ प्रस्तावना
१२.२ कहानी का सार
१२.३ कहानी का संदेश
१२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१२.५ बोध प्रश्न
१२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१२.० उद्देश्य

- इस इकाई के अन्तर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार सुदर्शन का जीवन परिचय और उनका साहित्यिक परिचय पढ़ेगे।
- कहानी के सारांश से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा शैली के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

१२.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय : हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक सुदर्शन का जन्म 1895 में सियालकोट (वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ था। इनका असली नाम पंडित बदरीनाथ भट्ट था। प्रारंभ में उर्दू में लेखन कार्य करने वाले सुदर्शन की कहानियाँ यथार्थ को लेकर आदर्श की तरफ उन्मुख दिखाई देती हैं। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हजार दास्ताँ' में उनकी अनेक कहानियाँ छपीं। उन्होंने कुछ समय तक फिल्म – पटकथा लेखन और निर्देशन भी किया। तीर्थ यात्रा, पत्थरों का सौदागर और पृथ्वी वल्लभ आदि सुदर्शन जी की प्रमुख रचनायें हैं। कई फिल्मों के लिए उन्होंने गीत भी लिखे। सन् 1967 में सुदर्शन जी का निधन हो गया।

अपने समय के अन्य कहानीकारों की तरह ही सुदर्शन जी भी हिन्दी और उर्दू में सहजता पूर्वक लेखन कार्य कर रहे थे। अंग्रेजों की दमनकारी नीति और महात्मा गाँधी की अहिंसात्मक नीति को इनकी कहानियों में देखा जा सकता है।

munotes.in

हार की जीत सुदर्शन जी की प्रथम कहानी है। यह कहानी उस समय की प्रख्यात पत्रिका सरस्वती में सन् 1920 में छपी थी।

१२.२ कहानी का सार :

बाबा भारती को अपने घोड़े सुलतान से उतना ही प्यार था जितना एक माँ को अपने बेटे और किसान को अपनी खेती से होता है। सुलतान का रूप रंग और उसकी चाल लोगों का मन मोह लेती थी। क्षेत्र का कुख्यात डाकू खड्ग सिंह सुलतान के इन्हीं गुणों के कारण उस पर रीझ गया। वह एक दिन बाबा भारती के आश्रम पर घोड़े को देखने के बहाने पहुँचा। बाबा नें घोड़े को बड़े गर्व से दौड़ाकर दिखाया। खड्ग सिंह का लालच बढ़ गया। उसने जाते–जाते बाबा से कहा – ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

यह सुनकर बाबाजी की चिन्ता बढ़ गई। वह सदा घोड़े की रखवाली में लगे रहते। महीनों बाद एक दिन सायंकाल बाबा घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहे थे। अचानक एक विकलांग व्यक्ति की आवाज सुनाई दी। वह कह रहा था – ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

बाबा को दया आ गई। उन्होंने उस अपाहिज को घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं घोड़े की लगाम पकड़ कर चलने लगे। अचानक उस अपाहिज नें उनके हाथ से लगाम छीन लिया और घोड़े को दौड़ाकर भागने लगा। बाबा नें ध्यान से देखा – यह तो खड्ग सिंह है। बाबा नें जोर से चिल्ला कर खड्ग सिंह को रूकने के लिए कहा। रूकने पर बाबा नें कहा – मुझे मेरा घोड़ा नहीं चाहिए। लेकिन, तुम इस घटना को किसी से मत कहना क्योंकि, लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन दुखियों पर विश्वास नहीं करेंगे। यह बात खड्ग सिंह के दिल को छू गयी। उसे लगा कि बाबा भारती बहुत ही ईमानदार हैं। उन्हें अपने घोड़े की नहीं बल्कि दीन–दुखियों की चिन्ता है। जिन पर से लोगों का विश्वास यदि उठ जायेगा तो कोई उनकी मदद नहीं करेगा। खड्ग सिंह का मन व्याकुल हो उठा। रात के अन्धकार में वह चुपके से बाबा का घोड़ा उनके अस्तबल में बाँधकर चला गया। जागने पर बाबा नें जब घोड़े को देखा तो बोले – 'अब कोई दीन–दुखियों से मुँह नहीं मोड़ेगा।'

१२.३ कहानी का संदेश

सुदर्शन जी की कहानियों पर महात्मा गाँधी के अहिंसावाद और हृदय परिवर्तन के सिद्धांत का विशेष प्रभाव था। प्रस्तुत कहानी का प्रमुख पात्र खड्ग सिंह घोड़े को चुराने की योजना बनाता है। वह अपाहिज के रूप में आकर घोड़े को प्राप्त भी कर लेता है। लेकिन बाबा भारती की आवाज –''लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन–दुखियों पर विश्वास न करेंगे।'' यह उसके हृदय को व्याकुल कर देती है। उसे बाबा भारती की वह दयालुता दिखाई देती है। अपाहिज के रूप में आकर घोड़ा छीन लेने वाले अपने कार्य को वह अत्यंत तुच्छ समझने लगता है। बाबा भारती के प्रति उसका हृदय उमड़ पड़ता है और वह घोड़े को वापस उनके आश्रम में बाँध कर चला जाता है।

यह निश्चित है कि बाबा भारती यदि घोड़े को प्राप्त करने के लिए खड्ग सिंह के साथ बल का प्रयोग करते तो शायद इतनी सरलता पूर्वक वह घोड़ा वापस नहीं करता। लेकिन, बाबा की भलमनसाहत के समक्ष उसका हृदय पिघल जाता है। यह घटना इस बात को सिद्ध करती है कि जो काम दण्ड से नहीं हो सकता वहाँ प्रेम और अहिंसा का प्रयोग ही सर्वोचित होता है। सुदर्शन जी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से अपनी इसी विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं।

१२.४ सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

''उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग दीन–दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन द्वारा लिखित 'हार की जीत' शीर्षक कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक नें अहिंसा के माध्यम से हृदय परिवर्तन को श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

प्रसंग : बाबा भारती के घोड़े को खड्ग सिंह एक अपाहिज के रूप में आकर छीन लेता है। बाबा उससे कहते हैं कि इस घटना को किसी को मत बताना। उस समय बाबा के प्रति खड्ग सिंह के मन में उठने वाले विचारों का वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या

खड्गसिंह की नजर पिछले कई महीनों से बाबा भारती के घोड़े पर लगी थी। इसके लिए वह अपाहिज का रूप धारण कर छल के माध्यम से बाबा का घोड़ा छीन लेता है। बाबा ने जब उससे कहा कि यदि इस घटना को लोग जान जायेगें तो कोई दीन–दुखियों, अपाहिजों पर विश्वास नहीं करेगा। यह सुनकर उसका हृदय पिघल गया। उसे लगा कि एक अपाहिज का वेष धारण कर मैनें उस अपाहिज वर्ग को कलंकित किया है जिसका जीवन परोपकारियों की भावना पर ही आधारित होता है। ऐसे अपाहिजों से जब लोगों का विश्वास उठ जाएगा तब कोई सचमुच के अपाहिजों की भी मदद कोई नहीं करेगा। बाबा को ऐसे सचमुच के अपाहिजों की ही चिन्ता है। उन्हें अब अपने घोड़े का मोह नहीं। जो घोड़ा उनके लिए कभी सर्वाधिक प्रिय था अब उससे अधिक प्रिय उनके लिए लाचार और अपाहिज लोग बन चुके हैं।

बाबा भारती की यह उदारता देख कर खड्गसिंह को लगा कि इतनी दयालुता तो केवल देवताओं में ही देखी जाती है। बाबा की इसी उदारता ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया और वह चुपके से बाबा का घोड़ा उनके आश्रम में बाँध कर चला गया।

विशेष

1. इन पंक्तियों में भावनात्मक परिवर्तन दिखाया गया है।
2. उदारता को दैवीय गुण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. हिंसा पर अहिंसा की विजय दिखाई गई है।

१२.५ बोध प्रश्न

१. बाबा भारती से खड्ग सिंह ने घोड़ा किस प्रकार छीन लिया?
२. सुलतान की प्रमुख विशेषाएँ बताइये।
३. खड्ग सिंह ने बाबा का घोड़ा कब और क्यों वापस कर दिया?
४. खड्ग सिंह का हृदय परिवर्तन कब और क्यों हो गया।

१२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न /लघुत्तरीय प्रश्न

१. बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था?
उत्तर : बाबा भारती के घोड़े का नाम सुलतान था।

२. बाबा भारती की चिन्ता क्यों बढ़ गई थी?
उत्तर : खड्ग सिंह द्वारा घोड़े को लेकर चले जाने की धमकी सुनकर बाबा भारती की चिन्ता बढ़ गई थी।

३. अपाहिज के रूप में कौन आया था?
उत्तर : अपाहिज के रूप में डाकू खड्ग सिंह आया था।

४. बाबा ने खड्ग सिंह से घोड़ा चुराने की बात किसी से न बताने के लिए क्यों कहा?
उत्तर : बाबा ने खड्ग सिंह से घोड़ा चुराने की बात किसी से न बताने के लिए कहा क्योंकि लोगों का विश्वास दीन–दुखियों, अपाहिजों से उठ जाएगा।

५. खड्ग सिंह द्वारा घोड़ा वापस कर देने पर बाबा खड्ग सिंह नें क्या कहा?
उत्तर : घोड़ा वापस मिल जाने पर बाबा ने कहा कि अब कोई दीन–दुखियों से मुँह नहीं मोड़ेगा।

❖❖❖❖

इकाई -१३

'चीफ़ की दावत'

– भीष्म साहनी

इकाई की रूपरेखा :

१३.० इकाई का उद्देश्य
१३.१ प्रस्तावना
१३.२ कहानी का सारांश
१३.३ कहानी का संदेश
१३.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१३.४ बोध प्रश्न
१३.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१३.० उद्देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार भीष्म साहनी के जीवन परिचय और उनके साहित्यिक योगदान से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी का सार समझ सकेंगे।
- कहानी के उद्देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचित हो सकेंगे।

१३.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त सन 1915 ई. को रावलपिण्डी (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता श्री हरबंस लाल साहनी और माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी दोनो समाजसेवी थे। परिवार का वातावरण साहित्यिक होने के कारण बचपन से ही भीष्म साहनी का झुकाव साहित्य की ओर था। हिन्दी और संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने अपने घर पर ही प्राप्त की। बाद में लाहौर से अंग्रेजी में एम.ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी के मर्मज्ञ साहनी जी उर्दू, फारसी और रूसी भाषाओं के भी अच्छे जानकार थे। विभाजन के बाद ये अपने भाई बलराज साहनी और पत्नी शीला साहनी के साथ मिलकर कुछ फिल्मों में भी कार्य किए। भीष्म जी अपने अंतिम दिनों तक लेखन कार्य करते रहे। इन्होंने लगभग एक सौ पचास कहानियों की रचना की जो भाग्यरेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, वाङ्चू, शोभा यात्रा, निशाचर, पाली और डायन आदि कहानी संग्रहों में संकलित हैं।

munotes.in

इनके प्रमुख उपन्यासों में झरोखा, कड़ियाँ, तमस, बसंती, मय्यादास की माड़ी तथा कुंतो और नीलू नीलिमा निलोफर का नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

हानूश, कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी, मुआवजे और रंग दे बसंती चोला जैसे प्रसिद्ध नाटकों के साथ–साथ भीष्म साहनी ने बाल साहित्य, निबंध और जीवनी जैसी विधाओं में भी लेखन कार्य किया।

१३.२ कहानी का सार

मिस्टर शामनाथ ने अपने घर पर अपने दफ्तर के चीफ़ को दावत दिया था। जिस दिन वह उनके घर आये, यह कहानी उसी दिन की है।

शामनाथ अपनी पत्नी के साथ साफ़–सफ़ाई और सजावट कर रहे हैं। घर की सभी पुरानी चीजें छिपाते समय उनकी नज़र माँ के ऊपर जाती है। समस्या यह है कि बूढ़ी माँ को कहाँ छिपाया जाये। शामनाथ की पत्नी ने कहा कि माँ को पड़ोस की बुढ़िया के पास भेज देते है। वहीं रात भर पड़ी रहेंगी। लेकिन, शामनाथ को डर था कि यदि माँ उस पड़ोसी के घर चली जाएँगी तो वह बुढ़िया भी इनके घर आने लगेगी। जो उन्हें पसंद नहीं था। फिर माँ को खिला–पिला कर कमरे में बंद कर देने की उपाय भी सोची गई लेकिन ऐसा करने में यह डर था कि यदि माँ सो गईं और खर्राटें भरने लगीं तो सब काम बिगड़ जाएगा। अन्त में यह निश्चित किया गया कि जब तक अतिथि लोग बैठक में रहेंगे तब तक माँ बरामदे में बैठेंगी और जब वे लोग बरामदे में आयेंगे तो माँ गुसलखाने (बाथरूम) के रास्ते अन्दर चली जायेंगी। माँ को उस दिन खाना नहीं मिला क्योंकि उस दिन मांस–मछली बन रहा था और माँ शाकाहारी हैं। इसलिए उन्हें कुछ अलग से खाने की व्यवस्था नहीं की गई। इसके बाद भी माँ प्रसन्न थीं और माला फेरते हुए अपने बेटे की दावत अच्छी तरह पूरी हो जाने के लिए भगवान से प्रार्थना कर रही थीं।

शामनाथ ने देखा कि माँ के कपड़े पुराने लगे। उन्हें इस बात का डर था कि यदि चीफ़ की नजर माँ पर पड़ गई तो उनकी बेइज्जती हो जाएगी। इसलिए उन्होंने माँ से नए कपड़े और गहने पहनने के लिए कहा। माँ ने कहा कि गहने बेचकर वो पैसा तो तुम्हारी पढ़ाई में लग गया बेटे। यह बात शामनाथ को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने उसे डाँटते हुए जितना पढ़ाई में लगा है उससे दो गुना ले लेने की बात कहने लगे। बेटे की इस प्रकार की बातें सुनकर माँ स्वयं को धिक्कारने लगीं।

साढ़े पाँच बजते–बजते घर के सभी लोग सजधज कर तैयार हो गए। माँ को हिदायत दे दी गई कि यदि चीफ कुछ पूछें तो उत्तर अवश्य दे देना। माँ अनपढ़ थी इसलिए वह उत्तर देने की बात से डरने लगीं। जैसे–जैसे अतिथियों के आने का समय नज़दीक आता, माँ के दिल की धड़कन बढ़ने लगी। वह डरी हुई थी कि चीफ यदि कुछ पूछ लिया तो उसे क्या उत्तर देगी।

पार्टी देर रात तक चलती रही। अपने–अपने गिलास खाली कर लोग खाने के लिए बरामदे में जाने लगे। शामनाथ रास्ता दिखाते आगे–आगे चल रहे थे। उन्होंने देखा कि माँ बरामदे में कुर्सी पर पैर ऊपर किए हुए बैठी–बैठी सो गई हैं। जोर–जोर से उसके खर्राटे आ रहे हैं और सिर कभी इधर तो कभी उधर झूल रहा है। यह देखते ही शामनाथ आग बबूला हो उठे और चीफ के साथ चल रहे

भारतीय अधिकारी एवं उनकी पत्नियाँ हँसने लगीं। हँसी की आवाज सुनकर माँ हड़बड़ाकर उठ बैठी। चीफ को माँ पर दया आ गई। उसने माँ से 'हाऊ डू यू डू' कह कर हाथ मिलाने लगा। घबरा कर माँ ने अपना बायाँ हाथ ही उसके हाथ में रख दिया। यह देखकर शामनाथ का क्रोध बढ़ गया। चीफ के कहने पर माँ ने एक लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ सुनाई। जिसे सुनकर देसी अफसरों की स्त्रियों ने तालियाँ बजाई। अंग्रेज चीफ उस बूढ़ी माँ की सादगी देखकर बहुत खुश हुआ।

चीफ़ द्वारा पंजाब के गाँवों की दस्तकारी के संबंध में पूछने पर शामनाथ की माँ ने बहुत पहले की बनाई हुई एक फुलकारी लाकर दिखाई। चीफ को बड़े ही प्यार से फुलकारी का निरीक्षण करते देखकर शामनाथ ने कहा कि वह उन्हें नई फुलकारी माँ से बनवा कर दे देंगे। माँ चुप रहीं। फिर डरते–डरते धीरे से बोलीं – अब मेरी नजर कहाँ है, बेटा। बूढ़ी आँखे क्या देखेंगी। साहब के आगे बढ़ते ही माँ सबकी नजरें बचाती हुई अपने कमरे में चली गईं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बार–बार भगवान से अपने बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना करने लगीं।

मेहमानों के चले जाने और आधी रात बीत जाने के बाद भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी। अचानक उन्हें शामलाल ने आवाज लगाई। माँ अपने बेटे की आवाज सुनते ही काँप उठीं। उन्हें लगा कि बेटे ने अब भी क्षमा नहीं किया है। दरवाजा खोलने पर शामलाल अंदर आये और माँ को गले लगा लिया। फिर बोले – 'ओ, अम्मा तुमने तो रंग ला दिया। साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ।' इसी समय माँ ने कहा कि 'मुझे हरिद्वार भेज दो।' माँ की बात सुनते ही शामनाथ की प्रसन्नता समाप्त हो गई। उसने माँ से कहा – कि तुम हरिद्वार चली जाओगी तो दुनिया कहेगी कि बेटा माँ को पास नहीं रख सका। साथ ही तुम्हारे जाने के बाद साहब को देने के लिए फुलकारी कौन बनाएगा। साहब फुलकारी पाकर खुश होगा तो मेरी तरक्की हो जाएगी।

बेटे की तरक्की की बात सुनते ही माँ का चेहरा प्रसन्न हो उठा। वह फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो गई और मन ही मन बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने लगी।

१३.३ कहानी का संदेश

'चीफ की दावत' साहनी जी की चर्चित कहानी है। जिसमें वर्तमान के सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता एवं भ्रष्ट आचरण की तरफ संकेत किया गया है। आजादी के बाद एक तरफ जहाँ शिक्षा एवं अन्य वैज्ञानिक संसाधन मानव जीवन में विकास की लहर लेकर आये वहीं अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित वर्ग दिखावेपन के मार्ग पर लगातार अग्रसर होता गया। भारतीय मूल्यों एवं पारिवारिक संस्कारों को तो वह खुरच–खुरच कर मिटा देना चाहता था। उसे न तो अपनी भाषा पसंद थी और न ही अपना संस्कार। भारतीयता का संपूर्ण त्याग ही इनके लिए आधुनिकता की पहचान बनती जा रही थी। ऐसे में भारतीय संस्कृति के संवाहक माता–पिता एवं परिवार के अन्य वृद्ध जनों को साथ रखना इनके लिए बोझ बन गया था। चीफ की दावत कहानी में इसी बोझ की प्रतीक है शामनाथ की माँ। जब शामनाथ द्वारा अपने चीफ को दावत दी जाती है और तैयारियों के क्रम में पुरानी वस्तुएँ छिपा दी जाती हैं, तब उनके सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है – 'माँ का क्या होगा?' भारतीय संस्कृति जिस माँ को सर्वथा पूजनीय मानती है वही माँ शामनाथ के लिए व्यर्थ की वस्तु बन गई है। जिसे वे अपने अतिथियों के सामने जाने देना

नहीं चाहते। माँ को छिपाने के लिए जो उपाय सोचे जाते हैं उनमें कुछ न कुछ शंकायें उत्पन्न होती हैं और शामनाथ ऐसी कोई कमी नहीं छोड़ना चाहते जिससे चीफ का सामना माँ से हो जाये। सच्चाई तो यह है कि शामनाथ को न केवल माँ से बल्कि संपूर्ण वृद्ध वर्ग से ही घृणा है। इसीलिए माँ को उसकी सहेली के घर जाने देने से रोकते हुए कहते हैं–''मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना–जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था।'' इतना ही नहीं, माँ के प्रति उनके मन की दुर्भावना वहाँ भी दिखाई देती है जब अपनी पत्नी को डॉटते हुए कहते हैं–''अच्छी भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी।'' इसके बाद शामनाथ की पत्नी द्वारा जो उत्तर मिलता है वह तो माँ–बेटे और बहू के रिश्तों को तार–तार कर देता है। बहू कहती है–''तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यो बुरी बनूँ, तुम जानो और वह जानें।'' यहाँ लेखक उन अंग्रेजीदाँ लोगो की सोच पर करारी चोट करता है, जहाँ माँ को व्यर्थ समझकर कहीं छिपा देने की उपाय की जा रही है। उनके लिए माँ अनपढ़ है, बद्सूरत हैं और उसे अंग्रेजी नहीं आती इसलिए अंग्रेज चीफ के नाराज हो जाने की संभावना से शामनाथ डरे हुए हैं।

इस कहानी में जो प्रसंग निर्मित किया गया है वह समाज की अनेकानेक सच्चाइयों से हमें अवगत कराता है। कहानी का चीफ अमेरिकी है। शामनाथ उसी के दफ्तर में एक पदाधिकारी हैं। उनके द्वारा चीफ को दावत देने का उद्देश्य है–नौकरी में पदोन्नति पाना। इसी उद्देश्य से वह अपनी बूढ़ी माँ से फुलकारी बनवाने की बात भी कहते हैं। इस संबंध में माँ पूछती हैं तो कहते हैं–'कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश हो गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेगी, तो मैं देखने आऊँगा की कैसे बनती है। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ।'' बड़ा अफसर बनने की यह कामना रिश्वतखोरी की प्रवृत्ति की तरफ संकेत करती है। भीष्म साहनी यहाँ यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि शामनाथ धीरे–धीरे 'चीफ' से नजदीकियाँ स्थापित कर उसका लाभ उठाना चाहते हैं। इसीलिए उनके द्वारा वह हर उपाय किया जाता है जिससे चीफ खुश हो सके। यहाँ तक कि जिस माँ को शामनाथ छिपा देना चाहते हैं उसी माँ का गीत सुनकर और उसकी सादगी देखकर जब 'चीफ' खुश हो जाता तो उनके विचार बदल जाते हैं और कहते हैं 'ओ अम्मा! तुमने तो आज रंग ला दिया! साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ।'' शामनाथ के विचारों की स्वार्थपरता की हद तो तब हो जाती है जब माँ हरिद्वार चले जाने की बात कहती है तो उसे डाँटते हुए कहते हैं–''माँ, तुम मुझे धोखा देकर यूँ चली जाओगी? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी।'' माँ के प्रति शामनाथ के बदलते ये विचार पूर्णतः स्वार्थ पर आधारित हैं। यहाँ लेखक की सूक्ष्म दृष्टि नैतिक मूल्यहीनता के उस सूत्र को पकड़ती है जहाँ माँ केवल स्वार्थसाधना का एक माध्यम मात्र रह गई है। शामनाथ की माँ उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने बच्चों की सफलता में ही अपनी सफलता देखती थी। उसने अपने गहने आदि बेचकर बच्चों को पढ़ाया लेकिन इस नई पीढ़ी ने पुरानी पीढ़ी के सपनों को ध्वस्त कर दिया। उसके मन–मस्तिष्क पर बड़े हो जाने का दंभ इस प्रकार जम गया है कि वह अपने पुराने दिनों की और पिछली पीढ़ी की गरीबी को सुनना भी नहीं चाहती।

इस कहानी में माँ के रूप में भीष्म साहनी ने एक ऐसे पात्र की सर्जना की है जो त्याग की प्रतिमूर्ति है। कहानी के आरंभ में ही जब शामनाथ माँ को व्यर्थ की वस्तु समझ कर कहीं छिपा देना चाहते हैं उसी समय माँ भगवान की प्रार्थना करते हुए 'सारा काम सुभीते से चल जाये' की बात सोच रही हैं। शामनाथ द्वारा

माँ को जो आदेश दिये जाते हैं उसे माँ बिना किसी विरोध के मान लेती है। अपने बेटे और बहू के सुख के लिए ही तो वह हरिद्वार जाना चाहती है। एक माँ के हृदय का यह टूटना उन अनेकानेक माताओं के हृदय का टूटना है जो अपनी ही संतानों द्वारा बोझ समझी जाने लगी हैं।

साहनी जी एक संवेदनशील कहानीकार थे। उनके द्वारा माँ की ममता को जिस ढंग से यहाँ चित्रित किया गया है वह एक दुर्लभ उदाहरण है। बेटे और बहू द्वारा अपमानित होने के बाद भी शामनाथ की माँ को जैसे ही पता चलता है कि फुलकारी बनाना 'बेटे की पदोन्नति को सरल बनाना है, वैसे ही वह हामी भर देती हैं। इतना ही नहीं बेटे की पदोन्नति की बात सुनकर माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे–धीरे उनका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, हल्की–हल्की चमक आने लगी।'' वास्तव में इस घटना के माध्यम से साहनी जी यह सिद्ध करना चाहते हैं कि 'माता कुमाता न भवति, पुत्रः कुपुत्रो जायते।'

कहानी की कथावस्तु जितनी संदेशप्रद है, उसकी भाषा उतनी ही सरल और बोधगम्य। हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग इसकी बोधगम्यता को बढ़ा देता है। शब्द चयन सर्वथा पात्रों के अनुकूल है। शामनाथ की माँ द्वारा अंग्रेजी बोलने की कोशिश, उसकी गीत और कुर्सी पर बैठे–बैठे सो जाने का दृश्य आदि सभी मिलकर कहानी को अत्यधिक रोचक बना देते हैं। कहानी की कथावस्तु उस भारतीय परिवेश से सम्बद्ध है जहाँ माता–पिता अपने बच्चों के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर देने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं और उन्हीं की सफलता एवं सुख में स्वयं की सफलता देखते हैं। यह कहानी उस सांस्कृतिक ह्रास का यथार्थ अंकन करती है जहाँ अंग्रेजीदाँ युवा पीढ़ी अपनी पदोन्नति के लिए बड़े अधिकारियों की चाटुकारिता करती है लेकिन अपनी पुरानी पीढ़ी के प्रति अमानवीय व्यवहार करने में उसे कोई झिझक नहीं होती। करूणा मिश्रित व्यंग्य इस कहानी की धार को तीव्रता प्रदान करती है।

१३.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''तरक्की यूँ ही हो जाएगी? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वरना, उसकी खिदमत करने वाले कम थोड़े हैं?''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'चीफ़ की दावत' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में समाज में बढ़ती स्वार्थपरता और माँ की ममता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

प्रसंग : अतिथियों के चले जाने के बाद शामनाथ माँ के कमरे में जाते हैं और साहब को देने के लिए फुलकारी बनाने की बात कहते हैं। माँ अपनी आँख से दिखाई न देने की बात कहती हैं लेकिन, शामनाथ के अनुसार साहब को खुश करने पर ही तरक्की हो सकेगी।

व्याख्या : शामनाथ द्वारा चीफ को खुश करने के लिए ही दावत का आयोजन किया गया था। इसलिए वह हर तरह से ऐसा कार्य करना चाहते थे जिससे अंग्रेज साहब खुश हो सके। साहब की रूचि जब फुलकारी में दिखती हैं तो उन्हें लगता है कि अच्छी फुलकारी देने पर साहब खुश हो जाएँगे और उनकी तरक्की हो जाएगी।

शामनाथ जब माँ से फुलकारी बनाने की बात कहते हैं तो वह असमर्थता व्यक्त करती हैं। जिससे उन्हें क्रोध आता है। फिर अपनी तरक्की की बात साहब के खुश होने पर निर्भर बताते हैं तो माँ का चेहरा खिल उठता है। शामनाथ के अनुसार तरक्की उसी की होगी जो साहब को खुश रखेगा और उस साहब को खुश रखने वालों की संख्या बहुत है। शामनाथ के प्रति माँ की ममता उमड़ पड़ती है और वह हर तरह से अपने बेटे का विकास देखना चाहती है। इसीलिए आँख से कम दिखाई देने के बाद भी वह फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है।

विशेष

१. प्रश्न वाचक चिन्हों का प्रयोग।

२. खिदमत और तरक्की जैसे उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

१३.५ बोध प्रश्न

१. 'चीफ की दावत' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

२. शामनाथ अपनी माँ को छिपाना क्यों चाहते थे? माँ ने आयोजन में किस प्रकार रंग भर दिया?

३. शामनाथ के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

१३.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. शामनाथ अपनी माँ को सहेली के यहाँ क्यों नहीं जाने दिया?

उत्तर : शामनाथ की माँ यदि अपनी सहेली के घर जायेंगी तो वह भी इनके घर आने लगेगी। इसलिए नहीं जाने दिया।

२. खाने की व्यवस्था कहाँ की गई थी?

उत्तर : खाने की व्यवस्था बरामदे में की गई थीं।

३. माँ के गहने क्यों बिक गए थे?

उत्तर : माँ के गहने बेटे शामनाथ की पढ़ाई के लिए बिक गए थे।

४. साहब को कौन सी चीज अधिक पसंद आई?

उत्तर : साहब को फुलकारी अधिक पसंद आई।

५. माँ कहाँ जाना चाहती थी?

उत्तर : माँ हरिद्वार जाना चाहती थी।

६. साहब को कहाँ की दस्तकारी देखनी थी?

उत्तर : साहब को पंजाब के गाँवों की दस्तकारी देखनी थी।

❖❖❖❖

इकाई -१४

'पाजेब'

– जैनेंन्द्र कुमार

इकाई की रूपरेखा :

१४.० इकाई का उद्‌देश्य
१४.१ प्रस्तावना
१४.२ कहानी का सारांश
१४.३ कहानी का संदेश
१४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१४.५ बोध प्रश्न
१४.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१४.० इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत श्रेष्ठ कथाकार जैनेंन्द्र के जीवन परिचय और उनकी साहित्यिक रचनाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- कहानी का सार समझ सकेंगे।
- कहानी के उद्‌देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली एवं कहानी में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।

१४.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक जैनेंन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर में हुई थी और उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पूरी हुई। सन 1921 में कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते हुए ही उन्होंने लेखन कार्य प्रारंभ किया। 24 दिसंबर, 1988 को हिन्दी साहित्य का यह चमकता हुआ नक्षत्र सदा–सदा के लिए अस्त हो गया।

रचनायें : उपन्यास : परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, विवर्त, सुखदा, व्यतीत और अनाम स्वामी आदि।

कहानी संग्रह : फाँसी, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, पाजेब, जान्हवी, अभागे लोग, दो सहेलियाँ, महामहिम आदि।

निबंध संग्रह : साहित्य का श्रेय और प्रेम, जड़ की बात, राष्ट्र और राज्य, कहानी अनुभव और शिल्प, साहित्य और संस्कृति आदि।

कहानीकार जैनेंद्र ने अपनी कहानियों में अपने चिंतन को ही सर्जनात्मक रूप प्रदान किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में मनुष्य के अवचेतन में चलने वाले विचारों का विश्लेषण मुख्य रूप से किया है। उनके पात्रों की सहजता और सरलता पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं।

१४.२ कहानी का सार

पाजेब बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। आत्मकथात्मक शैली के माध्यम से लेखक ने एक चार वर्षीय बालिका के मन का बड़ा ही सुन्दर विश्लेषण किया है। साथ ही आभूषणों के प्रति नारी वर्ग के प्राकृतिक लगाव का भी यहाँ यथार्थ चित्रण किया गया है।

कहानी का प्रारंभ एक छोटी सी घटना से होता है। बाजार में एक ऐसी पायल आई है जो जिस पैर में पड़ती है उसी के अनुकूल हो जाती है। लेखक की बेटी मुन्नी भी उस पायल को पहनने की जिद्द करती है। लेखक द्वारा पायल खरीदने के लिए टाल–मटोल किया जाता है लेकिन, अगले रविवार को बुआ मुन्नी के लिए वह पायल खरीद कर लाती हैं। मुन्नी उसे पहन कर सबको दिखा रही थी। उसका भाई आशुतोष कुछ देर तो बहन को लिए घूमता रहा फिर अपने लिए बाइसिकिल खरीदने की हठ करने लगा। बुआ ने उससे कहा – छी–छी, तू कोई लड़की है, जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं। और लड़कियाँ रोती हैं। इस प्रकार उसे समझाते हुए बुआ ने उसके जन्म दिन पर नई बाइसिकिल लाने का वादा किया। शाम होते–होते उसी पायल जैसा एक पायल अपने लिए बनवाने की इच्छा लेखक की श्रीमती जी की भी हो गई। कुछ रात होने तक मुन्नी की पायल कहीं गायब हो गई। पूरा घर छान देने के बाद भी वह पायल नहीं मिली। उसे ढूँढ़ते हुए पति–पत्नी में पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर नोक–झोंक भी हुई। श्रीमती जी ने घर के नौकर बंसी के ऊपर पायल चोरी की शंका प्रकट कर दी। लेकिन, लेखक को विश्वास है कि बंसी चोरी नहीं करेगा। लेखक को अपने बेटे आशुतोष पर शंका हुई जिसका विरोध उनकी पत्नी द्वारा किया गया। आशुतोष को पतंग उड़ाने का शौक है। वह आज ही एक नयी पतंग लाया है। यह सुनकर लेखक की शंका उसके प्रति और बढ़ गई।

अगले दिन लेखक ने आशुतोष को बुलाकर पूछा तो वह पाजेब की जानकारी होने से मना करने लगा। इस समय लेखक के मन में यह विचार आया कि ऐसे समय में बच्चों से प्रेमपूर्वक बातें करनी चाहिए। इसलिए वह श्रीमती जी से कहते हैं कि – 'मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती है।'

१४.३ कहानी का संदेश

जैनेद्र कुमार हिन्दी साहित्य के एक ऐसे साहित्यकार हैं जो वर्तमान को भविष्य के संदर्भ में रखकर देखते हैं। बालपन मानव का अतीत नहीं बल्कि उसकी आपबीती होती है। बच्चा अपने माँ–बाप के समक्ष कुम्भकार की उस मिट्टी की तरह होता है जिसे माँ–बाप जैसा चाहें वैसा निर्मित कर सकते हैं। किसी भी बच्चे के मानसिक विकास और व्यवहार में उसकी पारिवारिक भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। इस कहानी में पाजेब के गायब हो जाने पर पिता–पुत्र के बीच शंका और विद्रोही की चिनगारी छिपी हुई है। वह चिनगारी भविष्य में बेटे को विद्रोही बनाने में अहम भूमिका अदा करेगी। लेखक ने पिता–पुत्र के इन भावों को बड़ी बारीकी से समझ कर उसे इस कहानी में अभिव्यक्त किया है। स्थिति यह है कि पिता को अपने नौकर पर अपने बेटे से अधिक विश्वास है। यहाँ लेखक एक पिता से अधिक एक चिन्तक के रूप में दिखाई देता है। समस्या सामान्य है लेकिन, भिन्न इस मामले में है कि जिस नौकर पर पत्नी शंका करती हैं उसी नौकर पर लेखक को दृढ़ विश्वास है। प्रस्तुत कहानी में जीवन के सम्बन्ध में एक अन्वेषण का उपक्रम दिखाई देता है। इस कहानी के पिता–पुत्र जैसे पात्र हमारे आस–पास भी देखे जा सकते हैं।

आत्मकथात्मक शैली में रचित इस कहानी की भाषा अत्यंत सरल और बोधगम्य है। समस्या का न सुलझना पाठकों में एक कौतूहल उत्पन्न करता है। संवादों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।

१४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"वह गुम हो गया। जैसे नाराज हो। उसने सिर हिलाया कि उसनें नहीं ली। पर मुँह नहीं खोला।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेंन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'पाजेब' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक द्वारा बालमनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण किया गया है।

स्पष्टीकरण : लेखक ने जब बेटे से कहा कि मुन्नी की एक पाजेब नहीं मिल रही है। तुम्हें पता हो तो बताओ। पिता जी की बात सुनकर आशुतोष एकदम चुप हो गया। वह एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। उसे लग रहा था कि पिता जी उसके ऊपर चोरी का आरोप लगा रहे हैं। उसका क्रोध इतना बढ गया था कि वह मुँह से एक भी शब्द नहीं बोल रहा था। अपनी सफाई में भी वह एक शब्द नहीं बोल सका। इधर उसका न बोलना लेखक के मन में एक शंका पैदा करता है। इस रूप में पिता–पुत्र दोनों के मन में शंका एवं क्रोध की भावना बढ़ जाती है लेकिन लेखक परिस्थितियों को समझते हुए क्रोध के बदले प्यार से काम लेने का निर्णय लेता है।

विशेष

१. यहाँ किशोर मन के क्रोध का चित्रण किया गया है।
२. मनोवैज्ञानिक भावों का चित्रण किया गया है।
३. वाक्य बिल्कुल छोटे एवं सरल हैं।

१४.५ बोध प्रश्न

१. एक पिता के रूप में लेखक के व्यवहार की समीक्षा कीजिए।
२. प्रस्तुत कहानी के आधार पर महिलाओं की आभूषण प्रियता पर प्रकाश डालिए।
३. 'पाजेब' कहानी में बालमनोविज्ञान का चित्रण किस प्रकार किया गया है।

१४.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. बुआ ने आशुतोष को लड़का और लड़की में क्या भेद बताया?
उत्तर : बुआ ने आशुतोष को बताया कि लड़कियाँ जिद्द करती हैं और सामान न मिलने पर रोती भी हैं। लड़के ऐसा नहीं करते हैं।

२. लेखक ने पाजेब की क्या क्या विशेषताएँ बताई है?
उत्तर : लेखक ने पाजेब के संबंध में बताया कि जिसके पैर में जाती है उसी के अनुकूल बन जाती है।

३. पाजेब किसके द्वारा खरीदी गई थी?
उत्तर : पाजेब बुआ द्वारा खरीदी गई थी।

४. पाजेब न मिलने पर लेखक की पत्नी ने किस पर शंका प्रकट की?
उत्तर : पाजेब न मिलने पर लेखक की पत्नी ने नौकर बंसी पर शंका प्रकट की?

५. बुआ किस दिन पाजेब लेकर आई थीं?
उत्तर : बुआ रविवार को पाजेब लेकर आई थीं।

६. पाजेब के लिए जिद्द करने वाली लड़की का नाम और उम्र बताइए।
उत्तर : पाजेब के लिए जिद्द करने वाली लड़की मुन्नी चार वर्ष की थी।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१५

'सदाचार का तावीज'

– हरिशंकर परसाई

इकाई की रूपरेखा :

१५.० इकाई का उद्‌देश्य
१५.१ प्रस्तावना
१५.२ कहानी का सारांश
१५.३ कहानी का संदेश
१५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१५.५ बोध प्रश्न
१५.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१५.० इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के जीवन परिचय और उनकी साहित्यिक उपलब्धियों से परिचित होंगे।
- व्यंग्य का सार समझ सकेंगे।
- प्रस्तुत व्यंग्य के उद्‌देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- व्यंग्य की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ समझ सकेंगे।

१५.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन 1924 ई. में मध्यप्रदेश में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में पूरी करने के बाद उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की पढ़ाई पूरी की। कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य करने के बाद सन 1947 से स्वतंत्रता पूर्वक लेखन कार्य में लग गए। उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली जो हिन्दी की पत्रिकाओं में एक प्रमुख पत्रिका मानी जाती है। हँसते हैं–रोते है, जैसे उनके दिन फिरे, और भोलाराम का जीव परसाई जी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। उपन्यासों में तट की खोज, ज्वाला और जाल, रानी नागफनी की कहानी प्रमुख हैं। निबंध संग्रहों में भूत के पीछे, सदाचार का तावीज़, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, आदि उल्लेखनीय हैं। 10 अगस्त, 1995 को परसाई जी का निधन हो गया।

परसाई जी की रचनाओं में समाज के सभी आडंबरों पर करारी चोट की गई है। भारतीय समाज के पाखंडों की बखिया उधेड़ने वाले परसाई जी के व्यंग्य समाज में परिवर्तन की चेतना पैदा करते हैं। परसाई जी के व्यंग्य व्यक्तिगत राग–द्वेष से ऊपर उठकर समाज की विसंगतियों को उजागर करते हैं और आवश्यकतानुसार हास्य–विनोद का दृश्य भी उपस्थित करते चलते हैं। परसाई जी का सम्पूर्ण लेखन उद्‌देश्यपूर्ण और मानव को सतर्क करने का प्रयास है।

१५.२ व्यंग्य का सार

इस व्यंग्य में लेखक द्वारा समाज में फैलते हुए भ्रष्टाचार को समाप्त करने की उपायों पर व्यंग्य किया गया है। एक राजा को अपने राज्य में फैलते भ्रष्टाचार की बात सुनकर चिन्ता हुई। उन्होंने अपने दरबारियों को बुलाकर भ्रष्टाचार का पता लगाने की बात कही। दरबारियों ने भ्रष्टाचार जैसी बारीक चीज देखने में असमर्थता व्यक्त की और उसके लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता बताई। राजा ने पाँच विशेषज्ञों को वह काम दे दिया। दो महीने बाद विशेषज्ञो ने भ्रष्टाचार के मिल जाने का दावा करते हुए कहा कि – 'हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।' उनके अनुसार भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी हो गया है। यहाँ तक कि आपके सिंहासन में भी विद्यमान है। इस सिंहासन की रंगाई करने के लिए खर्च की जो बिल लगी है वह दोगुने दाम की है। साथ ही विशेषज्ञों ने ठेका पर काम कराने की परम्परा बन्द करने की सलाह दी। इस प्रकार विशेषज्ञ भ्रष्टाचार मिटाने की अपनी पूरी योजना राजा के पास रखकर चले गए।

उस योजना को पढ़कर राजा बीमार हो गए। राजा को परेशान देखकर दरबारियों ने उस योजना को आग के हवाले करने की बात कही। उनके अनुसार ऐसी योजना नहीं चाहिए जो राजा की परेशानी बढ़ा दे। उन्हें बिना उलट–फेर किए भ्रष्टाचार मिटाने वाली तरकीब की आवश्यकता थी। इसी बीच एक दरबारी ने तावीज़ बनाने वाले एक साधु को लाया। तावीज़ के संबंध में साधु ने बताया कि – इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलने लगते हैं तब इस तावीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।

तावीज़ की विशेषता सुनकर राजा बहुत खुश हुए। एक मंत्री की सलाह पर राजा द्वारा उसी साधु को पूरी प्रजा के लिए तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया और पाँच करोड रूपये उसके लिए कारखाना खोलने के लिए पेशगी में दिए गए। फिर प्रत्येक कर्मचारी की भुजा पर यह सदाचार की तावीज़ बाँध दिया गया।

राजा इस कार्य से बहुत खुश थे। वह वेश बदल कर एक कर्मचारी के पास महीने की दो तारीख को गए। उसका वेतन एक दिन पहले ही मिला था। राजा ने अपना काम कराने के बहाने उसे पाँच रूपये देना चाहा। उस कर्मचारी ने ईमानदारी दिखाते हुए रिश्वत लेने से मना कर दिया। राजा को खुशी हुई कि तावीज़ ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है।

कुछ दिन बाद पुनः वेश बदलकर राजा उसी कर्मचारी के पास महीने की इकतीस तारीख को गए और काम के बहाने उसे पाँच रूपए दिए। इस बार उस कर्मचारी ने रिश्वत के पाँच रूपये ले लिए। राजा ने अपना परिचय देते हुए इस बार उससे रूपये लेने का कारण पूछा तो उसने अपनी बाँह में बँधी तावीज़ दिखाई और बताया कि आज इकतीस तारीख है इसलिए रिश्वत ले रहा है।

१५.३ व्यंग्य का संदेश

प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से परसाई जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी हो गया है। राजा के सिंहासन की रंगाई में भी यदि रिश्वत ली जाती है तो वह राजा के लिए चिंता का कारण बनना ही चाहिए। कर्मचारियों द्वारा भ्रष्टाचार को न देखना सत्ता की हाँ में हाँ मिलाने का संकेत है। विशेषज्ञों द्वारा राजा को ठेकेदारी समाप्त करने की जो सलाह दी गई वह स्वीकार नहीं की गई और एक कर्मचारी द्वारा बुलाए गए साधु को ताबीज बनाने का ठेका दे दिया गया। लेखक यह संकेत करना चाहता है कि बड़े पदों पर बैठे अधिकारी और सत्ताधीशों की मिली भगत के परिणामस्वरूप ही भ्रष्टाचार का व्यापार फलफूल रहा है।

व्यंग्य के अंत में दो तारीख को रिश्वत न लेने वाला कर्मचारी इकत्तीस तारीख को रिश्वत लेता है क्योंकि महीने के अंतिम दिन तक उसके पास का पैसा खर्च हो जाता है। इसलिए, न चाहते हुए भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिश्वत ले लेता है। साधु की ताबीज अंधविश्वास के माध्यम से होने वाले लूटपाट की ओर एक संकेत है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने बढ़ते हुए भ्रष्टाचार और अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है।

१५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा क्या हो गया?''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'सदाचार का तावीज़' शीर्षक व्यंग्य से लिया गया है। इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने समाज में फैलते भ्रष्टाचार और अंधविश्वास इन दोनों पर करारी चोट की है।

प्रसंग : राजा द्वारा अपने सभी कर्मचारियों को सदाचार की तावीज़ दे दी गई। उसका प्रभाव जाँचने के लिए राजा अपनी प्रजा के बीच दो बार गए। पहली बार उस कर्मचारी ने रिश्वत नहीं लिया जबकि दूसरी बार ले लिया। यह देख कर राजा चकित रह गए।

स्पष्टीकरण : तावीज़ का प्रभाव जाँचने के लिए राजा महीने की दो तारीख को गए और काम कराने के लिए कर्मचारी को पाँच रूपये की रिश्वत देने की बात कही। उस दिन कर्मचारी ने रिश्वत लेने से मना किया। फिर इकतीस तारीख को राजा उसी कर्मचारी के यहाँ गए और रिश्वत की बात की तो वह सहर्ष रिश्वत लेने को तैयार हो गया। यह देखकर राजा चकित रह गए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था

कि जो कर्मचारी पहले दिन रिश्वत नहीं ली है वही दूसरे दिन क्यों रिश्वत ले रहा है। प्रस्तुत पंक्तियों में राजा की इसी उधेड़बुन का चित्रण किया गया है।

विशेष :

१. प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग।
२. वक्ता के मन में आश्चर्य का भाव।
३. यथार्थ का प्रकट होना दिखाया गया है।
४. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग।

१५.५ बोध प्रश्न

१. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
२. राजा कब और क्यों परेशान हो गए? कर्मचारियों ने उनकी परेशानी दूर करने के लिए क्या किया?
३. विशेषज्ञों की आवश्यकता कब पड़ी? उन्होंने क्या सुझाव दिया?

१५.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीय प्रश्न

१. दरबारियों से राजा ने किसका पता लगाने की बात कही?
उत्तर : दरबारियों से राजा ने भ्रष्टाचार का पता लगाने की बात कही।

२. कितने विशेषज्ञ भ्रष्टाचार का पता लगाने आए?
उत्तर : पाँच विशेषज्ञ भ्रष्टाचार का पता लगाने आए।

३. भ्रष्टाचार का पता लगा कर विशेषज्ञ कितने दिनों में लौटे?
उत्तर : भ्रष्टाचार का पता लगा कर विशेषज्ञ दो महीने में लौटे।

४. सिंहासन की रंगाई में किस प्रकार का भ्रष्टाचार हुआ था?
उत्तर : सिंहासन की रंगाई में दोगुने दाम की बिल लगाई थी। उसमें खर्च से दोगुना पैसा लेने का भ्रष्टाचार हुआ था।

५. राजा किन तारीखों को रिश्वत का पता लगाने गए थे?
उत्तर : राजा दो तारीख और इकतीस तारीख को रिश्वत का पता लगाने गए थे।

६. राजा द्वारा ताबीज बनवाने का ठेका किसे, कितने रूपए में दिया गया था।
उत्तर : राजा द्वारा सदाचार की ताबीज बनवाने का ठेका एक साधु को पाँच करोड़ रूपए में दिया गया था।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१६

'डिप्टी - कलेक्टरी'

– अमरकान्त

इकाई की रूपरेखा :

१६.० इकाई का उद्देश्य
१६.१ प्रस्तावना
१६.२ कहानी का सारांश
१६.३ कहानी का संदेश
१६.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१६.५ बोध प्रश्न
१६.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१६.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम हिन्दी साहित्य के अमिट हस्ताक्षर अमरकान्त के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे। उनकी प्रसिद्ध कहानी डिप्टी कलेक्टरी का विवेचनात्मक अध्ययन करेगें। इसके माध्यम से बेरोजगारी से उत्पन्न समस्याओं के संबंध में चर्चा करते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करेंगे। इस कहानी के अध्ययन के उपरांत हम –

- अमरकांत के जीवन एवं उनकी साहित्यिक विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी का सारांश बता सकेंगे।
- कहानी के उद्देश को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों एवं कठिन शब्दों का भाव समझ सकेंगे।

१६.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय . अमरकांत का जन्म 1 जुलाई 1925 को हुआ था। इनके पिता श्री सीताराम वर्मा और माता श्रीमती अनंती देवी ने बेटे का नाम 'श्रीराम लाल' रखा। बाद में उन्होंने परिवर्तन करके अपना नाम अमरकांत रख लिखा। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द के वाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार अमरकांत का देहावसान 17 फरवरी 2014 को हुआ। अमरकांत ने उपन्यास, कहानी, संस्मरण और बाल साहित्य आदि विधाओं में लेखन कार्य किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नवत हैंः

उपन्यास – सूखा पत्ता, आकाश पक्षी, सुखजीवी, बीच की दीवार, सुन्नर पांडे की पतोहू आदि।

कहानी संग्रह : जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, कुहासा, एक धनी व्यक्ति का बयान आदि। अमरकांत नई कहानी आंदोलन से संबंधित कथाकार थे। उनकी कहानियों में भारतीय समाज का यथार्थ झलकता है। विशेष रूप से आम आदमी ही उनकी कहानियों के केन्द्र में है। समाज के जिस क्षेत्र में उन्होंने लोगों को संघर्ष करते देखा उसी को अपने कथ्य का आधार बनाया। उनकी कहानियों के पात्र भी हमारे बीच के ही होते हैं। इस रूप में कहें तो सामान्य कथावस्तु और अपने सामान्य पात्रों के माध्यम से ही अमरकांत समाज की दुखती रग पर हाथ रखने का कार्य करते हैं।

१६.२ कहानी का सार

डिप्टी कलेक्टरी कहानी बेरोजगारी से संघर्ष करते एक सामान्य परिवार की कहानी है।

शकलदीप बाबू कचहरी में मुहर्रिर का काम करके अपना जीवन यापन करते थे। उनकी पत्नी यमुना अपने बड़े बेटे नारायण द्वारा डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा में बैठने के लिए फॉर्म भरने की फीस के लिए रूपये माँगती हैं।

शकलदीप बाबू पहले तो नाराज होते हैं लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि इस वर्ष डिप्टी कलेक्टरी की जगहें अधिक हैं और पत्नी जब कुछ आशाजनक बातें करती है तो सौ रूपये फीस के लिए देते हैं। अगले दिन ब्रह्मवेला में ही जब अपने बेटे को पढ़ाई करते देखते हैं तो उनकी आशा बलवती हो जाती है। उन्हें लगता है कि इस बार बेटा डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा में अवश्य पास हो जाएगा। इसलिए वे अब इस बात का पूरा ख्याल रखने लगे हैं कि नारायण को किसी प्रकार की परेशानी न हो। उनकी उम्मीदें बेटे के प्रति लगातार बढ़ने लगी हैं। वह पढ़ाई अच्छी तरह करे इसके लिए सूखे मेवे भी ले आते हैं। इतना ही नहीं काम की व्यस्तता के बीच भी समय निकाल कर भगवान की पूजा में मन लगाने लगे हैं और घर के अन्य लोगों को भी पूजा करने के लिए प्रेरित करते हैं। अचानक उनके व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। घर में झाड़ू लगाने से लेकर बेटे का बिस्तर ठीक करने तक के कार्य वह स्वयं करने लगे हैं।

जिस दिन नारायण को डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा देने इलाहाबाद जाना था उस दिन स्वयं रेलवे स्टेशन पर उसे छोड़ने गए। नारायण की पत्नी निर्मला ने भी सुबह उठ कर भोजन बना दिया। बेटे की परीक्षा की बातें शकलदीप बाबू बड़े ही गर्व से लोगों को बताया करते थे।

परीक्षा में नारायण का पर्चा अच्छा हुआ। यह सुनकर परिवार के सभी लोगों में एक अतिरिक्त उत्साह भर गया। इंटरव्यू के लिए बुलाये जाने पर शकलदीप बाबू को बेटे के डिप्टी कलेक्टर बन जाने का पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने पत्नी से एक दिन कहा –"तुमको अब भी सन्देह है? लो, मैं कहता हूँ कि बबुआ जरूर आयेंगे, जरूर आयेंगे! नहीं आये, तो मैं अपनी मूँछ मुड़वा दूँगा।"

घर के लोग अब नारायण को डिप्टी कलेक्टर के रूप में ही देखने लगे थे। अन्तिम रिजल्ट आना अभी बाकी था। शकलदीप बाबू का खाना–पीना, जागना–सोना आदि सब प्रभावित हो रहा था। अत्यधिक प्रसन्नता के कारण उन्हें पूरी रात नींद नहीं आती और हमेशा कुछ न कुछ करने में लगे रहते। इसी अतिरिक्त सक्रियता के कारण वह बीमार भी पड़ गए। आस–पास के लोग उन्हें बधाई देते और वह अपने बेटे की तारीफ के पुल बाँधने लगते। इसी दौरान इंटरव्यू का रिजल्ट आया और परीक्षा में नारायण असफल हो गए। नारायण की इस असफलता ने परिवार को दुख के सागर में डुबा दिया। नारायण चुपचाप अपने कमरे में मुँह नीचे करके पड़ा रहा। माँ ने भी दुख व्यक्त किया लेकिन शकलदीप बाबू बोले – ''अरे, कुछ नहीं, सब कल्याण होगा, चिन्ता की कोई बात नहीं। पहले यह तो बताओ, बबुआ को तुमने कभी यह तो नहीं बताया था कि उनकी फीस तथा खाने–पीने के लिए मैने 600 रूपये कर्ज लिए हैं।'' परिवार के लोग नारायण की निराशा से इतने घबराए हुए हैं कि जब वह सो जाता है तो शकलदीप बाबू उसकी साँस सुनने के लिए उसकी नाक के पास कान ले जाते हैं। साँस चलते देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं।

१६.३ कहानी का संदेश

अमरकान्त द्वारा लिखित 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी एक निम्न मध्यवर्गीय बेरोजगार परिवार के मनोभावों पर आधारित है। अपनी मेहनत के बल पर परिवार का पालन–पोषण करने वाले शकलदीप बाबू बेटे की असफलता से दुखी हैं, पत्नी द्वारा परीक्षा फॉर्म की फीस का नाम सुनकर उन्हें क्रोध भी आता है। फिर भी एक आशा उनके मन में कहीं न कहीं बैठी है कि बेटा इस बार परीक्षा अवश्य उत्तीर्ण कर लेगा। यह आशा उस भारतीय पिता की आशा है जो उसे निरन्तर सक्रिय बनाये रहती है। बेटे को पढ़ते देख उनका मन पुलकित हो उठता है। बेटे की पढ़ाई में उन्हें वह संभावना दिखाई देती है जो उनके परिवार की सभी समस्याओं का अंत कर देगी। बेटे के प्रति नारायण की माँ यमुना के हृदय में ममता की धारा उमड़ती रहती है। वैसे नारायण की हर परीक्षा उस परिवार में आशा की किरण बन कर आती है लेकिन परिणाम निराशाजनक ही होता है। इस बार पदों की संख्या अधिक होने के कारण कुछ संभावना अधिक है। इण्टरव्यू का पत्र न केवल परिवार बल्कि पास–पड़ोस के लिए भी खुशियाँ लेकर आता है। यहाँ लेखक द्वारा उस परिवार की सुखमय कल्पनाओं में डूबने–उतराने का यथार्थ चित्रण किया गया है। कहानी के अन्त में पिता के उस प्यार को अभिव्यक्त किया गया है जिसमें वह सभी परेशानियों का सामना स्वयं करेगा लेकिन अपने बच्चों को उन परेशानियों का आभास भी नहीं होने देगा। अमरकांत की 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी में भारतीय व्यक्ति की मनोभावों, संस्कारों और सामाजिक रूढ़ियों का हर पक्ष देखा जा सकता है। प्रस्तुत कहानी के शकलदीप बाबू को बेटे की डिप्टी कलेक्टरी में, भगवान की प्रसन्नता भी आवश्यक लगती है। वह स्वयं तो पूजा करने ही लगे हैं पत्नी को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं। कहानी की भाषा सर्वथा पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकुल है।

१६.४ संन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

"अच्छा तो खाओं तुम और तुम्हारे लड़के! खूब मजे में खाओं। ऐसे खाने पर लानत है।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर अमरकांत द्वारा रचित 'डिप्टी कलेक्टरी' शीर्षक कहानी से अवतरित है। इस कहानी में बेराजगार युवक के परिवार की विविध समस्याओं का चित्रण किया गया है।

प्रसंग : शकलदीप बाबू को जब पता चलता है कि उनका बेटा नारायण इस बार डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा के लिए पढ़ाई कर रहा है तो उसके लिए मेवे आदि लाते हैं। उसमें से कुछ उनकी पत्नी यमुना द्वारा छोटे बेटे को दे देने के कारण शकलदीप बाबू क्रोधित हो गए हैं।

स्पष्टीकरण : छोटे बेटे को खाने के लिए मेवा देने की बात सुनकर शकलदीप बाबू आग बबूला हो उठते हैं। उन्होंने वह मेवे इसलिए लाए थे कि नारायण खाएगा तो परीक्षा की तैयारी अच्छी तरह कर सकेगा। छोटे लड़के के संबंध में उन्होंने इस समय सोचना भी छोड़ दिया था। उनके अनुसार घर के सभी लोगों को नारायण के लिए हर प्रकार की सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए लेकिन यहाँ तो माँ ही उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रही है और मेवा दूसरे बच्चों को खिला रही है। शकलदीप बाबू की बातों से ऐसा लगता है कि वर्तमान में उन्हें नारायण के किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार की असुविधा स्वीकार्य नहीं है।

विशेष :

१. आवेश पूर्ण भाव दृष्टिगत होता है।
२. अर्थ और भाव में विरोधाभास है।

munotes.in

१६.५ बोध प्रश्न

१. शकलदीप बाबू के परिवार की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।
२. नारायण के लिए इंटरव्यू में बुलावा आने पर घर और बाहर के लोगों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आ गया था।
३. प्रस्तुत कहानी का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।

१६.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. शकलदीप बाबू कहाँ, क्या काम करते थे?
उत्तर : शकलदीप बाबू कचहरी में मुहर्रिर का काम करते थे।

२. डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा की फीस कितनी थी?
उत्तर : डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा की फीस 100 रूपये थी।

३. नारायण के चुने जाने की संभावना इस वर्ष अधिक क्यों थी?
उत्तर : इस वर्ष डिप्टी कलेक्टरी की जगहें अधिक थीं इसलिए नारायण के चुने जाने की संभावना अधिक थी।

४. शकलदीप बाबू कितना कर्ज लिए थे?
उत्तर : शकलदीप बाबू 600 रूपये का कर्ज लिए थे।

५. डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा किस शहर में होने वाली थी?
उत्तर : डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा इलाहाबाद में होने वाली थी।

६. नारायण की पत्नी का नाम बताइए?
उत्तर : नारायण की पत्नी का नाम निर्मला था।

७. यमुना ने कुछ मेवे नारायण के अतिरिक्त किसे खिलाया?
उत्तर : यमुना ने कुछ मेवे छोटे बेटे टुनटुन को खिला दिया था।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१७

अपना गाँव

– मोहनदास नैमिशराय

इकाई की रूपरेखा :

१७.० इकाई का उद्‌देश्य
१७.१ प्रस्तावना
१७.२ कहानी का सारांश
१७.३ कहानी का संदेश
१७.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१७.५ बोध प्रश्न
१७.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१७.० इकाई का उद्‌देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम हिन्दी साहित्य में दलित चेतना के प्रसिद्ध साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के जीवन और उनके साहित्य से परिचित हो सकेंगे। 'अपना गाँव' कहानी में आजादी के बाद उभरती हुई चेतना का जो चित्रण किया है, उसका विवेचन – विश्लेषण किया जाएगा। ग्रामीण जीवन की जातिवादी व्यवस्था के साथ–साथ मोहनदास नैमिशराय की भाषा–शैली पर भी विचार किया जाएगा। इस पाठ को पढ़ने के बाद –

- आप लेखक के जीवन और उनकी साहित्यिक मान्यताओं का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- कहानी का सारांश पढ़ सकेंगे।
- कहानी के उद्‌देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- ग्रामीण जीवन में दलितों पर होने वाले अत्याचार से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचत हो सकेंगे।

१७.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - मोहनदास नैमिशराय का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ था। एम.ए., बी.एड. की शिक्षा पूरी करने वाले मोहनदास नैमिशराय हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी और मराठी भाषा का भी पर्याप्त ज्ञान रखते हैं। दलित चेतना के हिन्दी साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आजादी

के बाद दलित जीवन में होने वाले परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है। नैमिशराय की कहानियाँ दलित समाज को अपने अधिकारों के प्रति सजग करती हैं।

प्रमुख रचनाएँ : अपने–अपने पिंजरे – आत्मकथा (भाग 1 और 2), जख्म हमारे (उपन्यास), अदालतनामा (नाटक), सफदर एक बयान (कविता संग्रह) आदि।

१७.२ कहानी का सार

प्रस्तुत कहानी मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित ग्रामीण जीवन की जातिवादी व्यवस्था के विरूद्ध एक आवाज है।

गाँव की दलित महिला कबूतरी (छमिया) को गाँव के ठाकुर के मझले बेटे सुलतान सिंह द्वारा अपने लठैतों के बल पर नंगा करके पूरे गाँव में घुमाया जाता है। उसकी गल्ती मात्र इतनी है कि उसका पति ठाकुर से पाँच सौ रूपये का कर्ज लेकर शहर में नौकरी करने चला गया है। ठाकुर द्वारा पहले उसे खेत में काम करके वह पैसा भरने की बात कही गई। लेकिन मना करने पर उसे नंगा करके घुमाया गया। कबूतरी के ददिया ससुर अस्सी वर्ष के बूढ़े हरिया ने जब बहू का बचाव किया तो उस पर भी कोड़े बरसाए गए। साथ ही गाँव की अन्य औरतों को भी ठाकुर की बात न मानने पर ऐसे ही दण्ड की धमकी दी गई। डर के मारे लोगों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए और लाचार लोगों ने अपनी आँखों पर कपड़ा डाल लिया लेकिन, ठाकुर के डर से किसी ने मदद की हिम्मत नहीं की। शाम तक कबूतरी वापस लौट आई। उसके ससुर हरफूल और देवर भी औंधे मुँह पड़े रहे। रात को परिवार के किसी सदस्य ने भोजन नहीं किया। सुबह होने के पहले ही जब उसकी सास सन्तों बहू को आवाज लगाई तो घर की सभी महिलाएँ एक साथ जोर–जोर से रोने लगीं। उन्हें रोते सुनकर आस–पास की महिलाएँ भी एकत्र होकर रोने लगी। सभी एक स्वर से कल वाली घटना की निन्दा कर रहे थे। पड़ोसी महिलाओं को जब पता चला कि इनके घर में रात को परिवार के किसी भी सदस्य ने भोजन नहीं किया। दोपहर तक सबने मिलकर इस अत्याचार के विरूद्ध अनशन करने का निर्णय ले लिया। शाम तक कबूतरी के पति संपत के घर आ जाने पर इस कार्य को और बल मिल गया। रात को एक सभा हुई और यह तय किया गया कि कल शहर जाकर पुलिस में रिपोर्ट कराई जाएगी।

अगले दिन दलित बस्ती के कुछ पुरूष और तीन महिलायें पुलिस चौकी पहुँचे। पुलिस ने पहले तो जमीदार के खिलाफ रिपोर्ट लिखने से मना किया लेकिन बार–बार कहने पर रिपोर्ट लिखवाने गए सभी ग्यारह लोगों को एक गन्दे कमरे में बन्द कर दिया। यह बात पूरे शहर में फैल गई। शहर के दलित भी पुलिस चौकी पर जमा हो गए। लोगों के बढ़ते दबाव के कारण लहना गाँव के सभी दलितों को छोड़ दिया गया और ठाकुर के खिलाफ रिपोर्ट भी लिखी गई। इसलिए अगले दिन सुबह ही सभी लोग वापस गाँव लौट गए। इसी बीच शहर से कुछ पत्रकार भी आ गए थे जो पूरी जानकारी ले रहे थे। उसी दिन शाम को दलित बस्ती में पंचायत हुई और यह तय किया गया कि उस गाँव से बाहर जाकर वे सभी अपना गाँव बसायेंगे। वैसे कोई उस पुराने गाँव को छोड़ना नहीं चाहता था लेकिन फैसले के बाद आवश्यकता की कुछ चीजे लेकर सभी अपने घरों को छोड़कर शहर की तरफ निकल पड़े। उनके निकलने के पहले मंत्री द्वारा भी

समझाया गया लेकिन उसका कोई प्रभाव उन पर नहीं पड़ा। शहर के नजदीक पहुँचकर उन्होंने एक ईंट भठ्ठे पर नौकरी करने का निश्चय किया। वहीं उन्होंने अपना नया गाँव बसाया। उस नए गाँव की खुली हवा में सभी दलितों ने, विशेष कर महिलाओं ने आजादी का अनुभव किया। शाम को जब नए गाँव की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए सभा हुई तो विद्यालय और अस्पताल को पहली आवश्यकता बताया गया।

१७.३ कहानी का संदेश

मोहनदास नैमिशराय की कहानियाँ दलित जीवन को ग्रामीण प्रचलित रूढ़ियों – अंधविश्वासों को दरकिनार करते हुए आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रस्तुत कहानी में अत्याचारी ठाकुर के विरूद्ध तीव्र आक्रोश पूरी दलित बस्ती में दिखाई देता है। ऐसे अत्याचारों के निषेध का सबसे कारगर उपाय है सार्वजनिक विरोध। और, यही विरोध इस कहानी के दलित वर्ग में झलकता है। पूर्व पीढ़ियों से चली आती परम्पराओं को तोड़ना एक कठिन काम है। उसके लिए सतत् प्रयास की आवश्यकता होगी। कुछ लोगों को सामान्य जनता के बीच से ही निकल कर नेतृत्व करना होगा। प्रस्तुत कहानी में एक ऐसा ही वर्ग निकलकर पुलिस चौकी जाता है। यहाँ लेखक द्वारा यह भी संकेत किया गया है कि जो दलित शहरों में बस गए हैं उन्हें भी ग्रामीण दलितों का मार्गदर्शन और सहयोग करना चाहिए। उन्हीं शहरी दलितों के सहयोग का परिणाम रहा कि संपत की रिपोर्ट पुलिस चौकी में ठाकुर के खिलाफ लिखी गई। लेखक द्वारा पत्रकारिता जगत् के प्रति भी यह संकेत किया गया है कि उन्हें अपनी पत्रकारिता में ग्रामीण समस्याओं को भी स्थान देना चाहिए। दलित बस्ती के सभी लोगों का गाँव छोड़कर जाना इस बात की घोषणा है कि अब दलित वर्ग समाज के समस्त बन्धनों को तोड़कर मुक्त साँस लेना चाहता है जिसके लिए शहर भी इंतजार कर रहा है। ऐसे गाँव जहाँ जाति–धर्म की कोई दिवार नहीं है, जहाँ गाँववालों की पहली आवश्यकता हैं स्कूल और अस्पताल। यहाँ लेखक यह घोषणा करता है कि अब समाज का विकास मंदिर और मस्जिद बनवाने से नही बल्कि स्कूल बनवाने और अस्पताल बनवाने से होगा।

१७.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''अपने दस साल के राजनीतिक जीवन में उसका ऐसा मान–मर्दन न हुआ था। जैसा आज हरिया ने किया था। घड़ों पानी पड़ा था उस पर।''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित चेतना के प्रसिद्ध कथाकार मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित 'अपना गाँव' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में दलित जागरण का यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया गया है।

प्रसंग : लहना गाँव की दलित महिला छमिया पर हुए अत्याचार के विरूद्ध गाँव के सभी दलितों ने गाँव छोड़कर शहर के नजदीक जाने और एक नया अपना गाँव बसाने का निर्णय लिया है। दलितों के इस निर्णय से आस–पास के क्षेत्र में खलबली मच गई है। उन्हे जाने से रोकने के लिए क्षेत्र के विधायक और सरकार के मंत्री बी. एल. कुरील आते हैं लेकिन गाँववासी उनकी बात मानने से इन्कार कर

देते हैं। वयोवृद्ध हरिया द्वारा उन्हें नकार दिए जाने पर मंत्री महोदय निराश हो जाते हैं

स्पष्टीकरण : बी. ए. कुरील मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में लहना गाँव में जाते हैं कि दलितों को गाँव छोड़कर जाने से रोक सकें। गाँव में अस्सी वर्ष का हरिया ऐसे नेताओं को धिक्कारता है जो चुनाव जीत कर जाने के बाद वर्षों तक क्षेत्र के जनता की खोज खबर नहीं लेते हैं। गरीबों के ऊपर हुए अत्याचारों के लिए कुछ कृपा राशि देकर अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाते हैं। उनके कल्याण और उनकी सुरक्षा के लिए जो सरकार कोई ठोस कदम नहीं उठा सकती ऐसे सरकार की सहायता राशि इन स्वाभिमानी दलितों को कदापि स्वीकार नहीं है। इसलिए हरिया उन्हें बड़े ही कठोर शब्दों में नकार देता है।

वे मंत्री जिन्हें लोगों का सम्मान पाने की आदत पड़ चुकी हो उन्हें यदि कोई धिक्कारता है तो उनका अहंकार चोटिल होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में भी मंत्री महोदय असहज महसूस कर रहे हैं। सामान्य जनता के बीच एक गरीब द्वारा दिखाए गए आइने से वह बहुत शर्मिंदा हैं। उन्हें अपमान का अनुभव इस समय हो रहा है।

विशेष :

१. मुहावरे का प्रयोग – घड़ों पानी पड़ गया।

२. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली।

३. निराशा एवं अपमानजनक भावों का चित्रण।

१७.५ बोध प्रश्न

१. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से दलित जागरण की भावना किस प्रकार अभिव्यक्त हुई है?

२. '' 'अपना गाँव' से ही दलितों का उद्धार संभव है।'' स्पष्ट कीजिए।

३. 'सार्वजनिक एकता से बड़ी मुसीबतें भी छोटी बन जाती हैं।' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

१७.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. कबूतरी के पति का नाम बताइए?

उत्तर : कबूतरी के पति का नाम संपत था।

२. कबूतरी के पति ने ठाकुर से कितना कर्ज लिया था?

उत्तर : कबूतरी के पति ने ठाकुर से पाँच सौ रूपये का कर्ज लिया था।

३. हरिया कौन था?

उत्तर : हरिया कबूतरी का ददिया ससुर था।

munotes.in

४. अपना गाँव में मन्दिर बनवाने से पहले क्या बनवाने का निर्णय लिया गया?
उत्तर : अपना गाँव में मन्दिर बनवाने से पूर्व स्कूल और अस्पताल बनवाने का निर्णय लिया गया।

५. हरफूल कौन था?
उत्तर : हरफूल हरिया का बेटा और संपत का बाप था।

६. रिपोर्ट लिखवाने के लिए गाँव से कितने लोग गए थे?
उत्तर : रिपोर्ट लिखवाने के लिए गाँव से ग्यारह लोग गए थे।

७. गाँव से जाते समय दलितों को रोकने के लिए कौन आया था?
उत्तर : गाँव से जाते समय दलितों को रोकने के लिए क्षेत्रीय विधायक और मंत्री बी. एन. कुरील आए थे।

८. ठाकुर के मँझले बेटे का क्या नाम था?
उत्तर : ठाकुर के मँझले बेटे का नाम सुलतान सिंह था।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१८

पत्र लेखन

इकाई की रूप रेखा

१८.१ इकाई का उद्देश्य
१८.२ प्रस्तावना
१८.३ पत्र लेखन की विशेषताएँ
क) सरल भाषाशैली
ख) विचारों की सुस्पष्ठता
ग) संक्षेप और सम्पूर्णता
घ) प्रभान्विति
ड) बाहरी सजावट
१८.४ पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बाते ।
१८.५ पत्र लेखन से सम्बंधित अभिवादन व सम्बोधनों की सूची
१८.६ पत्र लेखन के प्रकार
क) औपचारिक
ख) अनौपचारिक
१८.७ पत्र लेखन के प्रारूप
१८.८ संभावित प्रश्न

१८.१ उद्देश्य :

पत्र लेखन की इस इकाई में विभिन्न प्रकार के पत्रों की चर्चा की गयी है। पत्र हमारे जीवन में महत्वपूर्ण क्यों है? यह बताया गया है। अलग-अलग स्थितियों में पत्रों का प्रारूप बदलता रहता है। इस दृष्टि से विभिन्न परिस्थितियों में पत्र लेखन सिखाना इस इकाई का उद्देश्य है।

१८.२ प्रस्तावना :

पत्र के द्वारा हम अपनी बात या संदेश दुसरों तक पहुँचा सकते है। जिस प्रकार मानव सभ्यता का विकास हुआ उसी प्रकार पत्र लेखन मे भी कई परिवर्तन हुये। अत: पत्र लेखन का इतिहास काफी पुराना माना जा सकता है। पत्र के द्वारा एक राज्य या देश अपना व्यापार करने के लिए पत्रों का आदान प्रदान करतें है। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यो के लिए भी पत्र लिखे जाते हैं।

१८.३ पत्र की विशेषताएँ

पत्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है जो की इस प्रकार है ।

क) सरल भाषाशैली

ख) विचारो की सुस्पष्टता

ग) संक्षेप और सम्पूर्णता

घ) प्रभान्विति

ड) बाहरी सजावट

क) सरल भाषाशैली : पत्र की भाषा साधारणतः सहज, सरल साफ–सुथरी होनी चाहिए। शब्दों के प्रयोग के समय ध्यान रखना चाहिए की जो बात या संदेश देना चाहते है वो सही रूप मे हो, अर्थात भाषा सटीक, सरल और मधुर हों, ताकि समझने में आसानी हो ।

ख) विचारों की सुस्पष्टता : पत्र इस प्रकार लिखना चाहिए जिससे लेखक के विचार स्पष्ट हो, उसमे सरलता और सहजता होना अनिवार्य है। इस तरह की बाते न लिखी जाए, जिससे प्राप्तकर्ता के दिमाग पर जोर पड़े।

ग) संक्षेप और सम्पूर्णता : कम से कम शब्दों मे अपनी बात कहे ताकि पत्र अधिक लंबा ना हो। वह अपने में सम्पूर्ण और संक्षिप्त हो । इसमें बातों को बढ़ा-चढ़ा कर ना लिखा जाए। इसके अतिरिक्त ध्यान देने योग्य ये बाते हैं कि एक ही शब्द या वाक्य का दुहराव ना हो, पत्र में एक ही बात को बार-बार दुहराना से पत्र का प्रभाव कम हो जाता है। पत्र में मुख्य बाते॑ आरम्भ में लिखी जानी चाहिए । सारी बातें एक क्रम मे लिखनी चाहिए। कोई भी आवश्यक तथ्य छूटने न पाया।

पत्र लेखन समय प्राप्तकर्ता को ध्यान में रख कर पत्र लिखे ताकि पाठक को समझने में आसानी हो ।

घ) प्रभावान्वित : पत्र इस प्रकार हो जो प्राप्तकर्ता को प्रभावित कर सके । पत्र के आरंभ और अंत का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए ।

ड) बाहरी सजावट :

१. पत्र के लिए अच्छे कागज या पेपर का उपोयग करे ।

२. भाषा सरल हो । साफ-सुथरी हो ।

३. आवश्यकतानुसार विरामादि चिह्नों का प्रयोग किया जाय। लिखावट इस प्रकार हो ताकि आसानी से समझा जा सके उसमे पर्याप्त जगह हो ।

४. शीर्षक तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद और अन्त अपने- अपने स्थान पर क्रमानुसार होने चाहिए ।

१८.४ पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

- पता और दिनांक
- संबोधन तथा अभिवादन शब्दावली का प्रयोग
- पत्र की सामग्री
- पत्र की समाप्ति, स्वनिर्देश और हस्ताक्षर

१८.५ पत्र लेखन से सम्बंधित अभिवादन व सम्बोधनों की सूची

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
पिता – पुत्र	प्रिय महेश	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा शुभाकांक्षी
पुत्र – पिता	पूज्य पिताजी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
माता-पुत्र	प्रिय पुत्र	शुभाशीष	तुम्हारी शुभाकांक्षिणी
पुत्र-माता	पूजनीय माताजी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
मित्र-मित्र	प्रिय भाई या मित्र या प्रिय रमेश आदि	नमस्कार	आपका स्नेहाकांक्षी
गुरू-शिष्य	प्रिय कुमार या चि. कुमार	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा सत्यैषी याशुभचिन्तक
शिष्य-गुरू	पूजनीय या आदरणीय गुरूदेव	सादर प्रणाम	आपका शिष्य
दो परिचितव्यक्ति	प्रिय महोदय	सप्रेम नमस्कार	भवदीय
अग्रज-अनुजा	प्रिय राहुल	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा शुभाकांक्षी
अनुज – अग्रज	पूज्य भैया या भ्राता जी	प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
स्त्री-पुरूष (अनजान)	प्रिय महाशय		भवदीया
पुरूष-स्त्री (अनजान)	प्रिय महाशय		भवदीय
पुरूष-स्त्री (परिचित)	कुमारी कमलाजी		भवदीय
स्त्री-पुरूष (परिचय)	भाई कमलजी		भवदीया

munotes.in

१८.६ पत्रों के प्रकार या भेद

पत्र के प्रकार या भेद २ प्रकार के होते है ।

क) औपचारिक ख) अनौपचारिक

क) औपचारिक पत्र : औपचारिक पत्र का प्रयोग प्रायः दफ्तर कार्यालय संस्थानो आदि के द्वारा दुसरों को सूचनाओं, जानकारियों तथा तथ्यों आदि के आदान प्रदान में किया जाता है । इन पत्रो को लिखते समय औपचारिकताओं का ध्यान रखा जाता है ।

१. सामाजिक पत्र (Social letters)

२. व्यापारिक पत्र (Commercial letters)

३. सरकारी पत्र (Official letters)

१. सामाजिक पत्र (Social letters) : ये पत्र अपने मित्रों, सगे-सम्बन्धियों एवं परिचितों को लिखे जाते है। उसके अतिरिक्त सुख-दुख, शोक, विदाई तथा निमन्त्रण आदि के लिए जो पत्र लिखे जाते है, वे भी सामाजिक पत्र कहलाते हैं ।

२. व्यापारिक पत्र (Commercial letters) व्यापार में सामान खरीदने व बेचने अथवा रूपयों के लेन-देन के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हें व्यापारिक पत्र कहते है ।

३. सरकारी पत्र (Official letters) जो पत्र सरकारी काम-काज के लिए लिखे जाते हैं, वे सरकारी पत्र कहलाते हैं ।

ख) अनौपचारिक पत्र लेखन

इस प्रकार के पत्र अपने नजदीकी संबंधी या मित्र को भेजे जाते हैं। इन पत्रों का विषय निजी एवं व्यक्तिगत भी हो सकता है। इन पत्रों को लिखते समय अत्याधिक औपचारिकता का निर्वाह करना आवश्यक नही है।

औपचारिक पत्र लेखन

१. बिजली की समस्या के संबंध में शिकायती - पत्र

३०५, नवजीवन सोसायटी
ग्रांट रोड, मुंबई - २८,
दिनांक – १० अप्रैल २०१४.

सेवा में,
बेस्ट मुंबई बिजली विभाग,
ताडदेव मुंबई,

विषय : अत्यधिक राशि के बिलो के संदर्भ में

munotes.in

महोदय,

मै पिछले ८ वर्षो से ताड़देव नगर मे रहती हूँ। नियमित रूप से हर महीने बिजली की राशि का भुगतान करती हूँ भूगतान किए गए सभी दस्तावेज मेरे पास सुरक्षित हैं। मेरे घर के बिजली की राशि लगभग ६५० रू. प्रति महीने आता है । इस बार ३५०० बिजली का बिल आया है, जो की औसत से भी अधिक हैं । इसे देखकर मैं अत्याधिक हैरान हूँ । मेरे घर में बिजली की खपत के किसी भी बिंदु पर कोई बढोतरी नहीं हुई हैं। पिछले किसी भी बिल का भुगतान नहीं बकाया है बावजूद इसके इतनी राशि का कारण समझ नहीं आ रहा है ।

मीटर –रीडिंग के भेजे गए इस अत्यधिक राशि के बिल का भुगतान मेरे लिए संभव नहीं है । कृपया संशोधित बिल भेजे ताकि मैं समय पर भुगतान कर सकूं।
आशा है आप मेरे अनुरोध पर शीघ्र विचार करेंगे ।

धन्यवाद सहित,
भवदीय

(हस्ताक्षर ....)

२. टेलीफोन का कनेक्शन कटने संबंधी पत्र

५०, हेम कुंज
गांधी चौक,दिल्ली – ५७.
दिनांक – २० मार्च २०१४.

सेवा में,
प्रबंधक,
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड
जनकपुरी, नई दिल्ली – ११००५८.

विषय : टेलीफोन कनेक्शन कटने के संदर्भ में

महोदय,

मेरा टेलीफोन नंबर २५५२३५४० विगत दस दिनों से काम नहीं कर रहा है। पता करने पर बताया गया है कि यह कनेक्शन काट दिया गया है। इस मास मेरे पास टेलीफोन बिल नहीं आया था । अतःमै बिल समय पर जमा नहीं करा पाया । बाद में मैने डुप्लीकेट बिल बनवाकर जमा भी कर दिया। इसके बावजूद मेरा टेलीपोन कनेक्शन काट दिया गया है । मैं इस प्रार्थनापत्र के साथ जमा किए गए बिल की फोटो प्रति संलग्न कर रहा हूँ । अतः आपसे अनुरोध हैं कि मेरा टेलीफोन तत्काल चालू करवाने की व्यवस्था करवाएँ। घर में पिताजी अस्वस्थ रहते हैं। अतः डॉक्टर से संपर्क बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है ।
आशा है आप इस कार्य को शीघ्र करेंगे ।

munotes.in

भवदीय
हस्ताक्षर ....
C-5/70, जनक पुरी
नई दिल्ली – ११०००५८.
दिनांक २५ सितंबर, २०१६
संलग्न जमा किए गए बिल की फोटो प्रति

३) अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई गंदगी के बारे में स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए ।

३२ कृष्ण नगर,
वजीरा नाका, बोरीवली
दिनांक २६-७-२-१५.

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी
महानगर पालिका
मुंबई ।

विषय : नगर मे फैले गंदगी के संबंध में

महोदय,

इस पत्र के द्वार में आपको अपने क्षेत्र में फैंले गंदगी के बारे में जानकारी देना चाहती हूँ । लगातार फैलती गंदगी के कारण हमारे क्षेत्र में बीमारियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। पिछले महीने से लगातार वर्षा के कारण हमारे क्षेत्र का हाल बेहाल हो गया है, जिसके कारण बीमारियों का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है ।

बीमारियों के कारण तीन चार लोगो की मौत हो गयी । इसके पहले भी स्वास्थ्य विभाग को पत्र भेजा गया है, लेकिन संतोषजनक कार्यवाही नहीं की गयी ।

आपसे अनुरोध है की आप इस समस्या के समाधान के उपाय करे ताकि बढ़ती हुई गंदगी को रोका जा सके।
धन्यवाद

४) बहन की शादी के लिए अवकाश पत्र।

००३, शांति नगर,
मिरा रोड, मुंबई १०१.
दिनांक – १६जुलाई २०१७

सेवा में
प्रधानाचार्या
मारवाड़ी विद्यालय, मुंबई ।

विषय : अवकाश हेतु निवदेन पत्र,

munotes.in

महोदय,

निवेदन है की मै आपके विद्यालय की ८वी कक्षा बी वर्ग की छात्रा हूँ । मेरे बड़े भाई का विवाह दिनांक ०५-०८-२-१७ को होना निश्चित हुआ है । विवाह उत्सव एवं घर के कार्यो के कारण ४ दिनो तक विद्यालय में उपस्थित न हो पाऊँगी ।

कृपा दिनाकं ३-०८-२०१७ से ७-०८-२०१७ तक मुझे ४ दिनो का अवकाश प्रदान करे। मैं आपकी आभारी रहूँगी ।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
स्मिता
कक्षा ८ ब

५) दैनिक समाचार पत्र के लिए उपसंपादन के पद के लिए अपनी योग्यता का विवरण देते हुए आवेदन पत्र लिखिए ।

४७८, गल्ली नं, -४
पटेल नगर, मंबई
दिनांक : २० मार्च २०१७

संपादक
नवभारत टाईम्प
चर्चगेट मुंबई ।

विषय : उपसंपादक पद के लिए आवेदन – पत्र

महोदय आपने अपने समाचार - पत्र के लिए उपसंपादक के पद के रिक्त स्थान के लिए १८ मार्च के समाचार – पत्र में विज्ञापन दिया था । मै अपने को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ । मेरी योग्यता व अन्य विवरण निम्नलिखित है ।

नाम	:	रमेश शुक्ला
पिता का नाम	:	चन्दन कुमार शुक्ला
जन्म तिथि	:	१७-०८-१९८६
स्थायी पत्ता	:	४७८, गल्ली नं. ४, पटेल नगर, मुंबई
शिक्षा	:	बी. ए. हन्दी में प्रथम स्नातकोत्तर उपाधि
अनुभव	:	जनसत्ता में दो वर्ष तक उपसम्पाद्क के पद पर कार्यानुभव
अतिरिक्त योग्यता	:	टंकन तथा आशुलिपि में डिप्लोमा, कंप्यूटर में डिप्लोमा

यदि आप मुझे इस पद पर कार्य करने का अवसर दे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि समाचार–पत्र की उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा ।

धन्यवाद
भवदीय
रमेश शुक्ला

munotes.in

अनौपचारिक पत्र

१. माताजी को पत्र

९५०, सेक्टर – ३८, बोकारी
दिनांक – १० अक्टूबर, २००६

परमपूज्य माताजी,
चरण – वंदना ।

कल आपका पत्र मिला, पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि घर में सब सकुशल हैं। आपने पत्र में मुझे लिखा है कि मैं पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्रिया–कलापो में भी भाग लूँ, क्योकि आज के परिवेश में अतिरिक्त क्रिया-कलापों का महत्वपूर्ण स्थान है। मैने आपके निर्देशानुसार अपने विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा संगीत कार्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए नामांकन करवा दिया है तथा तैयार भी आरंभ कर दी है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विद्यालय की हॉकी टीम मे भी मेरा चयन हो गया है। सहपाठियों के साथ मेरा अच्छा संपर्क स्थापित हो गया है। मेरी पढ़ाई भी ठीक प्रकार से चल रही हैं। स्वाति और दिव्या को मेरा बहुत-बहुत प्यार तथा पिताजी को सादर प्रणाम

आपका प्रिय पुत्र
राहुल

२. छोटे भाई को पत्र

१२-१५, शास्त्री नगर , धनबाद
१५ नवंबर, २०१७.

प्रिय धनव
शुभाशीष ।

तुम्हारे विद्यालय की और से प्रथम अवधि परीक्षा की अंक-तालिका आज ही मिली है। इसे पढ़कर अच्छा नहीं लगा, क्योंकि दो विषयों में तुम्हारे अंक संतोषजनक नही हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम नियमित रूप से पढ़ाई नहीं कर रहे हो। तुम्हें यह बात तो ज्ञात ही हैं कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा हैं, फिर भी वे किसी न किसी तरह तुम्हें पढ़ाई का खर्चा नियमित भिजवा रहे हैं।

तुम्हारा भी कर्तव्य है कि तुम मन लगाकर पढ़ाई करो। हमें तुम्हारी क्षमता पर पूरा विश्वास है। ऐसा लगता है कि तुम समय को ठीक प्रकार से नियोजित नहीं कर पा रहे हो।

स्मरण रखो, कठोर परिश्रण, ही सफलता का मूलमंत्र है। समय का नियोजन इस प्रकार करो कि पढ़ाई के लिए भी समय रहे और अन्य गतिविधियों के लिए भी। बीता समय कभी लौटकर नहीं आता ।

munotes.in

तुम स्वयं समझदार हो । हमें विश्वास है कि तुम भविष्य में शिकायत का अवसर नहीं दोगे ।

शुभकामनाओं के साथ,
तुम्हारा शुभेच्छु
मनोज कुमार

१८.७ संभावित विषयों पर पत्र लिखिए।

१) परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर पिताजी को पत्र लिखिए।
२) मित्र के जन्मदिन पर शुभकामना देने हेतु पत्र लिखिए।
३) रुपये की सहायता हेतु मित्र के लिखा गया पत्र।
४) गायन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए।
५) पुस्तक मँगाने के लिए प्रकाशक को लिखा गया पत्र।
६) विवाह पर अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र।
७) छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।
८) अपने क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की समस्या के बारे में बताते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९

भाषा दक्षता

(i) अशुध्दि शोधन (शब्दगत व अर्थगत)

इकाई की रूप रेखा

१९.१ प्रस्तावना
१९.२ इकाई का उद्‌देश्य
१९.३ अशुध्दि शोधन (शब्दगत)
१९.४ अशुध्दि शोधन (अर्थगत)
१९.५ संभावित प्रश्‍न

१९.१ प्रस्तावना :

भावों की अभिव्यक्ति प्रायः दो प्रकार से हुआ करती है। एक, वाणी द्वारा हम अपने विचारों को बोलकर प्रकट करते हैं तथा दूसरे, लेखनी द्वारा हम अपनी भावनाओं को लिपिबध्द करते हैं । भावों को लिपिबद्ध करने के लिए आवश्यक है कि भाषा पर हमारा पूर्ण अधिकार हो, अन्यथा अस्पष्ट, अशुध्द और दूषित भाषा के माध्यम से हमारे भावों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाएगा । भाषा को परिमार्जित, सशक्त और आकर्षक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक शब्द की आत्मा को समझें, उसका शुध्द- शुध्द प्रयोग करें और उस पर अधिकार करे उसे अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना लें ।

१९.२ उद्‌देश्य :

मनुष्य के मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए वाक्यों में शब्दों का उपयुक्त और क्रमबध्द प्रयोग अत्यंत आवश्यक है । अच्छी हिन्दी लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हम शब्दों और वाक्यों के शुद्ध प्रयोग को जानें। इस प्रकरण में हम शब्दगत, अर्थगत अशुद्धियों पर प्रकाश डालेंगे। यही हमारा उद्‌देश्य है ।

१५.३ अशुध्दि शोधन (शब्दगत)

शब्दों के वर्ण - क्रम को वर्तनी कहते हैं।

वर्तनी के बदलते ही शब्द के अर्थ बदल जाते हैं, या वे निरर्थक हो जाते हैं। उदाहरणतया 'मार' शब्द की मात्रा का स्थान बदल जाए तो वह 'मरा' हो जाएगा। यदि मात्रा लगाना भूल जाएँ तो 'मर' हो जाएगा । यदि 'र' और 'म' बदल जाएँ तो 'राम' या 'रमा' हो जाएगा। इसलिए वर्तनी का पूरा ध्यान रखना चाहिए ।

वर्तनी दोष : भूल, असावधानी, उच्चारण – दोष, क्षेत्रीय प्रभाव या भ्रम के कारण वर्तनी में अनेक दोष आ जाते हैं। कुछ दोष निम्नलिखित हैं :

१. बहुवचन रुपों की अशुद्धियाँ :

ईकारांत और ऊकारांत शब्दों के बहुवचन रुपों 'ई' और 'ऊ' क्रमश 'इ' और 'उ' में बदल जाते हैं जैसे-

लड़की	-	लड़कियाँ	पत्नी	-	पत्नियाँ
सर्दी	-	सर्दियाँ	हिंदू	-	हिंदुओं
खिड़की	-	खिड़कियाँ	उल्लू	-	उल्लुओं

२. 'आ' की जगह 'अ' की मात्रा

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
असान	-	आसान	अवाज	-	आवाज़
संसारिक	-	सांसारिक	सप्ताहिक	-	साप्ताहिक
अगामी	-	आगामी	बजार	-	बाज़ार

३. 'अ' की जगह 'आ' की मात्रा

			अशुद्ध		शुद्ध
अशुध्द	-	शुध्द	बारात	-	बरात
लागान	-	लगान	तालाशी	-	तलाशी
आसाम	-	असम	हस्ताक्षेप	-	हस्तक्षेप
आधीन	-	अधीन			

४. 'इ' की जगह 'ई' की मात्रा

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
क्योंकी	-	क्योंकि	प्राप्ती	-	प्राप्ति
तिथी	-	तिथि	बधाईयाँ	-	बधाइयाँ
अभीमान	-	अभिमान	दावाईयाँ	-	दवाइयाँ

५) 'उ' और 'ऊ' मात्रा का दोष

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
जरुरत	-	जरुरत	मुल्य	-	मूल्य
करूणा	-	करुणा	पुज्य	-	पूज्य
उधम	-	ऊधम	लहु	-	लहू
रुचि	-	रूचि	शुरु	-	शुरू

६) 'ऋ' और 'रि' अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रितु	-	ऋतु	अनुग्रहीत	-	अनुगृहीत
रिषि	-	ऋषि	बृजभूमि	-	ब्रजभूमि
मात्रभूमि	-	मातृभूमि	आकृमण	-	आक्रमण
श्रंगार	-	श्रृंगार	प्रथक	-	पृथक

७) ‘ए’ और ‘ऐ’ लिखने में अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द
नेतिक	-	नैतिक
एतिहासिक	-	ऐतिहासिक
एनक	-	ऐनक
सेनिक	-	सैनिक

८) ‘ई’ की जगह ‘इ’ मात्रा की अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बिमारी	-	बीमारी	पत्नि	-	पत्नी
परिक्षा	-	परीक्षा	बेइमान	-	बेईमान
किजिए	-	कीजिए	अधिन	-	अधीन
दिवाली	-	दीवाली	श्रीमति	-	श्रीमती

९) ‘इ’ मात्रा का लोप

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
सरोजनी	-	सरोजिनी	विरहणी	-	विरहिणी
नायक	-	नायिका	परस्थिति	-	परिस्थिति

१०) ‘उ’ और ‘ऊ’ मात्रा संबंधी अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
तुफान	-	तूफ़ान	बिन्दू	-	बिंदु
प्रभू	-	प्रभु	हेतू	-	हेतु
दयालू	-	दयालु	कूआँ	-	कुआँ
फूलवारी	-	फुलवारी	दुध	-	दूध

११. ‘ओ’ और ‘औ’ की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
त्यौहार	-	त्योहार	गौतम	-	गौतम
नोकरी	-	नौकरी	पकोड़ी	-	पकौड़ी
मोन	-	मौन	कोरव	-	कौरव
ओद्योगिक	-	औद्योगिक	भोतिक	-	भौतिक
रौपना	-	रोपना	दौना	-	दोना
			आंख	-	आँख

१२. अनुस्वार और अनुनासिक की अशुध्दियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
कांच	-	काँच	दिनाँक	-	दिनांक
प्राँत	-	प्रांत	ऊंधना	-	ऊँधना
गुँजन	-	गुंजन	गूंगा	-	गूँगा
अँकुर	-	अंकुर	दांत	-	दाँत
झांसी	-	झाँसी	भांति	-	भाँति
कांटा	-	काँटा	बांस	-	बाँस

munotes.in

१३. संधि के अज्ञान की अशुध्दियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
निरोग	-	नीरोग	सन्यासी	-	संन्यासी
अध्यन	-	अध्ययन	निरस	-	नीरस
उपरोक्त	-	उपर्युक्त	पीतंबर	-	पीतांबर
उज्वल	-	उज्ज्वल	अनाधिकार	-	अनधिकार

१४) 'ट' और 'ठ' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
मिष्टान्न	-	मिष्ठान्न	बलिष्ट	-	बलिष्ठ
यथेष्ठ	-	यथेष्ट	परिशिष्ठ	-	परिशिष्ट
श्रेष्ट	-	श्रेष्ठ	कनिष्ट	-	कनिष्ठ

१५) 'ड़' और 'ण' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रँड़भूमि	-	रणभूमि	गड़ना	-	गणना
रामायड़	-	रामायण	टिप्पड़ी	-	टिप्पणी
गुड़	-	गुण	गड़ेश	-	गणेश

१६) 'न्' और 'ण' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रामायन	-	रामायण	हिरन	-	हिरण
निरीक्षन	-	निरीक्षण	प्रान	-	प्राण
रनभूमि	-	रणभूमि	किरन	-	किरण

१७) 'र', 'ल','ड' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बूड़ा	-	बूढ़ा	उजारना	-	उजाड़ना
प्रौड़ा	-	प्रौढ़ा	खिढ़की	-	खिड़की
टेड़ा	-	टेढ़ा	चिड़ना	-	चिढ़ना
मड़ना	-	मढ़ना	लराई	-	लड़ाई

१८) 'व' और 'ब' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बन	-	वन	बर्षा	-	वर्षा
बिष	-	विष	बिलास	-	विलास
बाणी	-	वाणी	बनस्पति	-	वनस्पति

munotes.in

१९) 'स' और 'श' की अशुद्धियाँ

अशुध्द		शुध्द	अशुध्द		शुध्द
नास	-	नाश	आदर्स	-	आदर्श
प्रसंसा	-	प्रशंसा	देस	-	देश
सायद	-	शायद	साम	-	शाम
साखा	-	शाखा	सासन	-	शासन
अमावश्या	-	अमावस्या	प्रशाद	-	प्रसाद
शुषमा	-	सुषमा	नमश्कार	-	नमस्कार
ज्योत्शना	-	ज्योत्सना	सर्मीला	-	शर्मीला
सोभा	-	शोभा	दुश्परिणाम	-	दुष्परिणाम

२०) 'क्ष' और 'छ' की अशुद्धियाँ

अशुध्द		शुध्द	अशुध्द		शुध्द
कछा	-	कक्षा	छमा	-	क्षमा
छुद्र	-	क्षुद्र	छेत्र	-	क्षेत्र
दीछा	-	दीक्षा	लछ्मण	-	लक्ष्मण
शिछा	-	शिक्षा	लछण	-	लक्षण

२१) प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुध्द		शुध्द	अशुध्द		शुध्द
कौशलता	-	कुशलता, कौशल	मान्यनीय	-	माननीय
निरपराधी	-	निरपराध	पूज्यनीय	-	पूजनीय
महत्व	-	महत्त्व	चातुर्यता	-	चतुरता, चातुर्य
पोरूषत्व	-	पौरूष/पुरुषत्व	बुध्दिमानता	-	बुध्दिमत्ता

२२) 'ज्ञ' और 'ग्य' की अशुद्धियाँ

अशुध्द		शुध्द	अशुध्द		शुध्द
आग्या	-	आज्ञा	योश	-	योग्य
ग्यान	-	ज्ञान	प्रतिग्या	-	प्रतिज्ञा
यग्य	-	यज्ञ	कृतग्य	-	कृतज्ञ

अपेक्षित प्रश्न : निम्नलिखित शब्दों के शुध्द रूप लिखिए :- (उत्तर- सहित)

अशुध्द रूप		**शुद्ध रुप**	**अशुद्ध रुप**		**शुद्ध रुप**
विदवान	-	विद्‌वान	समुन्दर	-	समुद्र
महातमा	-	महात्मा	अगनि	-	अग्नि
उजवल	-	उज्ज्वल	आर्शिवाद	-	आशीर्वाद
ईशवर	-	ईश्वर	प्रीक्षा	-	परीक्षा
दुरदशा	-	दुर्दशा	अग्यान	-	अज्ञान
प्रस्पर	-	परस्पर	बिमार	-	बीमार
जाग्रति	-	जागृति	बाणी	-	वाणी
अस्मरण	-	स्मरण	प्रशाद	-	प्रसाद

munotes.in

१९.४ अशुध्दि शोधन (अर्थगत)

वाक्या रचना में अशुध्दियाँ होने के अनेक कारण होते हैं –

व्याकरण के नियमों तथा लिंग – वचन का ज्ञान न होना, पदों का सही क्रम न रखना, रूपातंरण के नियमों का अभाव, शब्दों के सही अर्थो से अनभिज्ञता आदि ।

यहाँ पाठ्यक्रम के अनुसार शब्दों के सही अर्थ से संबंधित अनभिज्ञता के कारण होने वाली अशुध्दियों को उदाहरण सहित दिया जा रहा है —

अशुध्द	**शुध्द**
१) मैं अभी ग्रह कार्य कर लूँगा ।	१) मैं अभी गृहकार्य कर लूँगा ।
२) टहलना स्वस्थ्य के लिए अच्छा है ।	२) टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है
३) उसका अचार अच्छा नहीं है ।	३) उसका आचार अच्छा नहीं है।
४) बेफिजूल में क्यों झगड़ रहे हो ?	४) फ़िज़ूल में क्यों झगड़ रहे हो ?
५) दोनों मित्रों में घोर संबंध है।	५) दोनों मित्रों में घनिष्ठ संबंध है।
६) रीमा की नई बहु आई है।	६) रीमा की नई बहू आई है।
७) मुझे घूमने-फिरने का शोक है ।	७) मुझे घूमने-फिरने का शौक है।
८) नीता समान लेने बाजार जा रही है।	८) नीता सामान लेने बाजार जा रही है।
९) उसे चरम रोग है।	९) उसे चर्म रोग है।
१०) हमें बड़ों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।	१०) हमें बड़ों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
११) पिताजी का कहना बिल्कुल उपर्युक्त है।	११) पिताजी का कहना बिल्कुल उपयुक्त है।
१२) अयोध्या की बोली अवधि है।	१२) अयोध्या की बोली अवधी है।
१३) झूठे हाथ प्रासाद न लो।	१३) झूठे हाथ प्रसाद न लो।
१४) दु:शासन ने द्रौपदी का चिर हरण किया था ।	१४) दु:शासन ने द्रौपदी का चीर हरण किया था।
१५) परीक्षा के परिमाण आने ही वाले हैं।	१५) परीक्षा के परिणाम आने ही वाले हैं।

इस प्रकार, हमने देखा कि उपर्युक्त उदाहरणों में अशुध्द वाक्य रेखांकित शब्दों के कारण अशुध्द हैं, जिनमें अशुध्द शब्दार्थ के कारण पूरे वाक्य का अर्थ बदल जात है। लेकिन उन शब्दों का सही रूप लगाते ही वाक्य शुध्द हो जाता है ।

munotes.in

अपेक्षित प्रश्न (उत्तर सहित)

अशुध्द	शुध्द
१) इस वर्ष खेतों में खूब अन्य उपजा है।	१) इस वर्ष खेतों में खूब अन्न उपजा है।
२) हल्दी और बेसन चेहरे पर लगाने से त्वचा में त्वचा में क्रांति आ जाती है।	२) हल्दी और बेसन चेहरे पर लगाने से त्वचा में कांति आ जाती है।
३) वह अकथ परिश्रम करता है।	३) वह अथक परिश्रम करता है।
४) इस देश की आबादी १३५ क्रोड़ है।	४) इस देश की आबादी १३५ करोड़ है।
५) हमें क्रम में विश्वास रखना होगा ।	५) हमें कर्म में विश्वास रखना होगा।

१९.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित शब्दों के शुध्द रूप लिखिए :

१) चिन्ह	१४) विधालय	२७) श्रीमति	४०) दवाईयाँ
२) विदया	१५) व्यक्तितव	२८) रिषि	४१) क्योंकी
३) समेलन	१६) एतिहासिक	२९) रितु	४२) लेकीन
४) उजवल	१७) भोगोलिक	३०) हिन्दु	४३) किंतू
५) क्रिपा	१८) समाजिक	३१) रूचि	४४) परन्तू
६) महत्व	१९) आंख	३२) खुन	४५) अवाज
७) श्रृंगार	२०) गांव	३३) पत्नि	४६) गुँजन
८) सजन	२१) किजिए	३४) प्रभू	४७) उपरोक्त
९) सन्यासी	२२) भोतिक	३५) भांति	४८) निरोग
१०) योज्ञ	२३) पुज्य	३६) संसारिक	४९) श्रेष्ट
११) आर्शिवाद	२४) पापि	३७) असान	५०) गुड़ा
१२) ग्रहस्थ	२५) पुण	३८) आसाम	
१३) एक्य	२६) इंदू	३९) पूर्ती	

२) निम्नलिखित अशुध्द वाक्यों को (अर्थगत दृष्टि से) शुध्द कीजिए।

१) मुझे किसी की प्रवाह नहीं है ।

२) मैं सेठ धनामल का सपुत्र हूँ ।

३) मेरा लक्ष डॉक्टर बनना है ।

४) बड़े-बूढ़ों को समान दो ।

५) यह बहू-मंजिला भवन है ।

६) भोजन –ग्रह में आना मना है ।

७) तुम श्याम को घर आना ।

८) सरोवर में हँस तैर रहै हैं ।

९) बुरे कार्य का प्रमाण अच्छा नहीं होता

munotes.in

१०) नदी के कुल पर चले जाओ ।

११) सुदामा मथुरा के बड़े-बड़े प्रसाद देखकर चकित रह गए ।

१२) वृक्ष के पते मत तोड़ो ।

१३) वह बहुत दिन है ।

१४) हमें भूलकर भी सज्जनों का उपकार नहीं करना चाहिए।

१५) हमें वहाँ अवलंब पहुँचना चाहिए ।

१६) मैं सर्कस देखकर विषमय से भर गया।

१७) तालाब में जलद खिले हैं ।

१८) वह नशे का आदि है ।

१९) मुझे खाने में आचार पसंद है ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.१

(ii) संज्ञा, सर्वनाम

इकाई की रूपरेखा :

१९.१.१ प्रस्तावना
१९.१.२ इकाई का उद्देश्य
१९.१.३ संज्ञा : परिभाषा और उसके भेद
१९.१.४ सर्वनाम : परिभाषा और उसके भेद
१९.१.५ संभावित प्रश्न
१९.१.६ प्रस्तावना
१९.१.७ उद्देश्य
१९.१.८ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद
१९.१.९ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद
१९.१.१० संभावित प्रश्न

१९.१.१ प्रस्तावना :

'राम ने आगरा में सुंदर ताजमहल देखा ।' इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' व्यक्ति का नाम है । 'आगरा' स्थान का नाम है, 'ताजमहल ' एक विशेष वस्तु का नाम है। इस प्रकार ये क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु के नाम हैं । व्याकरण में किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं।

"राधा ने राधा के मन में सोचा कि राधा कल अवश्य राधा की सहेली के घर राधा की गाड़ी से जाएगी।" उपर्युक्त वाक्य को पढ़ने से हमें यह वाक्य भद्दा – सा जान पड़ता है । यदि इसमें निहित दोष को दूर करके लिखा जाए तो यह वाक्य निम्न प्रकार होगा।

'राधा ने अपने मन में सोचा कि वह कल अवश्य अपनी सहेली के घर अपनी गाड़ी से जाएगी।'

इस प्रकार हम पाते हैं कि संज्ञा शब्दों के स्थान पर क्रमशः अपने, वह तथा अपनी शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया और वाक्य का भद्दापन भी दूर हो गया है । ये संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द ही सर्वनाम शब्द हैं ।

१९.१.२ उद्देश्य :

इस अध्याय का उद्देश्य है विद्यार्थियों में संज्ञा, सर्वनाम और उनके भेदों की समझ विकसित करना क्योंकि भाषा में स्पष्टता , सुंदरता, संक्षिप्तता, सुविधा और सरलता लाने के लिए संज्ञा और सर्वनाम का सटीक प्रयोग आवश्यक है।

१९.१.३ संज्ञा की परिभाषा और उसके भेद :

संज्ञा की परिभाषा : किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का बोध कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। जैसे, मोहन, गाय, आगरा, गंगा, पुस्तक, सोना-चाँदी, मित्रता , सज्जनता इत्यादि।

संज्ञा के भेद : संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं।

१) व्यक्ति वाचक संज्ञा
२) जातिवाचक संज्ञा
३) भाववाचक संज्ञा

उदाहरण सहित इन्हें यूँ भी समझा जा सकता है –

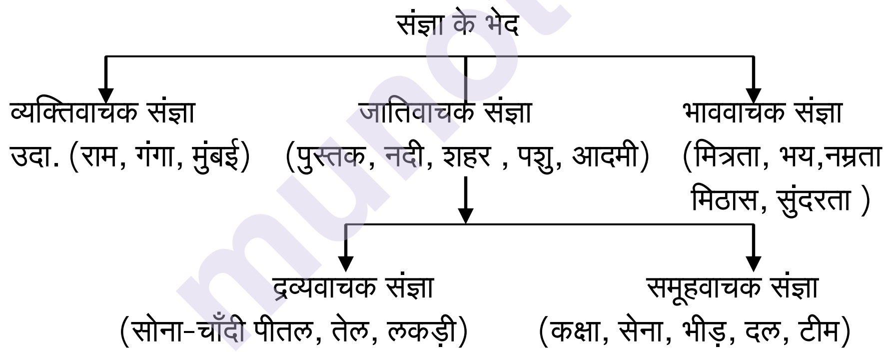

munotes.in

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जो शब्द या पद किसी विशेष व्यक्ति, विशेष वस्तु, विशेष स्थान या विशेष प्राणी के नाम का बोध कराते हैं वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जैसे राम, कृष्ण, ताजमहल, आगरा, कभी खुशी कभी गम आदि।

२. **जातिवाचक संज्ञा :** जो पद या शब्द किसी प्राणी, पदार्थ, वस्तु, समुदाय या जाति का बोध कराते हें उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे, स्त्री, पुरूष, नदी, पर्वत, देश गाय, बच्चा, शहर , गाँव आदि ।

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं - १) द्रव्य वाचक २) समूह वाचक संज्ञा

१) **द्रव्यवाचक संज्ञा :** कुछ संज्ञा शब्द ऐसे द्रव्य या पदार्थों का बोध कराते हैं, जिनसे अनेक वस्तुएँ बनती हैं । द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाली संज्ञा को द्रव्य वाचक संज्ञा कहते हैं जैसे - तेल, दूध, पानी, सोना - चाँदी- पीतल, प्लास्टिक, ऊन, लकड़ी आदि ।

२) **समूहवाचक संज्ञा :** जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं जैसे, दरबार, सेना, झुण्ड, टीम, भीड़, दल आदि।

३) **भाववाचक संज्ञा :** जो शब्द अथवा पद किसी भाव, दशा, स्थिति, स्वभाव, गुण, धर्म, कार्य, मनोभाव अथवा विशेषता के नाम का बोध कराता है वह भाव वाचक संज्ञा कहलाता है जैसे, सुंदरता, चतुराई, वीरता, पवित्रता, बुढ़ापा, सहानुभूति, अमीरी, शत्रुता, स्वार्थ आदि।

विशेष : निम्नलिखित प्रकार से परीक्षा में प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

१. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के भेदों को पहचान कर उन्हें अलग – २ लिखिए । कड़वाहट, रामायण, कानपुर, रवि, महाभारत, दिल्ली, ताजमहल, बैचैनी, मित्रता, महीना, साल, नदी, पर्वत, हिमालय, गंगा, रामपुर, खेत, खट्टापन, सरलता, बुराई, गर्मी, पुरूषत्व

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
रामायण	साल	कड़वाहट
कानपुर	नदी	बेचैनी
रवि	पर्वत	मित्रता
महाभारत	खेत	महीना
दिल्ली		खट्टापन
ताजमहल		सरलता
हिमालय		बुराई
गंगा		गर्मी
रामपुर		पुरुषत्व

२) **निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द पहचान कर लिखिए ।**

१) उसमें मानवता है। ————————————-———– मानवता

२) मुझे अपनी मित्रता पर गर्व है। ———————-————- मित्रता

३) बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। ———————-—-—– बच्चे, मैदान

४) मुझे पटना जाना है। ————————————-———-— पटना

५) मैं कलकत्ता जा रही हूँ । ——————————-—————– कलकत्ता

६) उसकी झुँझलाहट बढ़ती जा रही है । ——————————– झुँझलाहट

७) मुझे इस बात की बहुत खुशी है । —————————————— खुशी

८) मुझे पानी पीना है और तेल खरीदना है । ————————पानी, तेल

९) वहाँ भीड़ इकट्टठी है । ————————— भीड़

१०) पूरा परिवार सोना खरीदने गया है। ———————– परिवार, सोना ।

१९.१.४ सर्वनाम की परिभाषा और उसके भेद

सर्वनाम की परिभाषा :- सर्वनाम का अर्थ है सबका नाम । जो शब्द सबके नामों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं – संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है ।

सर्वनाम के भेद :- सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं ।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम
 → उत्तम पुरूष (मैं, हम, हम लोग)
 → मध्यम पुरूष (तुम, आप, आप लोग)
 → अन्य पुरूष (यह, वह, ये, वे)

२. निश्चयवाचक सर्वनाम

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

४. प्रश्नवाचक सर्वनाम

५. संबंध वाचक सर्वनाम

६. निजवाचक सर्वनाम

munotes.in

१. पुरुषवाचक सर्वनाम :- तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं जिसके बदले में पुरूषवाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है – स्वयं बोलने वाला , सुननेवाला तथा तीसरा कोई अन्य, जिनके बारे में बात की जा रही है । इस दृष्टि से पुरुषवाचक के निम्नलिखित तीन भेद हैं –

क) उत्तम पुरूषसर्वनाम : बोलने वाला, लिखनेवाला स्वयं अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है उन्हें हम उत्तम पुरूष सर्वनाम कहते हैं । जैसे – मैं, मेरा, मैंने, मुझे, मुझको हम, हमारा, हमने, हमें, हमको आदि।

ख) मध्यम पुरूष सर्वनाम :- वक्ता या लेखक सुननेवाले अथवा पढ़ने वाले के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम करते हैं । जैसै – तू, तेरा, तुम, तुम्हारा, तुमको, तुम्हें, तुझको, तुमसे, आपको, आपने, आपके, आपमें, आपसे आदि

ग) अन्य पुरूष सर्वनाम :- वक्ता या लेखक अपने या सामने वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों के लिए जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरूष सर्वनाम कहते हैं जैसे – वह, वे, यह, ये, उसे, उसको, उसने, उससे, उन्हें, उन्होंने आदि।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम पास की या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चय संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं । जैसे यह, ये, वह, वे आदि।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम के प्रयोग से किसी निश्चित प्राणी या वस्तु का बोध न हो, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे कोई, कुछ आदि।

४. संबंध वाचक सर्वनाम :- वाक्य में प्रयुक्त दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध दिखाने वाले सर्वनाम को संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे जो, सो, जिसने, उसने, जहाँ, वहाँ जिसकी, उसकी आदि।

५) प्रश्न वाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे, कौन, किसे, किन्हें, क्या, किससे आदि ।

६) निजवाचक सर्वनाम : वक्ता या लेखक जिन सर्वनामों को अपने लिए प्रयुक्त करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – स्वयं, खुद, अपने आप, स्वतः आदि ।

विशेष : परीक्षा में निम्न प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

१) निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों को पहचान कर लिखिए ।

१. वह कौन है ?
२. पानी में कुछ गिरा है ।
३. कौन आया था ?
४. जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।
५. जो सोता है, सो खोता है ।
६. वह अपने-आप ही चला गया ।
७. मैं खुद पत्र लिखूँगा
८. तुम बहुत होशियार हो ।
९. आपकी दादी कैसी है ?
१०. कमरे में कौन बैठा है ।
११. आप जो कहेंगे वही होगा ।
१२. मैंने माँ को बुलवाया है ।
१३. मुझसे चला नहीं जाता ।
१४. इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं मालूम है ।
१५. तुम्हें कितनी बार समझाना पड़ेगा ?
१६. यह चित्र किसका है ?
१७. जिस आदमी ने यह बात कही है, वह झूठा है ।
१८. यह कार्य किसने किया है ?
१९. आज ड्यूटी पर कौन है ?
२०. सारा काम मैं खुद करूँगा।

१९.१.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द की पहचान कीजिए ।

१. मुझे पढ़ाई करनी है ।
२. उसकी लिखावट सुंदर है ।
३. आसमान में कालिमा छाई है ।

munotes.in

४. आपको अपनी निर्बलता दूर करनी होगी ।

५. तुम वह सारी बातें भूल जाओ ।

६. माँ को दीदी की शादी के लिए सोने-चाँदी के गहने लेने हैं।

७. मेरी टीम के सभी विद्यार्थी आ गए हैं ।

८. आते समय कपड़े लेते आना ।

९. मुझे लकड़ी की कुर्सियाँ चाहिए ।

१०. पूरे शहर में मातम पसरा है।

११. हम साल में एक बार गाँव जाते हैं।

१२. वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई है।

१३. कक्षा के सभी विद्यार्थी तेज हैं।

१४. ताजमहल आगरा में स्थित है।

१५. नदी पूरे उफ़ान पर है।

१६. हिमालय पर्वत हमारे देश के उत्तर में स्थित है।

१७. मेरे परिवार में कुल छह लोग हैं।

१८. उसने हमसे ठगी की है।

१९. वह चाहे कुछ भी हो जाए अपना ब्राह्मणत्व नहीं छोड़ेगा।

२०. मुझे उससे अपनापन मिलता है।

२१. रोहन विद्यालय नहीं गया है।

२२. भोलेबाबा सबकी रक्षा करते हैं।

२३. मेरे घर समाचार - पत्र आता है।

२४. हमें जनवरी में जाना है।

२५. अब दिवाली आने वाली है।

२) निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों की पहचान कीजिए।

१. जो जागे सो पावे ।

२. दरवाजे पर कौन खड़ा है ?

३. शायद बाहर कोई आया है ।

४. जो करना है वह करो ।

५. मेरी चाबी खो गई है।

६. उसका काम कर दो ।

७. मैं अपने-आप चला जाऊँगा ।

८. स्वयं के लिए जीना व्यर्थ है ।

९. वह स्वतः ही जान जाएगा ।

१०. उसे खुद की ही परवाह नहीं है ।

११. मैं बहुत दूर से आया हूँ ।

१२. तुम बहुत कुछ कहना चाहते हो ।

१३. तुम्हारी मति मारी गई है ।

१४. कौन सी किताब लाऊँ।

१५. वे कल दिल्ली जाएँगे ।

१६. मैं् अपना काम खुद करता हूँ ।

१७. तुम कौन हो ?

१८. जिसकी लाठी उसकी भैंस होगी ।

१९. उसका काम कर दो।

२०. कल तुम किससे बातें कर रहे थे ?

२१. आप लोग कब तक आने वाले हैं ?

२२. हम सब काफी थक चुके हैं।

२३. यह काम वह अपने आप नहीं कर सकता है ।

२४. जिसने कहा था उसी से जाकर बात करो ।

२५. तुम आजकल बहुत जिद्द करने लगे हो ।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.२

विशेषण और क्रिया

इकाई की रूपरेखा :

१९.२.१ प्रस्तावना
१९.२.२ इकाई का उद्‌देश्य
१९.२.३ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद
१९.२.४ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद
१९.२.५ संभावित प्रश्न

१९.२.१ प्रस्तावना :

'रमेश' ने काली कमीज पहनी है । वह बाजार से मीठे संतरे, पाँच लीटर दूध, कुछ किसमिस, थोड़ी सी मिठाइयाँ लेने जा रहा है क्योंकि उसके बेटे के साथ दस-बारह लोग खाने पर आने वाले हैं।'

उपर्युक्त वाक्य में 'काली', 'मीठे' शब्द अपनी संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं कि कमीज की रंग काली और संतरों का स्वाद मीठा है। 'पाँच लीटर', 'कुछ' और थोड़ी – सी शब्द अपनी- अपनी संज्ञाओं के परिमाण (मात्रा) बता रहे हैं। ' दस-बारह ' से लोगो की संख्या का पता चल रहा है तथा 'उसके'बेटे के विषय में बता रहा है कि वह किसका बेटा है। कहने का तात्पर्य है कि समस्त रेखांकित शब्द किसी-न-किसी रूप में अपने आगे आने वाली संज्ञाओं की किसी न किसी विशेषता को प्रकट कर रहे हैं। व्याकरण में ये शब्द संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं। अतः इन्हें विशेषण कहा जाता है ।

' राम खाना खा रहा है ' 'बच्चे फुटबाल खेल रहे हैं' यदि इन वाक्यों के साथ हम 'राम क्या कर रहा है, बच्चे क्या कर रहे हैं?' आदि प्रश्नों को जोड़कर उनका उत्तर ढूँढें तो क्रमशः 'खाना खा रहा है' तथा 'फुटबाल खेल रहे है' उत्तर प्राप्त होंगे । इस प्रकार यह कहा जा सकता है वाक्य का जो अंश इन प्रश्नों का उत्तर देता है, उसे क्रिया कहते हैं । बिना क्रिया के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता । काल का ज्ञान भी क्रिया से ही होता है।

१९.२.२ इकाई का उद्‌देश्य

इस इकाई का उद्‌देश्य विद्यार्थियों के मन में विशेषण और क्रिया की परिभाषा तथा उनके भेदों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराना है ताकि वे इनकी पहचान कर के अपनी भाषा को समृद्ध बना सकें।

१९.२.३ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद :

परिभाषा : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण) बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं । जैसे सुन्दर, छोटा, थोड़ा-दस-बारह, कुछ पाँच लीटर आदि।

विशेषण शब्द जिस शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताते हैं, उन शब्दों को 'विशेष्य' नाम से जाना जाता है। जैसे, लड़की, राम, वह, तुम, आदि ।

विशेषण के भेद : अर्थ की दृष्टि से

विशेषण के चार भेद हैं –

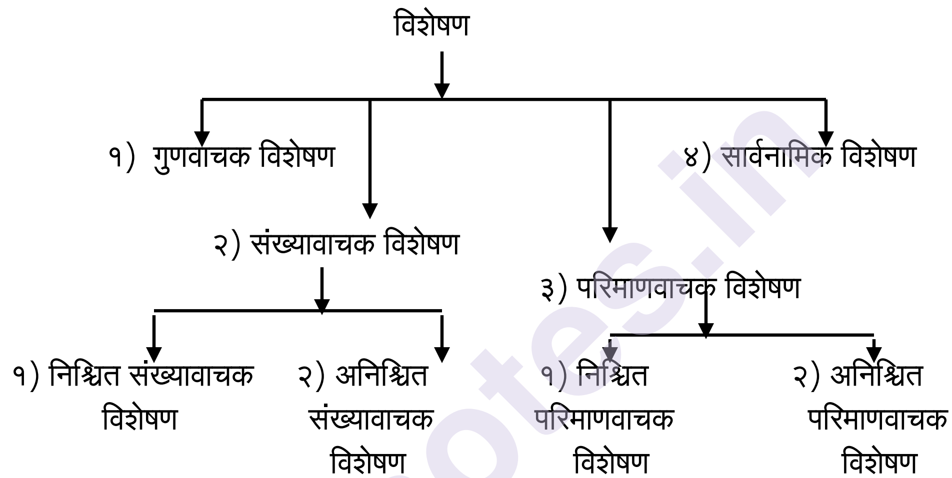

१) गुणवाचक विशेषण :- संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध कराने वाले शब्द गुणवाचक कहलाते हैं। जैसे वह व्यक्ति दयावान है ।

२) संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं । उसके दो भेद हैं –

अ) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : जिनसे निश्चित संख्या का बोध होता है, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं , जैसे – दस बच्चे, चार पेड़, पाँच केले आदि।

ब) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : इनसे निश्चित संख्या का बोध नहीं होता , जैसे कुछ आम, थोड़े केले, कुछ लड़के, कई दर्शक गण आदि ।

३) परिमाणवाचक विशेषण : मात्रा या तोल बताने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे दस लीटर दूध, चार किलो चीनी, चार गज जमीन, थोड़ा अनाज आदि। इसके दो भेद हैं -

अ) निश्चित परिणाम वाचक विशेषण : जिन शब्दों से निश्चित परिमाण या मात्रा का बोध होता है, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं । जैसे – पाँच किलो दाल, दो मीटर कपड़ा, एक मन चावल, चार लीटर तेल आदि ।

munotes.in

ब) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण :- जिन शब्दों से परिमाण की अनिश्चितता का बोध हो, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे – कुछ दाल, थोड़ा आटा, बहुत चीनी, थोड़ा नमक आदि ।

विशेष : संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में यह अंतर है कि संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग गिनती किये जाने वाले वस्तुओं के लिए होता है जैसे सेव, केले, लड़के आदि, जब कि परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग उन वस्तुओं के लिए होता हैं जिनकी गिनती नहीं की जा सकती हैं बल्कि तौला या नापा जा सकता है जैसे चावल, तेल, पानी, जमीन, कपड़ा, चीनी, सोना आदि।

सार्वनामिक विशेषण :- जिन सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं, जैसे- वह लड़का भला है, यह पुस्तक तुम्हारी है कोई स्त्री द्वार पर खड़ी है। इन वाक्यों में वह, यह, कोई सर्वनाम शब्द हैं और वे संज्ञा के पहले आए हैं। अतः 'सार्वनामिक' विशेषण सर्वनाम ही होते हैं, किन्तु उनका प्रयोग यदि संज्ञा से पहले होता है तो वे सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं जैसे-इन किताबों को पढ़िए । ये पेड़ बहुत अच्छे लगते हैं । यहाँ 'इन' 'ये' सार्वनामिक विशेषण शब्द हैं ।

विशेष : परीक्षा में निम्न प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं –

निम्नलिखित विशेषण शब्दों की पहचान कीजिए।

१) वहाँ गहन अंधकार है । ————————————————— अंधकार
२) हिन्दी एक मधुर भाषा है । ———————————————- मधुर
३) यह पुस्तक अच्छी है । —————————————- अच्छी
४) मुझे कुछ रुपए चाहिए । ——————————————- कुछ रुपए
५) मुझे सुंदर फूल चाहिए । ——————————————- सुंदर फूल
६) थोड़ा घी लाया हूँ । —————————————- थोड़ा घी
७) भारत में कई दर्शनीय स्थल हैं। ————————————- कई दर्शनीय स्थल
८) उसे दो किलो आलू चाहिए । ———————————————- दो किलो
९) राम गरम दूध पीता है । ——————————————————गरम
१०) काला घोड़ा सुंदर लग रहा है । ——————————————— काला सुन्दर
११) कोई सज्जन आए हैं । —————————————————— कोई
१२) वह लड़का विद्यालय जाएगा । ——————————————— वह लड़का
१३) इस बच्चे को कहाँ लिए जा रहे हो ? ———————————————- इस बच्चे
१४) मेरी कक्षा में तीस विद्यार्थी हैं । ——————————————— तीस
१५) फलों का सलाद बनाने के लिए दस केले चाहिए । ———————————- दस
१६) महान लोगों के कारनामों से इतिहास भरा है । ——————————— महान
१७) अभी सरोवर में थोड़ा जल है । ——————————————- थोड़ा
१८) गीता अच्छी लड़की है। —————————- अच्छी
१९) पाँच कबूतर उड़ते हुए हमारी छत पर आ गए । ——————————— पाँच
२०) सोहन बहुत बुद्धिमान है परन्तु बहुत शरारती भी है । ————-- बुद्धिमान, शरारती।

१९.२.४ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द से कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे – राम – पुस्तक पढ़ रहा है, बच्चे खेल रहे हैं, आदि।

धातु : धातु का अर्थ है मूल या बीजाक्षर।

किसी क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप में मिलता है, उसे उस क्रिया की धातु कहा जाता है। इस प्रकार, क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे –पढ़, लिख, सो, खा, पी आदि ।

जिस प्रकार सोना या चाँदी से अनेक तरह के गहने जैसे झुमका, कंगन, हार आदि बनाए जाते हैं, उसी प्रकार 'चल' धातु से चला , चलना-चले चलेंगे, चलो; 'पढ़' धातु से पढ़ो, पढ़ना, पढ़ेगा, पढ़ता इत्यादि क्रिया पद रूप बनाए जाते हैं । आ, जा, खा, पी, चल, सुन, देख, पढ़ आदि प्रत्येक धातु के मूल रूप में ना जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है, जैसे - आना, जाना, खाना, पीना, चलना, सुनना, देखना, पढ़ना इत्यादि।

क्रिया की रचना : क्रिया की रचना मुख्य तीन प्रकार से होती है :-

१)	धातु से	:	पढ़ = पढ़ना, पढ़ता
			खा = खाना, खाता
२)	संज्ञा से	:	आलस्य = अलसाना, अलसाता
			फटकार = फटकारना, फटकारता
३)	विशेषण से	:	टिमटिम = टिमटिमाना, टिमटिमाता
			भिनभिन = भिनभिनाना, भिनभिनाता

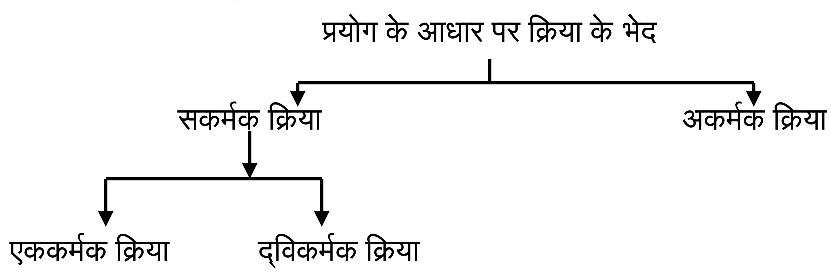

१) सकर्मक क्रिया : सकर्मक का अर्थ है कर्म के साथ। जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़ कर कर्म पर पड़े, वह क्रिया 'सकर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे – बच्चा दूध पी रहा है, राधा किताब पढ़ रही है। इन वाक्यों में से कर्ता और क्रिया के बीच यदि 'क्या ' प्रश्न किया जाए तो उत्तरस्वरूप क्रमशः दूध और किताब आते हैं। जैसे-बच्चा क्या पी रहा है, 'दूध, राधा क्या पढ़ रही है 'किताब' । सकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी यही पहचान होती है ।

munotes.in

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं :-

क) एक कर्मक क्रिया :- जिस क्रिया में मात्र एक ही कर्म होता है, वह 'एक कर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे माँ कपड़े धो रही है, राधा खाना बना रही है, मैं पुस्तक पढ़ती हूँ।

ख) द्विकर्मक क्रिया :- जिस क्रिया में दो कर्म होते हैं वह 'द्विकर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे – माला ने राधा को पुस्तक दी । पिता ने पुत्र को पैसे दिए ।

२) अकर्मक क्रिया :- कर्म रहित क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। जिसमे कोई कर्म नहीं रहता, क्रिया का प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़ता है। जैसे-बच्चा रोता है, रमा पढ़ती है, दिनेश हँसता है, आदि।

संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

- सहायक क्रिया
- सामान्य क्रिया
- संयुक्त क्रिया
- नामधातु क्रिया
- प्रेरणार्थक क्रिया
- पूर्वकालिक क्रिया

१) सहायक क्रिया : वाक्य में प्रयुक्त वे क्रियाएँ सहायक क्रिया कहलाती हैं जो मुख्य क्रिया की सहायिका के रूप में प्रयुक्त होती हैं जैसे –

क) वह खाना खा चुका है ।

ख) सुरेश रोने लगा।

ग) चोर पकड़ा गया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'चुका है', 'लगा', 'गया' सहायक क्रियाएँ हैं।

२) सामान्य क्रिया :- जब वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हो, तो उसे सामान्य क्रिया कहते हैं जैसै –

क) मोहन गया । ग) वह बोला ।

ख) रमेश आया । घ) उसने देखा ।

इन्हें मुख्य क्रिया भी कह सकते हैं ।

३) **संयुक्त क्रिया :** जब एकाधिक क्रियाएँ जुड़कर (संयुक्त होकर) किसी क्रिया को पूर्णता देती हैं, तो क्रियाओं का वह सम्मिलित रूप संयुक्त क्रिया कहलाता है। जैसे –

क) वह कल बनारस चला गया।

ख) रमेश इस किताब को पढ़ सकता है।

ग) नरेश गाना गा चुका है।

घ) उसने सोच लिया है।

ड) वह अब तक जा चुका होगा।

रेखांकित वाक्यांश संयुक्त क्रिया हैं।

munotes.in

४. **नामधातु क्रिया :-** मूल धातुओं से भिन्न जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि से बनती हैं, वे नामधातु क्रिया कहलाती हैं । जैसे –

क) बात से – बतियाना
ख) हाथ से – हथियाना
ग) गर्म से – गर्माना
घ) स्वीकार से – स्वीकारना

नामधातु क्रियाओं का निर्माण

नामधातु क्रियाओं का निर्माण निम्नलिखित चार प्रकार से होता है –

क) संज्ञा शब्दों से नामधातु क्रियाओं का निर्माण

चक्कर - चकराना
झूठ - झुठलाना
टक्कर - टकराना
बात - बतियाना
धक्का - धकियाना
कूट – कुटवाना
लाज - लजाना
हाथ – हथियाना
गरम - गरमाना
नरम - नरमाना

ख) सर्वनाम से नामधातु क्रियाओं का निर्माण –

अपना - अपनाना

ग) विशेषणों से नामधातु क्रियाओं का निर्माण-

साठ – सठियाना
दोहरा – दोहराना
उलटा - उलटना / उलटाना
गहरा - गहराना
लंगड़ा - लँगड़ाना
पागल - पगलाना

घ) अनुकरणात्मक शब्दों में नामधातु क्रियाओं का निर्माण-

झन - झन - झनझनाना
बड़ - बड़ - बड़बड़ाना
गिड़ा – गिड़ा - गिड़गिड़ाना
गड़-गड़ा - गड़गड़ाना
मिनमिन – मिनमिनाना
थर – थर - थरथराना
खट-खट - खटखटाना
हिन-हिन - हिनहिनाना

५) प्रेरणार्थक क्रिया – जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करे तो वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । जैसे - 'करना' से 'करवाना', 'चलना' से 'चलवाना', दौड़वाना आदि। 'आज मैंने उसे शिक्षक से पिटवाया।' 'ठेकेदार मजदूर से ईंटें उठवाता है ।'

६) पूर्वकालिक क्रिया :- जो क्रिया किसी वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले प्रयुक्त हुई हो, वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे –

१) वह खाना खाकर बाहर चला गया।
२) पुष्पा उठकर बैठ गई।
३) पप्पू बैठकर रोने लगा।
४) वह बोल-बोलकर थक गया।

इन क्रियाओं की पहचान होती है कि इनमें 'कर' लगता है ।

विशेष – परीक्षा में निम्नप्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं –

१) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं को छाँट कर लिखिए ।

१) बच्चा रोता है । ———————————— रोता है ।
२) माँ खाना खिला रही है । ———————– खिला रही है ।
३) बहू शर्माती है । ———————- शर्माती है ।
४) सुरेश और रमेश गाँव गए हैं । ——————————– गए हैं ।
५) कौन जा रहा है ? ——————– जा रहा है ।
६) मालिक नौकर से काम करवाता है ——————– करवाता है ।
७) वह खाकर पढ़ रहा है । ——————————– खाकर , पढ़ रहा है ।
८) तारे टिमटिमाते रहते हैं । ———————– टिमटिमाते रहते हैं ।

२) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों की पहचान कीजिए ।

१) हरिश रोता है ।
२) टायर घिस गया ।
३) बच्चे गेंद खेल रहे हैं ।
४) वह जा चुका होगा ।
५) मैं सोकर उठ गया हूँ ।
६) उसने जमीन हथियाली है ।
७) रामदास ने महल बनवाया ।
८) राम मुंबई जाएगा ।
९) तुम रोज पढ़ने आया करो ।
१०) खेतों को जुतवाया गया है ।

ये सभी रेखांकित वाक्यांश क्रिया शब्द हैं । उन्हें वाक्य के सामने लिखना अपेक्षित है ।

१९.२.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों की पहचान कीजिए ।

१) अजय कहानी पढ़ रहा है।
२) वह रात दिन सोता है।
३) अध्यापिका बच्चों को कविता सिखा रही हैं।
४) अध्यापक ने पाठ दोहराया।
५) माँ ने मुझे दूध पिलाया।
६) दादी कहानी सुनाती थीं।
७) नानी ने कहानी सुनाई।
८) कुर्सी पर कौन बैठा है ?
९) महर्षि व्यास ने अठारह पुराण लिखे।
१०) अब बादल घिर रहे हैं।
११) मोहन गाता है।
१२) मैंने बालिका को पुस्तक दी।
१३) शेखर कार चलाता है।
१४) पिताजी से कहकर ड्राइवर रखवाया है।
१५) मैं तुम्हारा नाम लिख रहा हूँ ।
१६) सर्वेश सो रहा है।
१७) मैंने छात्राओं को पुस्तक पढ़ाई।
१८) वे हँसते हैं।
१९) तुम्हें घर कौन पहुँचाएगा।
२०) मैं घर जाकर सो गया।
२१) वह हमेशा पढ़ता रहता है।
२२) राधा हिन्दी पढ़ सकती है।
२३) मुझे तुमसे बतियाना है।
२४) उसे हार स्वीकारनी होगी।
२५) चोर पकड़ा गया।
२६) दूध गर्माना है।
२७) उसने सोच लिया है।
२८) दरवाजा खटखटाना ठीक रहेगा।
२९) प्राचार्य ने बुलवाया है।
३०) वह रह-रह कर पगलाने लगता है

munotes.in

२. निम्मलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण शब्द की पहचान कीजिए ।

१) हमने काले रंग के कोट सिलवाए हैं।
२) थोड़ा दूध हमारे लिए भी लेते आना।
३) आकाश का रंग नीला है।
४) वे पुस्तकें तुम्हारी हैं और ये मेरी।
५) वह बहुत अधिक चालाक है।
६) वह पुस्तक अभी छपी है।
७) सुरेश महान पिता का पुत्र है।
८) वह कुत्ता तेज दौड़ता है।
९) वह पढ़ने में काफी तेज है।
१०) बाग में आम के अनेक वृक्ष हैं।
११) यह पुस्तक हमारी है।
१२) कोई सज्जन आए हुए हैं।
१३) घर में कोई है ?
१४) राजमहल बहुत बड़ा है।
१५) वह मेरा छोटा भाई है।
१६) मुझे थोड़ा सा दूध चाहिए।
१७) कुछ अध्यापक पढ़ाना ही नहीं चाहते।
१८) खीर बनाने के लिए पाँच लीटर दूध चाहिए।
१९) मेरा बेटा अमेरिका जा रहा है।
२०) मेरा छोटा भाई बहुत शरारती है।
२१) मुझे कुछ केले चाहिए।
२२) राजेश दस सेव लाया है।
२३) दस किलो आटा लेते आना।
२४) पाँच किलो तेल का डिब्बा चाहिए।
२५) एक गिलास दूध दो।

❖❖❖❖

munotes.in

इकाई -१९.३

(iii) अपठित गद्यांश

इकाई की रूपरेखा

१९.३.१ प्रस्तावना
१९.३.२ इकाई का उद्‌देश्य
१९.३.३ अपठित गद्यांश के लिए महत्त्वपूर्ण बातें
१९.३.४ कुछ अपठित गद्यांश के उदाहरण (उत्तर सहित)
१९.३.५ विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ अपठित गद्यांश

१९.३.१ प्रस्तावना :

वह गद्यांश जो पूर्व पढ़ा हुआ नहीं होता, अपठित गद्यांश कहलाता है। यह गद्यांश पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अलग अन्य पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं से लिया जाता है।

१९.३.२ इकाई का उद्‌देश्य :

अपठित गद्यांश के अनेक उद्‌देश्य हैं जैसे इसके अभ्यास से विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर, भाव ग्रहण शक्ति एवं सामान्य ज्ञान में वृद्‌धि होती है। इसके द्वारा विद्याार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा में निखार आता है। विद्यार्थियों के ज्ञान और बोध का मूल्यांकन अपठित गद्यांश द्वारा ही हो सकता है ।

१९.३.३ अपठित गद्यांश के लिए महत्त्वपूर्ण बातें :

- सर्वप्रथम अपठित गद्यांश को दो –तीन बार अवश्य पढ़ें।
- पहली बार पढ़ने के बाद गद्यांश में दिए गए प्रश्नों को भी पढ़ना चाहिए क्योंकि प्रश्न पढ़ने से भी भाव को समझने में सहायता मिलती है।
- कठिन शब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुसार समझकर गद्यांश को दो बार फिर पढ़ना चाहिए तथा उसके मूल भाव को ग्रहण करना चाहिए ।
- प्रश्नों को पढ़कर, उन स्थलों को खोजें, जहाँ संभावित उत्तर हो सकते हैं और वहाँ हल्का सा निशान लगा लेना चाहिए।

munotes.in

- उत्तर यथासंभव अपने शब्दों में लिखें।
- उत्तर यथासंभव संक्षिप्त हो, पर यह अवश्य ध्यान में रखें कि प्रश्न कितने अंक का है। उसी के अनुसार शब्द सीमा निर्धारित करें ।
- यदि शीर्षक पूछा जाय तो वह अत्यन्त छोटा, संक्षिप्त, मूलभाव की स्पष्ट करने वाला होना चाहिए।

१९.३.४ कुछ अपठित गद्यांश के उदाहरण (उत्तर सहित) :

१) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

कोशल देश के वृध्द राजा के चार पुत्र थे। उन्हें चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा- "तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास ले आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।" तत्पश्चात चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। कुछ दिनों के बाद बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को लेकर आया और राजा से बोला - "ये महाजन लाखों रूपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मंदिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-संतों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?"

"हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं । " राजा ने कहा और सत्कार पूर्वक विदा किया ।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से कहा - "ये ब्राह्मण देवता चारों धाम की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं सकती। इनसे बढ़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।"

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले - "इसमें संदेह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं "

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला - "ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एकबार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी से पंचाग्नि तपते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।"

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा - " निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।" साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए ।

अंत में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया । किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता हुआ चला आ रहा था । तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला- "एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिए ।"

"तुम क्या धर्म - कर्म करते हो?" राजा ने पूछा - किसान डरते-डरते बोला - "धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जानता, करना तो दूर रहा। मैं जिसे भी दुःखी देखता हूँ, मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ ।"

"यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।" राजा ने कहा । राजा की बात सुनकर तीनों लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे । राजा ने पुनः कहा - "तीर्थ - यात्रा करना, भगवत – आराधना में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।"

प्रश्न : क) राजा को क्या चिन्ता थी ? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा ?

उत्तर : कौशल देश के राजा बूढ़े हो चुके थे। उनके चार पुत्र थे । उन्हें चिन्ता थी कि उनके बाद राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए ।

उन्होंने अपने चारों पुत्रों को बुलाया और कहा कि तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को तलाश कर उनके पास लाएगा वही राज्य को संभालेगा और वही राज्य का स्वामी बन सकेगा ।

प्रश्न : ख) बड़े पुत्र की दृष्टि में बड़ा धर्मात्मा कौन था और क्यों ?

उत्तर : बड़े पुत्र की दृष्टि में एक महाजन बड़ा धर्मात्मा क्योंकि उसने अब तक लाखों रूपयों का दान किया था। बहुत सारे मंदिर और धर्मशालाएँ भी बनवा चुका था तथा रोज साधु-संतों को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन करता था, इसीलिए वह बड़ा धर्मात्मा था ।

प्रश्न ग) तीसरा पुत्र अपने साथ किसे लाया था ? उसने राजा से क्या कहा ?

उत्तर : तीसरा पुत्र अपने साथ एक साधु को लाया । उसने राजा से साधु के विषय में बताते हुए कहा कि ये सात दिनों में केवल एक बार दूध पीते हैं। कड़ाके की ठंड में भी जल में खड़े रहते हैं और तपती गर्मी में आग तापते रहते हैं इसलिए ये बड़े महात्मा हैं ।

प्रश्न घ) किसान को देखकर तीनों भाई क्यों हँसने लगे थे ? राजा ने किसान को सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा ?

उत्तर : सबसे छोटा बेटा एक किसान को साथ लेकर आया। वह निर्धन था। वह काफी डरा हुआ था। हाथ जोड़े हुए था। उसे देखते ही बाकी तीनों भाई हँसने लगे। उन्होंने सोचा कि उनका छोटा भाई कितना मूर्ख है, वह किसान को ही पकड़ ले आया। छोटे बेटे ने राजा को बताया कि यह आदमी एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को धो रहा था। मुझे नहीं पता कि यह धर्मात्मा है या नहीं। आप ही इससे पूछ लीजिए। राजा ने किसान से पूछा कि वह क्या काम करता है। कुछ धर्म के काम भी करता है या नहीं। किसान ने बहुत धीरे से उत्तर दिया, मैं धर्म का अर्थ नहीं जानता हूँ। मैं जिस भी दुखी व्यक्ति को देखता हूँ उसे थोड़ा सा अनाज जरूर दे देता हूँ ।

राजा ने किसान की बात सुनकर उसे सबसे बड़ा धर्मात्मा बताया, क्योंकि परोपकारी व्यक्ति ही सबसे बड़ा धर्मात्मा होता है ।

munotes.in

प्रश्न : ड) प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश से हमें यह सीख मिलती है कि हमें दु:खी व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए। भूखे को भोजन देना चाहिए। स्वार्थ को त्यागकर दु:खी प्राणियों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। दिखावे व नाम के कारण किए गए कार्य से हम परोपकारी नहीं कहला सकते हैं और न ही धर्मात्मा बन सकते हैं।

२) अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका ह्रदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है इससे आशंका और संदेह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती ।

अधिकारी – अधीनस्थ, शिक्षक – शिक्षार्थी, छोटों – बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृध्दि स्वतः ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है । इस गुण के माध्यम से छोटे से छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है ।

शील कोई दुर्लभ और दैवीय गुण नहीं हैं। इस गुण को अर्जित किया जा सकता है । पारिवारिक संस्कार इस गुण को विकसित और विस्तारित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। मूल भूमिका तो व्यक्ति स्वयं अदा करता है। चिन्तन, मनन, सत्य-संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से इस गुण की सुरक्षा और विकास होता है। यह शील सुसंस्कृत मनुष्य के चरित्र का अभिन्न अंग है।

यह गुण मनुष्य को सच्चे अर्थों में मानव बनाता है। इस अमूल्य गुण को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। इससे मनुष्य की गरिमा बढ़ती है और उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लग जाते हैं।

प्रश्न क) शीलयुक्त व्यवहार की क्या विशेषता है ?

उत्तर : शीलयुक्त व्यवहार व्यक्ति के लिए हितकर होता है । इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। वह सबका ह्रदय जीत लेता है । शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है।

munotes.in

प्रश्न ख) शीलवान व्यक्ति की क्या विशेषता होती है ?

उत्तर : शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्व पूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती ।

प्रश्न ग) शालीनता जैसे गुण की उपस्थिति के क्या फायदे हैं ?

उत्तर : इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं तथा कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

प्रश्न घ) शील को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर क्या होता है ?

उत्तर : शील को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर मनुष्य सच्चे अर्थों में मानव बनता है। मनुष्य की गरिमा बढ़ती है और उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लगते हैं।

प्रश्न ड) मनुष्य अपने भीतर शील को किस प्रकार विकसित और सुरक्षित कर सकता है ?

उत्तर : इस गुण की सुरक्षा और इसका विकास निरंतर चिंतन, मनन, सत्संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से किया जा सकता है।

३) अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

तानाशाह जनमानस के जागरण को कोई महत्त्व नहीं देता। उसका निर्माण ऊपर से चलता है, किन्तु यह लादा हुआ भार स्वरूप निर्माण हो जाता है। सच्चा राष्ट्र-निर्माण वह है, जो जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है। योजनाएँ शासन और सत्ता बनाएँ, उन्हें कार्यरूप में परिणित भी करें, किन्तु साथ ही उन्हें चिरस्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्देश-पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हो। स्पष्ट शब्दों में हम कह सकते हैं, कि सत्ता राष्ट्र-निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती हैं, किन्तु उसे भूमि जनमानस को ही बनानी पड़ेगी। अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल होगी, जैसा आजकल 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलनों के कर्णधार भारत के मंत्रीगण कराया करते हैं। इस विवेचन से हमने राष्ट्र-निर्माण में जनमानस की तैयारी का महत्व पहचान लिया है। यह जनमानस किस प्रकार तैयार होता है ? इस प्रश्न का उत्तर आपको समाचार पत्र देगा। निर्माण काल में यदि समाचार पत्र सत्समालोचना से उतरकर ध्वंसात्मक हो गया तो निश्चित रूप से वह कर्तव्यच्युत हो जाता है, किन्तु सत्समालोचना के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन। जनमानस को तैयार करने के लिए समाचार पत्र किस नीति को अपनाएँ यह प्रश्न अपने आप में एक विवाद लिए हुए है, क्योंकि भिन्न-भिन्न समाचार पत्र भिन्न-भिन्न नीतियों को उद्देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं। यहाँ तक कि राष्ट्र निर्माण की योजनाएँ भी उनके मस्तिक में भिन्न-भिन्न होती हैं। इसके लिए हमारा उत्तर यही हो सकता हैं कि समाचार पत्र का मूल कार्य सत्यों को प्रकाशित करना है। इन सत्यों के प्रकाशन में किन्हें लिया जाए और किन्हें छोड़ा जाए यह अवश्य पत्र की नीति पर निर्भर करता है, किन्तु इस नीति में राष्ट्रहित अवश्य होना चाहिए। यह राष्ट्रहित प्रगतिशील हो, प्रतिक्रियावादी नहीं, क्योंकि जिस प्रकार ईश्वर एक है, उसी प्रकार सत्य भी एक है।

munotes.in

प्रश्न : क) ताना शाह क्या नहीं करता तथा सच्चा राष्ट्र निर्माण किसे कहा गया है ?

उत्तर : ताना शाह जनमानस के जागरण को कोई महत्त्व नहीं देता तथा सच्चा राष्ट्र निर्माण हमेशा जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है।

प्रश्न ख) शासन और सत्ता को लेखक ने क्या हिदायत दी है ?

उत्तर : लेखक के अनुसार शासन और सत्ता योजनाएँ अवश्य बनाएँ। उसे कार्य रूप में परिणित अवश्य करें; किन्तु साथ ही उन्हें चिरस्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्‌देश्य पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हो।

प्रश्न ग) राष्ट्र निर्माण में जनमानस की आवश्यकता पर लेखक क्या कहते हैं ?

उत्तर लेखक के अनुसार सत्ता राष्ट्र निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती है किन्तु उसे भूमि जनमानस को ही बनाना होगा; अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल।

प्रश्न घ) समाचारपत्र जनमानस को किस प्रकार तैयार करता है ?

उत्तर : जनमानस तैयार करने के लिए समाचार पत्र सत्समालोचना का सहारा लेकर आगे बढ़े। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह कर्तव्यच्युत हो जाता है क्योंकि सत्समालोचना निर्माण के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन।

प्रश्न ड) सभी समाचार पत्र किन नीतियों को उद्‌देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं तथा लेखक ने इस संदर्भ में किस बात पर अधिक जोर दिया है ?

उत्तर : सभी समाचार पत्र भिन्न-भिन्न नीतियों को उद्‌देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं यहाँ तक कि राष्ट्र निर्माण की योजनाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। समाचार नीतियों पर लेखक ने राष्ट्र हित की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया है ।

१९.३.५ विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ अपठित गद्यांश:

१. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

क) मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप बड़े स्वाभिमानी और वीर व्यक्ति थे। उन्होंने बादशाह अकबर जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध ठान रखा था और अनेक-अनेक मुसीबतों का सामना करने पर भी हार न मानी थी। एक बार उनके दरबार में एक भाट आया। उसने राणा की प्रशस्ति में ओजपूर्ण कविताओं का गान किया। दरबार में उपस्थित सभी व्यक्ति वाह-वाह कर उठे। महाराणा प्रताप भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने सिर से रत्न जड़ित पगड़ी उतारी और पुरस्कार स्वरूप भाट को पहना दी। राणा की बहुमूल्य पगड़ी प्राप्त कर भाट फूला न समाया। राणा प्रताप को शत-शत आशीर्वाद दे वह प्रसन्नतापूर्वक अपने घर लौट गया।

कुछ ही दिनों में उसे दिल्ली जाने का अवसर मिला। उसने दिल्ली के बादशाह अकबर से मिलने का निश्चय कर, दरबार में जाने के लिए अनुमति माँगी। उसे अगले ही दिन दरबार में उपस्थित होने की अनुमति मिल गई। भाट ने सुंदर-सुंदर वस्त्र पहने, सिर पर राणा प्रताप द्वारा प्रदित पगड़ी पहनी और दरबार में जा पहुँचा। उसने अकबर को प्रणाम तो किया पर सिर नहीं

झुकाया। एक सभासद ने कहा - बादशाह सलामत को सिर झुकाकर प्रणाम करो। भाट ने अपनी पगड़ी उतारी, उसे हाथों में रख, सिर झुका दिया। अकबर ने उसे पगड़ी उतारते देख लिया था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भाट से पगड़ी उतारने का कारण जानना चाहा। भाट ने राणा प्रताप से मिली पगड़ी मिलने की पूरी घटना कह सुनाई। फिर बोला - बादशाह सलामत! यह पगड़ी स्वाभिमानी प्रताप के सिर पर शोभा पाती थी। उनका मस्तक ईश्वर के सिवाय किसी के सामने नहीं झुका। आप से युध्द कर रहे हैं; वे आपके प्रतिद्वंदी हैं; वे आपके समान शक्तिशाली बादशाह के सामने भी झुकने को तैयार नहीं। आप जानते ही हैं कि सिर पर पहनी जानेवाली हर वस्तु सम्मान का प्रतीक होती है। महाराणा के सिर पर पहनी गई पगड़ी उनके सम्मान की प्रतीक है। वे स्वाभिमानी हैं, उनके सम्मान की रक्षा के लिए मैंने आपके सामने झुकने से पहले इस अमूल्य पगड़ी को उतार लिया था।

प्रश्न १) भाट किसके दरबार में गया? सभासदों ने भाट की प्रशंसा क्यों की?
प्रश्न २) महाराणा प्रताप ने कविता सुनकर क्या किया? और क्यों किया?
प्रश्न ३) दिल्ली पर उस समय किसका राज्य था? भाट राजा के दरबार में कैसे पहुँचा?
प्रश्न ४) भाट ने बादशाह को झुककर प्रणाम क्यों नहीं किया?
प्रश्न ५) भाट ने अकबर के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

ख) प्राचीन काल में अष्टवक्र नाम के एक महर्षि हुए जो अत्यंत विद्वान और ज्ञानी थे। अष्टवक्र शरीर से विकलांग और आठ अंगों से टेढ़े थे। वे ठीक तरह से चल भी न सकते थे। उनकी कुरूपता को देखकर सब उन पर हँसते थे। कहते हैं कि किसी शाप के कारण ही उनका जन्म इस रूप में हुआ और नाम मिला- अष्टवक्र। अपनी कुरूपता और विकलांगता को अष्टवक्र ने कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया। वे मानते थे कि शरीर से बड़ी आत्मा है। शरीर भले ही टेढ़ा-मेढ़ा हो परन्तु आत्मा सुंदर और शुद्ध होनी चीहिए। अष्टवक्र बचपन से ही ज्ञानी थे और उनमें विद्या-प्राप्ति की लालसा थी। बारह वर्ष की उम्र तक वे महान विद्वान बन गए थे। एक बार अपने पिता के बारे में पूछते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता को राजा जनक के दरबार में एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण अपमानित होना पड़ा था। दंड भी मिला था। बस! अष्टवक्र ने उसी समय निश्चय किया कि वे राजा जनक के दरबार में जाकर उस विद्वान से शास्त्रार्थ करेंगे और उसे हरा देंगे। वे जैसे ही राजा के सम्मुख पहुँचे कि सभी सभासद जोर-जोर से हँसने लगे। यहाँ तक कि राजा जनक भी अपनी हँसी पर नियंत्रण न कर पाए। अष्टवक्र ने जोर का ठहाका मारा। सभासदों की हँसी की आवाज इस ठहाके से दब गई। सभी स्तब्ध रह गए। राजा जनक अचंभित थे। उनसे रहा न गया। पूछा - बालक! तुम इतनी ज़ोर से क्यों हँसे? अष्टवक्र ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया - राजन! पहले आप बताएँ कि आप सब क्यों हँसे? राजा जनक कुछ क्षण चुप रहे पर उत्तर तो देना ही था। बोले - बालक! वास्तव में हमारे हँसने का कारण तुम्हारी कुरूपता थी। मैं अपनी और अपने सभासदों की अशिष्टता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। अब अष्टवक्र ने कहा - राजा जनक, मैंने सुना था कि आपकी सभा में बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी व्यक्ति हैं और मैं उनसे शास्त्रार्थ करने आया था, परन्तु मुझे तो यहाँ सब हाड़-मांस के शरीर के पुजारी लगते हैं। ये तो शरीर को ही देख रहे हैं, ज्ञान को तो भुला चुके हैं। राजा जनक को आश्चर्य हुआ, क्या इतनी कम उम्र में भी कोई विद्वान हो सकता है? उन्होंने प्रश्न किया-मुझे यह बताएँ कि ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? और मुक्ति कैसे मिलती है? राजन यदि ज्ञान चाहते हो तो अहंकार त्यागकर सबसे सीखो और मुक्ति चाहते हो तो भोग को विष के समान त्याग दो। क्षमा, दया, संतोष, सत्य और सरलता को ह्दय में धारण करो। राजा

munotes.in

ने अनेक प्रश्न पूछे । अष्टवक्र ने शांत भाव से विद्वतापूर्ण उत्तर दिए। अनुमति मिलने पर उन्होंने सभापंडित से शास्त्रार्थ किया और उन्हें हरा दिया। अष्टवक्र ने अपनी पूरी आयु ज्ञान की आराधना की, उन्होंने अपने शरीर को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति पर कभी हावी नहीं होने दिया।

प्रश्न १) अष्टवक्र कौन थे? उनका नाम अष्टवक्र क्यों पड़ा?

प्रश्न २) राजा जनक के दरबार में जाकर शास्त्रार्थ करने के पीछे अष्टवक्र का क्या उद्देश्य था?

प्रश्न ३) क्या कारण था कि राजा जनक और उनके सभासद अष्टवक्र को देखकर हँसने लगे? इस पर अष्टवक्र ने क्या किया?

प्रश्न ४) अष्टवक्र को ऐसा क्यों लगा कि सभासद ज्ञानी नहीं हैं?

प्रश्न ५) अष्टवक्र में ऐसे कौन-कौन-से गुण थे जिनके कारण उन्हें ज्ञानी माना गया?

❖❖❖❖

munotes.in

प्रश्न पत्र नमुना प्रथम वर्ष कला, हिन्दी अनिवार्य

समय ३ घंटे **कुल गुण : १००**

प्र.१ निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **(२४)**

क) वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर जाता।
पेट पीठ दोनों मिलकर है एक
चल रहा लकुटिया टेक,

अथवा

'सृजन हे अधूरा अगर विश्वभर में
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी।'

ख) "आज मधुलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दारिद्र्य की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है।"

अथवा

वह गुम हो गया। जैसे नाराज हो। उसने सिर हिलाया कि उसने नहीं ली। पर मुहँ न खोला।

प्र.२ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **(२४)**

च) बीती विभावरी जागरी। कविता का कथ्य स्पष्ट करते हुए कविता का केंद्रिय भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मैं नीर भरी दु:ख की बदली' कविता विरह की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करती है स्पष्ट कीजिए।

छ) 'चीफ की दावत' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शकलदीप बाबू के परिवार की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।

प्र. ३ निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए। **(१२)**

प) 'बात बोलेगी' कविता में वर्तमान काल की दीनता

अथवा

विद्रोहिणी कविता की स्त्री

फ) 'बड़े घर की बेटी' कहानी के खी कंठ सिंह

अथवा

पाजेब कहानी में बाल मनो विज्ञान का चित्रण

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए। **(१२)**

१) रानी की तलवार से जख्मी होकर कौन बाग गया था ?

२) वैतरणी करोगे पार कविता के कवि कौन है ?

३) हम दीवानों की क्या हस्ती कविता में कवि अपना जीवन कैसे जीता है ?

४) बात बोलेगी कविता में सत्य का रुख किसका रुख है ?

५) बसंती हवा कविता में किसके पास न प्रेमी हे और न दूश्मन ?

६) कितने विशेषज्ञ भ्रष्टाचार का पता लगाने आये ?

७) पुरुस्कार कहानी में अरुण कौन था ?

८) जनता किस नेता की बात मानती थी ?

९) बाबा भारती के घौड़े का क्या नाम था ?

१०) चीफ की दावत कहानी में माँ कहाँ जाना चाहती थी ?

११) ठाकुर के मझले बेटे का क्या नाम था ?

१२) डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा किस शहर में होने वाली थी ?

प्र. ५ निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए। **(१२)**

त) दैनिक समाचार के लिए उपसंपादन के पद के लिए अपनी योग्यता का विवरण देते हुए आवेदन पत्र लिखिए।

अथवा

गायन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

प्र. ६ अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(१०)**

१) निम्नलिखित वाक्य का शुद्ध रुप लिखिए।

i) अयोध्या की बोली अवधि है ?

ii) परीक्षा के परिमाण आने ही वाले है

२) निम्नलिखित वाक्य में संज्ञा शब्द पहचानिए।

i) मुझे अपनी मित्रता पर गर्व है।

ii) वहाँ भीड़ इकट्ठी है।

३) निम्नलिखित वाक्य में सर्वनाम शब्द पहचानिए।

i) मेरी चाबी खो गई है।

ii) मुझसे चला नहीं जाता।

munotes.in

४) निम्नलिखित वाक्य में क्रिया पहचानिए।

i) राम मुंबई जाएगा

ii) शेखर कार चलाता है।

५) निम्नलिखित वाक्य में विशेषण शब्द पहचानिए।

i) वहाँ गहन अंधकार है।

ii) मेरी कक्षा में तीस विद्यार्थी है।

आ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (१०)

हमारे अंदर की दुनिया बाहर की दुनिया से कहीं ज्यादा बड़ी है। हम उसका विस्तार नहीं करते। बाहर की अपेक्षा उसे छोटा करते चले जाते हैं और उसे बिल्कुल निर्जीव कर लेते हैं। आजादी पूरी आजादी अगर कहीं संभव है तो इसी भीतरी दुनिया में ही, जिसे हम बिल्कुल अपनी तरह समृद्ध बना सकते है - स्वार्थी अर्थो में सिर्फ अपने लिए ही नही, निःस्वार्थी अर्थों में दूसरों के लिए भी महत्व रखता है और स्वयं अपने लिए तो विशेष महत्व रखता ही है।

१) लेखक किस बड़ी दुनिया की बात कर रहे है?

२) मनुष्य को पूरी आजादी कहाँ संभव है?

३) निःस्वार्थ किसके लिए महत्त्व रखता है?

४) किसे हम अपनी तरह समृद्ध बना सकते है?

५) हम किसका विस्तार नहीं करते?

❖❖❖❖

munotes.in